पीएनबी प्रतिभा
PNB Pratibha

अंक 66-03
पंजाब नैशनल बैंक-प्रधान कार्यालय की तिमाही गृह पत्रिका
अक्टूबर-दिसंबर, 2025

कॉरपोरेट गवर्नेंस तथा सुरक्षा विशेषांक

पीएनबी स्टाफ जर्नल
PNB staff journal

पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक !

punjab national bank
...the name you can BANK upon !

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का आयोजन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 के अवसर पर "पीएनबी विजिलेंस मैन्युअल 2025" के 5वें संस्करण का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव, केंद्रीय सतर्कता आयुक्त, श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री बिभु प्रसाद महापात्र, कार्यपालक निदेशक तथा श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी।

पीएनबी को मिला एमएसएमई बैंकिंग एक्सीलेंस अवार्ड

MSME Banking Excellence Award, 2025

पीएनबी को देश में 'स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने के लिए सर्वश्रेष्ठ बैंक' के रूप में प्रतिष्ठित एमएसएमई बैंकिंग उत्कृष्टता पुरस्कार - 2025 से सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर दिल्ली में 'द ललित' होटल में आयोजित एक कार्यक्रम में माननीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री, श्री पीयूष गोयल के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री एम. परमशिवम, कार्यपालक निदेशक और श्री फिरोज हसनैन, मुख्य महाप्रबंधक (एमएसएमई)।

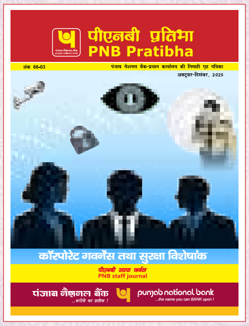

(केवल आंतरिक परिचालन के लिए)

पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय की तिमाही गृह पत्रिका

मुख्य संरक्षक:

अशोक चंद्र
(प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी)

संरक्षक:

एम. परमशिवम
(कार्यपालक निदेशक)

बी. पी. महापात्र
(कार्यपालक निदेशक)

डी. सुरेन्द्रन
(कार्यपालक निदेशक)

अमित कुमार श्रीवास्तव
(कार्यपालक निदेशक)

प्रबंधकीय संपादक:

विशेष कुमार श्रीवास्तव
(मुख्य महाप्रबंधक–राजभाषा)

विशेष सहयोग:

बिक्रमजीत सोम
(महाप्रबंधक)
(बोर्ड एवं समन्वय प्रभाग, प्रधान कार्यालय)

संपादक:

मनीषा शर्मा
(सहायक महाप्रबंधक– राजभाषा)

सह संपादक:

आशीष शर्मा
(मुख्य प्रबंधक–राजभाषा)

गणेश
(वरिष्ठ प्रबंधक–राजभाषा)

हृदय कुमार
(राजभाषा अधिकारी)

विशेष कुमार श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा संपादित
पंजाब नैशनल बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय,
सेक्टर–10, द्वारका, नई दिल्ली

मुद्रण:

विबा प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

पीएनबी प्रतिभा में लेखकों/रचयिताओं द्वारा व्यक्त राय एवं विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। बैंक प्रबंधन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अक्टूबर – दिसंबर 2025

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	2-3
कार्यपालक निदेशक का संदेश	4-5
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश	6
संपादकीय	7
बैंक के नवनियुक्त कार्यपालक निदेशक श्री अमित कुमार श्रीवास्तव का हार्दिक स्वागत	8
पीएनबी ने किया अंचल प्रबंधक एवं मंडल प्रमुख व्यवसाय सम्मेलन का आयोजन	9
विकसित भारत @ 2047 – लेख	10-11
सुश्री हरमनप्रीत कौर बनीं पंजाब नैशनल बैंक की नयी ब्रांड एंबेसडर	12-14
टाउन हॉल बैठक	15
भारतीय बैंक और कॉरपोरेट अभिशासन – लेख	16-20
पीएनबी ने किया रिटेल मेगा आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन	21
कॉरपोरेट गवर्नेंस के मूलभूत सिद्धांत – लेख	22-23
प्रधान कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का भव्य आयोजन	24-27
ईएसजी एकीकरण – कॉरपोरेट अभिशासन का भविष्य – लेख	28-31
कॉरपोरेट गतिविधियां	32-34
बैंक में सुरक्षा विभाग का बढ़ता महत्व – लेख	35-36
उच्चाधिकारियों के दौरे	37-38
बैंकों में सुरक्षा और अग्नि सुरक्षा व्यवस्था – लेख	39-42
सूझबूझ तथा सतर्कता की मिसाल	43
प्रधान कार्यालय में राजभाषा समारोह का आयोजन	44
अंचल कार्यालयों में राजभाषा समारोह की झलकियां	45-46
कॉरपोरेट अभिशासन एवं सुरक्षा – विश्वसनीय बैंकिंग की मजबूत नींव – लेख	47-48
बैंक को पुरस्कार	49
समझौता ज्ञापन / राजभाषा हिंदी : बैंकिंग में विश्वास और संवेदना की भाषा – लेख	50
संसदीय समिति की दौरे	51
बैंक में सुरक्षा प्रबंधन – लेख	52-54
हमें गर्व है / लक्ष्मी की कृपा – लघु कथा	55
प्रभावी निगमित शासन – लेख	56-57
राजभाषा गतिविधियां / सीएसआर गतिविधियां	58-59
भारतीय बैंकिंग व्यवस्था में कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं सुरक्षा का महत्व – लेख	60-62
कॉरपोरेट गवर्नेंस प्राथमिकताएं : एक संक्षिप्त अवलोकन – लेख	63
काव्य सरिता	64-65
कॉरपोरेट गवर्नेंस के लाभ – लेख / पुस्तक समीक्षा– तुम्हारी औकात क्या है	66 -67
अरुणाचल प्रदेश – बादलों, झीलों और शांति की धरती – यात्रा वृतांत	68-69
सुदृढ़ बैंकिंग सुरक्षा – ग्राहकों की प्राथमिकता – लेख	70-71
प्रादेशिक भाषा की रचना / हर तस्वीर कुछ कहती है	72
गुरु-शिष्य परंपरा की थाती – हरियाणा के गुरुकुल – लेख / कला दीर्घा	73-74
हर तस्वीर कुछ कहती है – उत्कृष्ट प्रविष्टियां	75
आपके पत्र	76

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

भारतीय बैंकिंग के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी दौर में, हमारी बैंक की तिमाही पत्रिका का यह विशेषांक **'कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं सुरक्षा'** पर केंद्रित है। यह केवल एक विषय नहीं है, बल्कि हमारे बैंक की कार्य संस्कृति का दर्पण है। किसी भी वित्तीय संस्था के लिए कॉरपोरेट गवर्नेंस (Corporate Governance) और सुरक्षा (Security) वह कवच है जो हितधारकों के हितों की रक्षा करता है।

आज का बैंकिंग परिवेश निरंतर विकसित हो रहा है। एक ओर वित्तीय सेवाओं का विस्तार हो रहा है, वहीं दूसरी ओर जोखिमों का स्वरूप भी अधिक जटिल और बहुआयामी होता जा रहा है। ऐसे परिवेश में सुदृढ़ कॉरपोरेट गवर्नेंस और प्रभावी भौतिक सुरक्षा व्यवस्था किसी भी बैंक के लिए विकल्प नहीं, अपितु अनिवार्यता बन चुकी है।

कॉरपोरेट गवर्नेंस का आशय केवल नियमों, अधिनियमों एवं नियामकीय दिशानिर्देशों के अनुपालन तक सीमित नहीं है। यह संस्था के प्रत्येक निर्णय, प्रक्रिया और कार्य में पारदर्शिता, जवाबदेही, निष्पक्षता तथा नैतिकता को आत्मसात करने की प्रतिबद्धतता है। एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के रूप में हम पर यह विशेष दायित्व है कि हम अपने कार्यों के माध्यम से वित्तीय अनुशासन के पालन के साथ-साथ जनसाधारण के विश्वास की रक्षा भी करें।

सुदृढ़ गवर्नेंस ढांचा स्पष्ट भूमिका निर्धारण, प्रभावी निगरानी तंत्र, जोखिम प्रबंधन, आंतरिक नियंत्रण और उत्तरदायी नेतृत्व को सुनिश्चित करता है। यह बैंक को अनिश्चितताओं एवं चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाता है तथा दीर्घकालिक स्थिरता एवं विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

हमारे गवर्नेंस ढांचे के केंद्र में हमारे बोर्ड तथा उसकी विभिन्न समितियों की सशक्त भूमिका निहित है, जिनकी संरचना और प्रभावशीलता यह सुनिश्चित करती है कि हम पारदर्शी, जवाबदेह और भविष्य उन्मुख बने रहें। स्वतंत्र निदेशकों, वरिष्ठ कार्यपालक और विविध दृष्टिकोणों के साथ बोर्ड संतुलित पर्यवेक्षण और रणनीतिक दिशा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त लेखा परीक्षा, जोखिम, नामांकन एवं पारिश्रमिक जैसी विशेषीकृत समितियां महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर सूक्ष्मता और सत्यनिष्ठा के साथ ध्यान केंद्रित करती हैं, जिससे हितधारकों के हितों की रक्षा के साथ-साथ सतत् विकास को भी गति मिलती है। यह समग्र संरचना नैतिक नेतृत्व, सुविचारित निर्णय-निर्माण और संगठनात्मक सुदृढ़ता की संस्कृति को प्रोत्साहित करती है तथा कॉरपोरेट गवर्नेंस में उत्कृष्टता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत बनाती है।

आज के परस्पर जुड़े विश्व में किसी धारणा को बनाने में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बैंक का हर कार्य सार्वजनिक जांच के दायरे में है और संचार में पारदर्शिता महत्वपूर्ण है। मीडिया और हितधारकों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने की हमारी प्रतिबद्धता सटीक सूचना प्रसार

और दृश्यमान, विश्वसनीय शासन प्रथाओं को सुनिश्चित करती है।

कॉरपोरेट गवर्नेंस के समान ही भौतिक सुरक्षा भी बैंकिंग व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ है। बैंक की शाखाएं, कार्यालय, एटीएम, मुद्रा कोष, तकनीकी कक्ष, फर्नीचर, उपकरण तथा अन्य आस्तियां – ये सभी भौतिक संसाधन बैंक की कार्यप्रणाली को सुचारु बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

भौतिक सुरक्षा का दायरा केवल चोरी या डकैती की रोकथाम तक सीमित नहीं है। इसमें आग से सुरक्षा, प्राकृतिक आपदाओं से बचाव, भीड़ प्रबंधन, आपातकालीन प्रतिक्रिया, अभिगम नियंत्रण (access control), निगरानी प्रणाली तथा सुरक्षित कार्य वातावरण की व्यवस्था भी सम्मिलित है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भौतिक सुरक्षा सीधे हमारे कर्मचारियों और ग्राहकों की सुरक्षा एवं विश्वास से जुड़ी हुई है।

यह अत्यंत आवश्यक है कि शाखा प्रमुख से लेकर प्रत्येक कर्मचारी, सुरक्षा संबंधी निर्देशों की गंभीरता को समझे और उनका अक्षरशः पालन करे। सभी तकनीकी और भौतिक उपायों के बावजूद सुरक्षा की सबसे मजबूत कड़ी मानव तत्व ही होता है। सतर्क दृष्टि, समय पर लिया गया निर्णय, संदिग्ध गतिविधियों की पहचान और त्वरित सूचना– ये सभी तत्व किसी भी सुरक्षा व्यवस्था को प्रभावी बनाते हैं।

इस संदर्भ में प्रशिक्षण, जागरूकता और अभ्यास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। कर्मचारियों को भौतिक सुरक्षा से संबंधित प्रक्रियाओं, आपातकालीन परिस्थितियों में अपनाए जाने वाले कदमों तथा अपनी जिम्मेदारियों की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। नियमित मॉक ड्रिल, सुरक्षा समीक्षा बैठकें और अनुभव साझा करना इस दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

आने वाले समय में बैंकिंग क्षेत्र में चुनौतियां और अधिक जटिल होंगी। शहरीकरण, बढ़ती ग्राहक अपेक्षाएं, नई शाखाएं एवं चैनल– इन सभी के साथ भौतिक सुरक्षा की चुनौतियां भी बढ़ेंगी। ऐसे में हमें निरंतर आत्ममंथन, सुधार और सुदृढ़ीकरण की दिशा में कार्य करना होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे बैंक के अधिकारी और कर्मचारी अपनी प्रतिबद्धता, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा के माध्यम से कॉरपोरेट गवर्नेंस और भौतिक सुरक्षा के उच्चतम मानकों को बनाए रखेंगे।

मुझे आशा है कि इस विशेषांक में सम्मिलित लेख, विचार और अनुभव सभी पाठकों को भौतिक सुरक्षा एवं सुशासन के विभिन्न पहलुओं पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित करेंगे। यह विशेषांक न केवल ज्ञानवर्धक होगा, बल्कि व्यवहारिक दृष्टि से भी उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं इस विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु योगदान देने वाले सभी लेखकों, संपादकीय मंडल तथा सहयोगी कर्मचारियों के प्रयासों की हार्दिक सराहना करता हूं।

अंत में, मैं आप सभी से यह अपेक्षा करता हूं कि आप बैंक की परिसंपत्तियों, कर्मचारियों और ग्राहकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे और सुशासन की संस्कृति को और अधिक सुदृढ़ बनाएंगे।

शुभकामनाओं सहित!

(अशोक चंद्र)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

'पीएनबी प्रतिभा' के इस अंक के माध्यम से आप सबको पहली बार संबोधित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है, जिसमें कॉरपोरेट गवर्नेंस और सुरक्षा को विश्वास एवं सतत् सफलता की आधारशिला के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

कॉरपोरेट गवर्नेंस केवल एक नियामकीय आवश्यकता नहीं है, यह वह मूल ढांचा है, जो वित्तीय संस्थानों की विश्वसनीयता, अखंडता और आघात सहने की क्षमता की रक्षा करता है। एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के रूप में, जिसे राष्ट्र की बचत की सुरक्षा करने और उन्हें उत्पादक विकास की दिशा में प्रवाहित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है, इसमें गवर्नेंस अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। सुदृढ़ गवर्नेंस प्रथाओं का पालन करके बैंक जनता के विश्वास को मजबूत करता है, जवाबदेही सुनिश्चित करता है तथा सतत् आर्थिक विकास में सार्थक योगदान देता है।

कॉरपोरेट गवर्नेंस के मुख्य सिद्धांत:

- **पारदर्शिता:** सूचना का स्पष्ट एवं समयबद्ध प्रकटीकरण हितधारकों को उचित निर्णय लेने में सक्षम बनाता है तथा संस्था के प्रति विश्वास को मजबूत करता है।
- **जवाबदेही:** प्रबंधन के सभी स्तरों पर सुपरिभाषित उत्तरदायित्व यह सुनिश्चित करते हैं कि कार्य समुचित पर्यवेक्षण के अधीन संगठनात्मक उद्देश्यों के अनुरूप हों।
- **निष्पक्षता:** शेयरधारकों, ग्राहकों, कर्मचारियों एवं भागीदारों के साथ एक समान व्यवहार समावेशिता को प्रोत्साहित करता है साथ ही दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करता है।
- **उत्तरदायित्व:** नैतिक आचरण, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता, राष्ट्र निर्माण में बैंक की व्यापक भूमिका को दर्शाता है।

तीव्र तकनीकी परिवर्तन, विकसित होते विनियमन और हितधारकों की बढ़ती अपेक्षाओं वाले आज के वित्तीय परिवेश में कॉरपोरेट गवर्नेंस आवश्यक दिशा प्रदान करता है। यह संस्थानों को जिम्मेदारीपूर्वक विकसित होने में सक्षम बनाता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि प्रगति-विवेक के साथ संतुलित रहे, नवाचार-अनुपालन के अनुरूप हो और लाभप्रदता-सतत्ता को ध्यान में रखते हुए प्राप्त की जाए।

वित्तीय संस्थानों के लिए गवर्नेंस एक रणनीतिक अनिवार्यता है। यह संगठनात्मक उद्देश्यों को नैतिक प्रथाओं के साथ संरेखित करता है, जिम्मेदार विकास सुनिश्चित करता है और संस्थानों को जोखिमों का पूर्वानुमान लगाने, परिवर्तनों के अनुरूप ढालने तथा गतिशील वातावरण में स्थिरता बनाए रखने के लिए तैयार करता है।

बैंक अपने कार्यकलापों के प्रत्येक पहलू में मजबूत गवर्नेंस प्रथाओं को स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रकार हम जमाकर्ताओं के हितों की रक्षा करने, राष्ट्रीय विकास में सहयोग देने तथा बैंकिंग को परिभाषित करने वाले मूल्यों को बनाए रखने के प्रति अपनी निष्ठा को दोहराते हैं।

बैंक ने कॉरपोरेट गवर्नेंस के सिद्धांतों को अपने परिचालन में शामिल करने के लिए कई संरचित पहलें की हैं। बोर्ड और इसकी समितियों को प्रभावी पर्यवेक्षण और रणनीतिक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए सुदृढ़ किया गया है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि निर्णय दूरदर्शिता और विवेक के साथ लिए जाएं। एक व्यापक जोखिम प्रबंधन ढांचा स्थापित किया गया है, जो सभी व्यवसायिक क्षेत्रों में जोखिमों की पहचान, मूल्यांकन और निवारण करता है ताकि संस्थागत स्थिरता सुरक्षित रहे। इसके साथ ही एक मजबूत अनुपालन संस्कृति विकसित की गई है, जिसे आंतरिक नियंत्रण तंत्र का समर्थन प्राप्त है, जो नियामकीय आवश्यकताओं और नैतिक मानकों का पालन सुनिश्चित करता है।

पारदर्शिता और हितधारक सहभागिता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। हमने ग्राहकों, कर्मचारियों और शेयरधारकों के साथ संवाद को बेहतर बनाने के लिए संचार चैनलों को सुदृढ़ किया है, जिससे संस्था के प्रति विश्वास एवं भरोसा और अधिक मजबूत हुआ है। पर्यावरणीय और सामाजिक पहलुओं को हमारे ऋण और निवेश निर्णयों का हिस्सा बनाते हुए सततता को भी हमारी गवर्नेंस पद्धतियों में शामिल किया गया है। साथ ही, हम दक्षता, जवाबदेही और सेवा वितरण में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग निरंतर बढ़ा रहे हैं, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि गवर्नेंस तेजी से विकसित हो रहे वित्तीय परिदृश्य में भी प्रासंगिक और प्रभावी बना रहे।

डिजिटल वैश्वीकरण और उसकी तमाम चुनौतियों के बीच सुरक्षा विभाग द्वारा हमारी बैंक शाखाओं में भौतिक एवं अग्नि सुरक्षा संबंधी विभिन्न समकालीन चुनौतियों का भी निरंतर अध्ययन एवं विश्लेषण किया जा रहा है। फलतः सभी बैंक शाखाओं/एटीएम में भौतिक एवं अग्नि सुरक्षा संबंधी तमाम आवश्यक और उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण लगाए गए हैं, जिससे न केवल बैंक शाखाओं की सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ हुई है अपितु हमारे ग्राहकों का विश्वास भी बढ़ा है।

मुझे आशा है कि पीएनबी प्रतिभा के विशेषांक में दी गई नवीनतम और ज्ञानवर्धक सामग्री हमारे स्टाफ सदस्यों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी तथा कॉरपोरेट गवर्नेंस तथा सुरक्षा के संबंध में उनकी सोच को परिपक्व करने में सहायक होगी। मैं सभी सहकर्मियों से आग्रह करता हूं कि वे अपने-अपने दायित्वों में विवेकपूर्ण गवर्नेंस प्रथाओं को अपनाएं और उनका पालन करें, जिससे हम सामूहिक रूप से सत्यनिष्ठा, जवाबदेही और सतत् विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत कर सकें और राष्ट्र की आर्थिक प्रगति में एक विश्वसनीय भागीदार की भूमिका निभाते हुए समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वाह कर सकें।

मैं आप सभी के सतत् परिश्रम, प्रतिबद्धता और सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सामूहिक प्रयासों से हमारा बैंक कॉरपोरेट गवर्नेंस और सुरक्षा के उच्चतम मानकों को स्थापित करते हुए निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

(अमित कुमार श्रीवास्तव)
कार्यपालक निदेशक

मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक की तिमाही गृह पत्रिका 'पीएनबी प्रतिभा' के इस अंक के माध्यम से आप सभी को पहली बार संबोधित करते हुए मुझे आत्मीयता और हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह अंक "कॉरपोरेट गवर्नेंस और सुरक्षा" को समर्पित है। वर्तमान परिवेश में कॉरपोरेट गवर्नेंस तथा सुरक्षा प्रत्येक संस्था के अनिवार्य और निर्धारक तत्व माने जाते हैं। इनके बिना किसी भी संगठन की कल्पना नहीं की जा सकती। कॉरपोरेट गवर्नेंस का सीधा-सरल अर्थ है कि किसी संगठन को कैसे निर्देशित और नियंत्रित किया जा रहा है। इसमें उन सभी नीति-नियमों तथा प्रक्रियाओं को शामिल किया जाता है जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि संस्था पूरे नैतिक और पारदर्शी तरीके से चलाई जा रही है।

कॉरपोरेट गवर्नेंस में संगठन के प्रत्येक हितधारक अर्थात् ग्राहक, शेयरधारक, स्टाफ सदस्य, लेनदार आदि के हितों को ध्यान में रखकर उचित प्रक्रिया और नीति निर्धारण किया जाता है। ऐसा करने का उद्देश्य प्रबंधन और हितधारकों के बीच हितों के टकराव से बचना और संस्था के कार्यों को सुचारु रूप से चलाना है। एक अच्छे कॉरपोरेट गवर्नेंस में यह अपेक्षा की जाती है कि संगठन के सभी तत्व अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों को भली-भांति समझते हैं और संस्था की नीति व नियमों के अनुसार ही कार्य करते हैं।

कॉरपोरेट गवर्नेंस की संकल्पना सार्वजनिक और निजी संगठनों को नैतिकता के आधार पर संचालित करने से संबंधित है अर्थात् इसका संबंध नैतिकता आधारित गवर्नेंस से है। कॉरपोरेट गवर्नेंस, कॉरपोरेट औचित्य, पारदर्शिता तथा जवाबदेही के संवर्द्धन से संबंधित है। यह निम्न उद्देश्यों को सुनिश्चित करता है:

- कॉरपोरेट उद्देश्यों को हासिल करने हेतु पर्याप्त प्रकटन (डिस्क्लोजर) तथा प्रभावी निर्णय।
- कारोबारी लेन-देन में पारदर्शिता ।
- सांविधिक तथा कानूनी अनुपालन के साथ शेयरधारकों के हितों का संरक्षण ।
- व्यवसाय के मूल्यों तथा नैतिक आचरण के प्रति प्रतिबद्धता।

पंजाब नैशनल बैंक कॉरपोरेट गवर्नेंस के चार मुख्य स्तंभों अर्थात जवाबदेही (Accountability), निष्पक्षता (Fairness), पारदर्शिता (Transparency) और जिम्मेदारी (Responsibility) को अपनी कार्यप्रणाली में कार्यान्वित करके ग्राहकों के भरोसे का प्रतीक बना हुआ है। बैंक का संचालन नैतिक रूप से हो और सभी हितधारकों (Stakeholders) के हितों की रक्षा हो इसके लिए हमारा बैंक लोकप्रिय मॉडल "4 Ps" का उपयोग करता है जिसके अनुसार लोग (People), उद्देश्य (Purpose), प्रक्रिया (Process), और प्रदर्शन (Performance) को महत्व दिया जाता है।

पंजाब नैशनल बैंक ग्राहकों तथा हितधारकों की सुरक्षा को महत्वपूर्ण मानकर अंचल/मंडल तथा शाखा कार्यालय में सुरक्षा नियमों/निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करता आ रहा है। बैंक हितधारकों के धन, दस्तावेज, डिजिटल डेटा की सुरक्षा हेतु भवनों, बैंक शाखाओं, एटीएम, लॉकरों की सुरक्षा को प्राथमिकता देता है। इस हेतु नवीन सुरक्षा उपायों जैसे प्रशिक्षित सुरक्षा गार्ड, पहचान प्रक्रिया, बैग स्कैनर, मेटल डिटेक्टर, 24x7 रिकॉर्डिंग सहित सीसीटीवी कैमरे के द्वारा इसे चाक-चौबंद बनाया गया है। अभेद्य तिजोरियां, आपातकालीन स्वचालित अलार्म सुरक्षा प्रणाली इसे और भी अधिक सुरक्षित बनाती है। इसके अतिरिक्त बैंक में तकनीकी एवं डिजिटल सुरक्षा हेतु गठित अत्याधुनिक 'साइबर सुरक्षा टीम' बैंक के नेटवर्क, सर्वर सुरक्षा एवं डेटा विश्लेषण सहित साइबर हमलों की रोकथाम के लिए 365x24x7 आधार पर सतर्क होकर कार्य कर रही है।

बैंक की सुरक्षा में ग्राहक जागरूकता और बैंक कर्मचारियों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। बैंक इसके लिए समय-समय पर प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, मॉकड्रिल एवं एडवाइजरी के माध्यम से उन्हें प्रशिक्षित एवं जागरूक करता है।

इस अंक में कॉरपोरेट गवर्नेंस और सुरक्षा के विविध पहलुओं पर सारगर्भित जानकारी दी गई है। मुझे आशा और विश्वास है कि यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानप्रद और उपयोगी सिद्ध होगा।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित !

(विशेष कुमार श्रीवास्तव)
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय

सुधि पाठकों,

"कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं सुरक्षा" पर आधारित बैंक की गृह पत्रिका का यह नूतन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। बैंक की गृह पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" का प्रत्येक अंक बैंकिंग की एक महत्वपूर्ण थीम पर आधारित होता है। इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य बैंक की मुख्य गतिविधियों एवं नवाचारों के साथ-साथ स्टाफ सदस्यों की लेखन क्षमता को आप सभी पाठकों के समक्ष एक सुसज्जित रूप में प्रस्तुत करना है।

बैंक देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ तो हैं ही, साथ ही आमजन के परिश्रम से अर्जित पूंजी के संरक्षक भी होते हैं। बैंक के प्रति हितधारक और ग्राहक का विश्वास ही उसकी प्रगति की आधारशिला होती है। किसी भी संगठन या व्यक्ति को महान बनाने में उसके मूल्यों, आचरण, नैतिकता की अहम भूमिका होती है।

यथा चित्तं तथा वाचो, यथा वाचस्तथा क्रिया
चित्ते वाचि क्रियायां च साधुनामेकरुपता

"अर्थात जैसा मन हो, वैसी ही वाणी हो, वैसे ही कार्य हों। महापुरूषों के मन, वाणी और कार्य में एकरूपता होती है।"

यही कॉरपोरेट गवर्नेंस का भी मूल सिद्धांत है। कॉरपोरेट गवर्नेंस उन सिद्धांतों, नीतियों, प्रक्रियाओं का समूह है, जिनके माध्यम से किसी संस्था को निष्पक्ष, पारदर्शी, जवाबदेह और नैतिक रूप से संचालित किया जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि बैंक प्रबंधन अपने कार्यों को पूरी पारदर्शिता, ईमानदारी और उत्तरदायित्व के साथ निष्पादित करें। इस प्रकार कॉरपोरेट गवर्नेंस बैंक के लिए न केवल नियामक है, बल्कि रक्षा कवच और प्रगति का दिशा सूचक भी है।

जिस प्रकार अच्छी कॉरपोरेट गवर्नेंस किसी संस्था को आंतरिक रूप से मजबूत बनाती है, उसी प्रकार व्यवस्थित सुरक्षा प्रणाली उसे बाह्य रूप से सुदृढ़ करती है। उत्कृष्ट कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं ठोस सुरक्षा प्रदान करने वाले जागरूक, जोखिम प्रतिरोधी तथा नैतिकता प्रधान बैंक ग्राहकों और हितधारकों को आकर्षित करते हैं तथा उनकी पहली पसंद होते हैं। बैंक के लिए अग्नि सुरक्षा नियम जीवन रक्षा, संपत्ति-सुरक्षा, कानूनी अनुपालन एवं प्रतिष्ठा संरक्षण हेतु अनिवार्य हैं। यह केवल वैधानिक बाध्यता नहीं, अपितु जीवन रक्षा एवं जोखिम प्रबंधन का मूलभूत तत्व है। पत्रिका का यह अंक बैंक की कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं सुरक्षा विषयक भूमिकाओं एवं प्रयासों को रेखांकित करते हुए व्यावहारिक रणनीतियों एवं विशेषज्ञ विचारों के माध्यम से समन्वित दृष्टिकोण पर प्रकाश डालता है।

आपको इस अंक में "कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं सुरक्षा" विषयक रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेखों, बैंक द्वारा विश्व विजेता भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान सुश्री हरमनप्रीत कौर को ब्रांड एम्बेसडर बनाए जाने का ऐतिहासिक क्षण तथा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत विविध कार्यकर्मों के आयोजन, विभिन्न जनसंपर्क(आउटरीच) कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक समावेशन को सुदृढ़ बनाने तथा हिंदी दिवस के उत्साहपूर्ण आयोजनों की झलक मिलेगी।

पत्रिका के पिछले अंक "बैंकिंग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा राजभाषा विशेषांक" हेतु आपसे प्राप्त बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं तथा सुझावों के लिए मैं आपका हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करती हूं। आपकी सकारात्मक प्रतिपुष्टि एवं रचनात्मक टिप्पणियों ने पत्रिका को और अधिक उत्कृष्ट बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भावी अंकों हेतु भी आपके निरंतर स्नेह, प्रोत्साहन एवं सहयोग की अपेक्षा एवं आकांक्षा रखती हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं सुरक्षा" जैसे महत्वपूर्ण विषय से परिपूर्ण पत्रिका का यह अंक आपको रूचिकर एवं उपयोगी लगेगा और हमें आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन पूर्व की भांति प्राप्त होता रहेगा।

नव वर्ष 2026 की मंगलकामनाओं सहित!

(मनीषा शर्मा)
संपादक एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

बैंक के नवनियुक्त कार्यपालक निदेशक श्री अमित कुमार श्रीवास्तव का हार्दिक स्वागत

श्री अमित कुमार श्रीवास्तव को दिनांक 24 नवंबर 2025 को पंजाब नैशनल बैंक में कार्यपालक निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है।

श्री अमित कुमार श्रीवास्तव को 31 वर्षों से अधिक का समृद्ध एवं बहुआयामी बैंकिंग अनुभव है। अपने शानदार करियर के दौरान, आपने शाखा बैंकिंग, ट्रेजरी प्रबंधन तथा जोखिम प्रबंधन सहित कई महत्वपूर्ण परिचालन और नेतृत्वपरक पदों पर कार्य किया है, जिससे आपको बैंकिंग परिदृश्य की गहन और व्यापक समझ है।

श्री अमित कुमार श्रीवास्तव ने मार्च 1994 में अपनी प्रोफेशनल यात्रा शुरू की और तब से आप विभिन्न पदों पर सेवारत रहे, जिसमें पीएनबी के जोधपुर अंचल के अंचल प्रबंधक का पद भी शामिल है। इस पदोन्नति से पूर्व, आपने क्रेडिट समीक्षा एवं निगरानी प्रभाग में मुख्य महाप्रबंधक तथा पीएनबी के समूह मुख्य जोखिम अधिकारी के रूप में कार्य किया, जहां आपने बैंक के जोखिम अभिशासन को सुदृढ़ करने, मजबूत आधारभूत संरचना तैयार करने तथा संस्थान में विवेकपूर्ण जोखिम प्रबंधन की संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) के पूर्व छात्र के रूप में, आपने विज्ञान में मास्टर ऑफ साइंस डिग्री प्राप्त की है और आईसीएफएआई (ICFAI) से ट्रेजरी एंड फॉरेक्स मैनेजमेंट में स्नातकोत्तर डिप्लोमा उत्तीर्ण किया है। आप इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकर्स के एक सर्टिफाइड एसोसिएट (सीएआईआईबी) (CAIIB) भी हैं और आपने विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त योग्यता अर्जित की हैं, जिनमें जीएआरपी (यूएसए) से सस्टेनेबिलिटी एंड क्लाइमेट रिस्क (एससीआर) सर्टिफिकेट, प्रोफेशनल रिस्क मैनेजर, और रिस्क इन फाइनेंशियल सर्विसेज शामिल हैं, यह आधुनिक जोखिम, सस्टेनेबिलिटी और वित्तीय प्रबंधन प्रथाओं पर आपकी मजबूत पकड़ को दर्शाता है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व में पंजाब नैशनल बैंक सफलता के नए सोपान प्राप्त करेगा और बैंकिंग इंडस्ट्री में एक नई मिसाल कायम करेगा। पीएनबी प्रतिभा का संपादक मंडल आपका हार्दिक स्वागत करता है तथा आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

पीएनबी ने किया अंचल प्रबंधक एवं मंडल प्रमुख व्यवसाय सम्मेलन का आयोजन

प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित अंचल प्रबंधक एवं मंडल प्रमुख व्यवसाय सम्मेलन के अवसर पर श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशकगण, श्री एम. परम शिवम, श्री बी.पी. महापात्र तथा श्री डी. सुरेंद्रन।

पीएनबी के प्रधान कार्यालय ने अंचल एवं मंडल कार्यालयों के लिए दिल्ली स्थित होटल वेलकम में अंचल प्रबंधक एवं मंडल प्रमुख व्यवसाय सम्मेलन का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोक चंद्र, एमडी एवं सीईओ ने की।

इस अवसर पर कार्यपालक निदेशकगण, श्री एम. परमशिवम, श्री बी. पी. महापात्र तथा श्री डी. सुरेंद्रन, मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण सहित समस्त अंचल प्रमुखों, मंडल प्रमुखों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सम्मेलन का शुभारंभ माननीय एमडी एवं सीईओ तथा कार्यपालक निदेशकगणों के द्वारा लाला लाजपत राय को पुष्पांजलि तथा दीप प्रज्जवल के द्वारा हुआ।

तदनुपरान्त एमडी एवं सीईओ तथा कार्यपालक निदेंशकगण के द्वारा कार्यक्रम के दौरान अंचल तथा मंडल कार्यालय प्रमुखों के बैंकिंग कारोबार की समीक्षा की गई। साथ ही बैंक के लिए बैंकिंग कारोबार में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अंचल/मंडल कार्यालयों को माननीय एमडी एवं सीईओ तथा कार्यपालक निदेशकगण के द्वारा सम्मानित किया गया।

विकसित भारत @ 2047

देवकर्ण सिंह
सहायक महाप्रबंधक
सरकारी व्यवसाय केंद्र, अगरतला

हमारा देश भारत - एक ऐसा देश है जिसने "वसुधैव कुटुंबकम" में विश्वास किया है, सभ्यता, संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में विश्व को दिशा दी है। हजारों वर्षों की गौरवशाली परंपरा, विविधता में एकता और आत्मनिर्भरता की भावना ने भारत को हमेशा विशिष्ट बनाया है। 15 अगस्त 2047 को हमारी आजादी के 100 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं और वर्ष 2047 भारत के लिए एक ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित होने वाला है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत "विकसित भारत @ 2047" का विजन इस बात का प्रतीक है कि आने वाले समय में भारत केवल उभरती हुई नहीं, बल्कि विश्व की अग्रणी शक्ति बनेगा। यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों का सामूहिक संकल्प है।

विकसित भारत की कल्पना:

भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। दुनियां भर के कई लुटेरों ने भारत को बेहिसाब लूटा, तकरीबन 200 वर्षों तक अंग्रेजों का शासन रहा और हमारा देश पिछड़ता गया। विकसित भारत की कल्पना करना एक अद्भुत विचार है। यह एक ऐसा भारत होगा जो आर्थिक रूप से समृद्ध होगा, जहां हर नागरिक को बुनियादी सुविधाएं मिलेंगी, जहां शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं हर किसी तक पहुंचेंगी, और जहां प्रौद्योगिकी और नवाचार का बोलबाला होगा। यह एक ऐसा भारत होगा जो विश्व मंच पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और अपनी संस्कृति, ज्ञान, और कौशल के बल पर विश्व का मार्गदर्शन करेगा।

विकसित भारत का अर्थ:

"विकसित भारत" का अर्थ केवल आर्थिक दृष्टि से समृद्ध होना नहीं है। इसका तात्पर्य है- आज भारत के युवा पूरी दुनियां में अपनी मेधा का लोहा मनवा चुके हैं। भारत में अच्छे अवसरों की कमी के कारण वे दूसरे विकसित देशों का रुख करते हैं। वे अपना एवं अपने देश का नाम रौशन करते हैं। जरा कल्पना कीजिये कि अगर अपना भारत विकसित हो और हमारी युवा मेधा शक्ति को अपने ही देश में समुचित सुअवसर मिले तो फिर क्या होगा। भारत को विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक पायेगा। विकसित भारत की कल्पना करने का मतलब है - ऐसे भारत का निर्माण करना जहां हर नागरिक को समान अवसर मिले, जहां गरीबी और अशिक्षा का नामो-निशान न हो, जहां विज्ञान, शिक्षा, स्वास्थ्य और तकनीक के क्षेत्र में भारत विश्व का नेतृत्व करे, और सबसे बढ़कर, जहां हर नागरिक गर्व से कह सके- "मुझे भारत पर गर्व है।"

वर्तमान परिदृश्य और चुनौतियां:

आज भारत एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। हमने पिछले कुछ दशकों में आर्थिक विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियां हमारे सामने हैं। गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी जैसी समस्याएं अभी भी हमारे समाज में गहराई से जमी हुई हैं। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और संसाधनों की कमी जैसी वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें नए और नवाचारी समाधानों की आवश्यकता है। आज भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और हमारा लक्ष्य विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का है।

विकसित भारत के लिए रणनीति:

विकसित भारत @ 2047 की कल्पना को साकार करने के लिए हमें एक स्पष्ट और व्यापक रणनीति की आवश्यकता है। यहां कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिन पर हमें ध्यान केंद्रित करना होगा:

1. **शिक्षा और कौशल विकास:** शिक्षा और कौशल विकास पर निवेश करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें अपने युवाओं को 21वीं सदी के कौशलों से लैस करना होगा, जैसे कि प्रौद्योगिकी, डेटा साइंस और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस। साथ ही, हमें अपने शिक्षा तंत्र में सुधार लाना होगा ताकि हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके। स्कूली शिक्षा

के बाद ही कौशल विकास की तरफ हमारी युवाशक्ति को प्रेरित करने की आवश्यकता है।

2. **आर्थिक विकास और रोजगार:** आर्थिक विकास और रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान देना होगा। हमें अपने उद्योगों को बढ़ावा देना होगा और स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करना होगा। इसके लिए हमें व्यापार करने में आसानी, निवेश को आकर्षित करने और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए नीतियों और नियमों में सुधार लाना होगा। देश भर में सभी खाली पड़े पदों पर नियुक्ति करनी होगी। सरकारी नौकरियों के लिए एक कैलेंडर जारी करना होगा जिससे सालों-साल तक कोई पद रिक्त न रहे और हमारे युवा एक अदद नौकरी के लिए यहां-वहां न भटके। असंतोष पनपने से पहले ही उसका समाधान खोज लेना होगा।

3. **स्वास्थ्य सेवाएं:** स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाना भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। हमें अपने स्वास्थ्य तंत्र को मजबूत करना होगा, जिसमें प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं से लेकर उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधाओं तक सब कुछ शामिल है। इसके लिए हमें स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश बढ़ाना होगा और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाना होगा।

4. **पर्यावरण और स्थिरता:** पर्यावरण संरक्षण और स्थिरता भी विकसित करना भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हमें जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए अक्षय ऊर्जा स्रोतों को अपनाना होगा, प्रदूषण को कम करना होगा, और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना होगा।

5. **डिजिटल भारत:** डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके हम अपने देश के विकास को गति दे सकते हैं। हमें डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना होगा, डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश करना होगा, और ई-गवर्नेंस को मजबूत करना होगा।

भविष्य की ओर एक कदम:

विकसित भारत @ 2047 की यात्रा आसान नहीं होगी, लेकिन यह निश्चित रूप से संभव है। हमें अपने प्रयासों में निरंतरता बनाए रखनी होगी, चुनौतियों का सामना करना होगा, और अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते रहना होगा। हमें अपने देश की क्षमता पर विश्वास करना होगा और मिलकर काम करना होगा। विकसित भारत @ 2047 का लक्ष्य केवल सरकार का नहीं, बल्कि हर नागरिक का दायित्व है। किसान जब अधिक उत्पादन करेगा, तो वह योगदान देगा। शिक्षक जब नई सोच वाले नागरिक बनाएगा, तो वह योगदान देगा। उद्यमी जब रोजगार सृजन करेगा, तो वह योगदान देगा। जब नागरिक ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेगा, तभी यह सपना साकार होगा। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने भी कहा है :- "2047 तक विकसित भारत का सपना केवल सरकार का नहीं, बल्कि हर भारतीय का संकल्प है।"

निष्कर्ष

विकसित भारत @ 2047 एक सपना नहीं, बल्कि एक वास्तविकता बनाने का समय है। हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एकजुट होकर काम करने की जरुरत है। सरकार, उद्योग जगत और नागरिक समाज को मिलकर इस दिशा में काम करना होगा। हमें अपने युवाओं में निवेश करना होगा, अपने संसाधनों का सही उपयोग करना होगा और स्थिरता तथा समावेशिता को अपने विकास का आधार बनाना होगा। आइए, हम सब मिलकर विकसित भारत के सपने को साकार करें, इस महत्वपूर्ण यात्रा में योगदान दें, विकसित भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं और अपने देश को नई ऊंचाइयों तक ले जाएं। यह समय है कि हम अपने सपनों को हकीकत में बदलें और एक समृद्ध, शक्तिशाली, और विकसित भारत का निर्माण करें। यही उचित समय है कि हम अपने देश के भविष्य को आकार दें और एक उज्ज्वल और समृद्ध भारत का निर्माण करें।

सुश्री हरमनप्रीत कौर बनीं पंजाब नैशनल बैंक की नयी ब्रांड एंबेसडर

प्रधान कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान श्री एम. नागराजू, सचिव (डीएफएस) एवं सुश्री हरमनप्रीत कौर (भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान, विश्व कप विजेता और अर्जुन पुरस्कार विजेता) का पौधा भेंट कर अभिनंदन करते हुए श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी।

पंजाब नैशनल बैंक ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान और विश्व कप विजेता सुश्री हरमनप्रीत कौर को बैंक की पहली महिला ब्रांड एंबेसडर के रूप में अनुबंधित किया है। यह ऐतिहासिक जुड़ाव पीएनबी की ब्रांड परिवर्तन यात्रा में एक रणनीतिक मील का पत्थर है।

यह घोषणा बैंक के प्रधान कार्यालय में 'बैंकिंग ऑन चैंपियंस' की व्यापक थीम के तहत एक शानदार समारोह में हुई। इस समारोह में मुख्य अतिथि श्री एम. नागराजू, सचिव (डीएफएस), सुश्री हरमनप्रीत कौर (भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान, विश्व कप विजेता और अर्जुन पुरस्कार विजेता) और श्री अशोक चंद्र, एमडी एवं सीईओ, कार्यपालक निदेशकगण - श्री एम. परमशिवम, श्री बिभु प्रसाद महापात्र, श्री डी. सुरेंद्रन, और श्री अमित कुमार श्रीवास्तव, श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण और अन्य स्टाफ सदस्यगण शामिल थे।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान और विश्व कप विजेता हरमनप्रीत कौर ने श्री एम. नागराजू, सचिव (एफएस), और पीएनबी के एमडी एवं सीईओ, श्री अशोक चंद्र के साथ बैंक के चार वित्तीय उत्पादों का शुभारंभ किया, पीएनबी रूपे मेटल क्रेडिट कार्ड लग्जरा, पीएनबी वन 2.0, डिजी सूर्य घर और IIBX पोर्टल पर पीएनबी की ऑनबोर्डिंग जो नवाचार, डिजिटल-फर्स्ट सेवाओं और ग्राहक-केंद्रित समाधानों के प्रति पीएनबी की प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।

सुश्री हरमनप्रीत कौर (भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान, विश्व कप विजेता और अर्जुन पुरस्कार विजेता) को प्रधान कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बैंक की ब्रांड एंबेसडर के रूप में अनुबंधित करते हुए श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी। साथ में हैं श्री एम. नागराजू, सचिव (डीएफएस)।

इस अवसर पर श्री एम. नागराजू, सचिव (डीएफएस) ने कहा: "सुश्री हरमनप्रीत कौर ने पहली बार महिला क्रिकेट टीम को जीत दिलाकर भारत को गौरवान्वित किया है और लाखों युवाओं को प्रेरित किया है। पीएनबी ने विशेष रूप से एमएसएमई अभियान में शानदार काम किया है और इस मेटल क्रेडिट कार्ड के लॉन्च से विशिष्ट समूह के लिए एक उत्पाद जोड़ा है।" उन्होंने सोने के बुलियन ऑनलाइन ट्रेडिंग के लिए पीएनबी को IIBX पर ऑनबोर्ड किए जाने पर भी अपनी खुशी व्यक्त की।

बैंक के नवीन उत्पाद पीएनबी रूपे मेटल क्रेडिट कार्ड लग्जरा का लोकार्पण करते हुए बैंक की ब्रांड एंबेसडर सुश्री हरमनप्रीत कौर, श्री एम. नागराजू, सचिव (डीएफएस), श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान और विश्व कप विजेता सुश्री हरमनप्रीत कौर ने कहा: "यह सचमुच अविश्वसनीय लग रहा है। मैं जब 18 साल की थी, तब से ही पीएनबी के साथ बैंकिंग कर रही हूं और मेरा पहला खाता पीएनबी मोगा, शाखा में था। आज बैंक की ब्रांड एंबेसडर के रूप में यहां खड़ा होना मेरे लिए सम्मान की बात है। पीएनबी ने भारतीयों की पीढ़ियों को उनकी वित्तीय आकांक्षाओं को साकार करने में सहायता की है, और लोगों, विशेषकर महिलाओं और युवा प्रतिभाओं को सशक्त बनाने की इसकी प्रतिबद्धता मेरे दिल को छूती है। मुझे पीएनबी मेटल क्रेडिट कार्ड लग्जरा की पहली ग्राहक बनकर भी खुशी हो रही है।"

पीएनबी के एमडी एवं सीईओ श्री अशोक चंद्र ने कहा: "हम भारतीय महिला क्रिकेट कप्तान और विश्व कप विजेता सुश्री हरमनप्रीत कौर का पीएनबी परिवार में स्वागत करते हुए बहुत उत्साहित हैं। पीएनबी के इतिहास में यह पहली बार है कि हमारे पास एक महिला ब्रांड एंबेसडर है। उनका नेतृत्व, जुझारूपन और उत्कृष्टता की अटूट खोज हमारे बैंक के लोकाचार को दर्शाती है। हमारे विशिष्ट ग्राहकों के लिए पहला मेटल क्रेडिट कार्ड-लग्जरा-पेश करते हुए भी हमें खुशी हो रही है, जिसे बेजोड़ अनुभव प्रदान करने और मौजूदा बाजार में एक नया मानदंड स्थापित करने के लिए डिजाइन किया गया है।"

वैभव को फिर से परिभाषित करते हुए, पीएनबी का रूपे मेटल क्रेडिट कार्ड "लग्जरा" एक प्रीमियम क्रेडिट कार्ड है जिसे विशेषाधिकार और बेहतर वैल्यू चाहने वाले ग्राहकों के लिए डिजाइन किया गया है। इस कार्ड में एक व्यापक रिवॉर्ड प्रोग्राम शामिल है, जिसमें 90 दिनों के भीतर ₹50,000 खर्च करने पर ₹40,000 वेलकम रिवॉर्ड पॉइंट (₹10,000 के मूल्य के) और ₹5 लाख के वार्षिक खर्च पर 10,000 माइलस्टोन रिवॉर्ड पॉइंट शामिल हैं। यह कार्ड होटल संबंधी विशेषाधिकार भी प्रदान करता

कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते हुए श्री एम. नागराजू, सचिव (डीएफएस), श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी तथा बैंक की नई ब्रांड एंबेसडर, सुश्री हरमनप्रीत कौर।

कार्यक्रम के दौरान स्टाफ सदस्यों द्वारा दी गई सांस्कृतिक प्रस्तुति देखते हुए श्री एम. नागराजू, सचिव (डीएफएस), श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं बैंक की नई ब्रांड एंबेसडर सुश्री हरमनप्रीत कौर तथा अन्य उच्चाधिकारीगण।

है, जैसे आईटीसी होटल्स में 2+1 कॉम्प्लिमेंट्री नाइट और चयनित आईटीसी रेस्तरां में 1+1 सेट मेनू जैसे डाइनिंग लाभ। होटल लक्स एलीट प्लस सदस्यता वाले कार्डधारक हयात, मैरियट, फोर सीजन्स, हिल्टन, एकोर, आदि सहित सदस्य होटल शृंखलाओं के साथ विभिन्न लाभ उठा सकते हैं।

पीएनबी ने पीएनबी वन 2.0 (अपने मुख्य मोबाइल बैंकिंग ऐप का नया संस्करण) और डिजी सूर्य घर (रूफटॉप सौर ऊर्जा प्रणालियों के वित्तपोषण के लिए पूरी तरह से डिजिटल पहल) भी लॉन्च किया। पीएनबी को अंतरराष्ट्रीय बुलियन एक्सचेंज (आईआईबीएक्स) पर भी ऑनबोर्ड किया गया है।

समारोह में एक आकर्षक रैपिड-फायर बातचीत, वृक्षारोपण, और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी शामिल थीं। समारोह में, पीएनबी ने 10 युवा महिला क्रिकेटरों को भी आमंत्रित किया, जिन्हें सुश्री हरमनप्रीत कौर के ऑटोग्राफ वाली पीएनबी-ब्रांडेड क्रिकेट किट दी गई, जिससे युवा एथलीटों को आत्मविश्वास के साथ अपने खेल के सपनों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। धन्यवाद ज्ञापन श्री बिभु पी. महापात्र, कार्यपालक निदेशक द्वारा दिया गया।

इतना भी आसान नहीं

सचिन शुक्ला 'मुसाफिर'
वरिष्ठ प्रबंधक, मंडल कार्यालय, मुरादाबाद

यार किसी को पाकर खोना इतना भी आसान नहीं
हंसते होंठों से फिर रोना इतना भी आसान नहीं

हमने अपना दर्द सुनाया लुत्फ उठाया महफिल ने
इस दुनिया में शायर होना इतना भी आसान नहीं

जिनसे रिश्ता टूट गया हो उनसे फिर हंस के मिलना
खाक हुए रिश्तों को ढोना इतना भी आसान नहीं

जिन सूखी आँखों से मोती आंसू बन के झर जाएं
उन आंखों में ख्वाब पिरोना इतना भी आसान नहीं

जिन लफ्जों को कह देने से सुनने वाले वाह कहें
उन शेरों पर आंख भिगोना इतना भी आसान नहीं

रिश्तों पर गर आंच बढ़े तो सहकर पीछे हट जाएं
यार 'मुसाफिर' कायर होना इतना भी आसान नहीं

टाउन हॉल बैठक

पीएनबी ने श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी की अध्यक्षता में देहरादून, दुर्गापुर, शिमला तथा भोपाल अंचल कार्यालयों में टाउन हॉल बैठक का आयोजन किया। जिसका उद्देश्य बैंक की रणनीतिक दिशा, विकास पहल और ग्राहक-केंद्रित बैंकिंग के प्रति प्रतिबद्धता पर चर्चा करने के लिए नेतृत्व, कर्मचारी और प्रमुख हितधारकों को साथ लाना था। इन बैठकों में अंचलों के समस्त मंडल प्रमुखों सहित समस्त स्टाफ सदस्यों ने भी उत्साहपूर्वक सहभागिता की। श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने इन बैठकों के माध्यम से अंचलों के बैंकिंग कारोबार की समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने सभी स्टाफ सदस्यों के साथ बैंकिंग कारोबार को और अधिक समृद्ध तथा उन्नत बनाने के लिए अपने विजन और सुझाव भी साझा किए।

देहरादून

भोपाल

दुर्गापुर

शिमला

भारतीय बैंक और कॉरपोरेट अभिशासन

सुनील कुमार
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, मोगा

भूमिका

बैंकिंग अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा है और राष्ट्र के आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है। बैंक मुख्य रूप से जमाकर्ताओं से निधियां प्राप्त कर उनकी सुरक्षित अभिरक्षा करने, लक्षित क्षेत्रों में ऋण एवं निधियों का प्रवाह बनाए रखने तथा अर्थव्यवस्था के संतुलन को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होते हैं। राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया के बाद बैंक सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास का सर्वाधिक सशक्त उपकरण बनकर उभरे हैं। वित्तीय संस्थाओं के कॉरपोरेट अभिशासन का संपूर्ण अर्थव्यवस्था की स्थिरता एवं वृद्धि पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

कॉरपोरेट अभिशासन नीतियों, प्रक्रियाओं, प्रणालियों और प्रथाओं के उस ढांचे को संदर्भित करता है जो किसी बैंक के निर्देशन और नियंत्रण का मार्गदर्शन करता है। यह सुनिश्चित करता है कि बैंक नैतिक और कानूनी रूप से नियामक आवश्यकताओं के अनुरूप कुशलतापूर्वक कार्य करें। मजबूत कॉरपोरेट अभिशासन वित्तीय प्रणाली की अखंडता को बनाए रखते हुए जमाकर्ताओं, निवेशकों और अन्य हितधारकों के हितों की सुरक्षा करता है।

वैश्वीकरण और उदारीकरण के इस दौर में लाभप्रद रहते हुए प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए बैंकों के लिए कॉरपोरेट अभिशासन प्रथाओं को अपनाना अनिवार्य हो गया है। बैंकिंग की भाषा में, कॉरपोरेट अभिशासन का मतलब है बैंक की गतिविधियों को इस तरह से संचालित करना जिससे विभिन्न हितधारकों, यथा निवेशकों, कर्मचारियों, ग्राहकों, शेयरधारकों, नियामक संस्थाओं आदि सभी के हितों की रक्षा हो और उनके साथ निष्पक्ष व्यवहार किया जाए। बैंकिंग लेनदेन की प्रकृति के कारण बैंकिंग क्षेत्र में कॉरपोरेट अभिशासन का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है।

बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन की प्रभावी व्यवस्था बैंकों पर नियंत्रण एवं निगरानी की प्रक्रियाएं और प्रबंधकों पर उचित व्यवहार के मानदंड लागू करेगी ताकि ग्राहकों, जमाकर्ताओं एवं शेयरधारकों के सर्वोत्तम हितों के अनुरूप न्यायसंगत लाभप्रदता के अधिकाधिक अवसर उत्पन्न किए जा सकें। अच्छा कॉरपोरेट अभिशासन बैंकों के हितधारकों, निदेशकों एवं शीर्ष प्रबंधन के बीच के संबंधों को विनियमित करता है। कॉरपोरेट अभिशासन में निदेशक मंडल द्वारा बैंकिंग कारोबार और गतिविधियों के नियंत्रण की विधियां और निदेशक मंडल एवं शीर्ष प्रबंधन के बीच के संबंधों का स्वरुप भी शामिल होता है। कॉरपोरेट अभिशासन निदेशकों एवं प्रबंधकों द्वारा शक्तियों के दुरूपयोग और स्वार्थपूर्ति के साथ-साथ अविवेकपूर्ण एवं अत्यधिक जोखिम वाले व्यवहार को रोकता है और निदेशकों एवं शीर्ष प्रबंधन तथा जमाकर्ताओं एवं शेयरधारकों के बीच के हितों के टकराव को भी सुलझाता है।

बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन का मुद्दा जटिल भी है और जरूरी भी। बैंकिंग उद्योग के दृष्टिकोण से, कॉरपोरेट अभिशासन दिशानिर्देश निदेशक मंडल और शीर्ष प्रबंधन को बैंक का कारोबार चलाने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। ये दिशानिर्देश मुख्य रूप से बैंकों द्वारा कॉरपोरेट लक्ष्यों के निर्धारण की प्रक्रिया, रोजाना की बैंकिंग गतिविधियों, और हितधारकों के हितों की सुरक्षा से जुड़े होते हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि कॉरपोरेट गतिविधियां आमजन की आशाओं के अनुरूप हों और बैंक नीतिपूर्ण एवं विधिपूर्ण तरीके से काम करते हुए अपने ग्राहकों के हितों की रक्षा करें। अभिशासन से जुड़े ये सभी पहलू अन्य कंपनियों पर भी लागू होते हैं, परंतु ये बैंकों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि बैंक लोक निधियों के संरक्षक हैं।

बैंकों की कॉरपोरेट अभिशासन नीति में मुख्य रूप से 'निष्पक्षता, पारदर्शिता, जिम्मेदारी और जवाबदेही' पर जोर दिया जाना चाहिए, जिससे शेयरधारकों के लिए मूल्य बढ़ेगा और सभी हितधारकों के हितों की रक्षा होगी। बैंकों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप ग्राहकों, शेयरधारकों एवं अन्य हितधारकों के हितों की रक्षा करते हुए शेयरधारक मूल्य में दीर्घावधि निरंतर वृद्धि का लक्ष्य रखना चाहिए। बैंक अपनी विधिक एवं नैतिक जिम्मेदारियों को पूरा

करने वाली नीतियों एवं प्रक्रियाओं को अपनाकर, विवेकपूर्ण कारोबारी योजनाएं बनाकर, कॉरपोरेट रणनीतियों एवं गतिविधियों की नियमित निगरानी करके और कारोबार के मुख्य जोखिमों की पहचान एवं शमन करके कॉरपोरेट अभिशासन के उद्देश्यों को निश्चित रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन के उद्देश्य

कॉरपोरेट अभिशासन भारतीय रिज़र्व बैंक, सेबी जैसे नियामकों के दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हुए यह सुनिश्चित करता है कि बैंक विधिक और नैतिक सीमाओं के भीतर काम करें। बेसल III मानदंडों और एएमएल कानूनों का अनुपालन वित्तीय अनुशासन बनाए रखने में मदद करता है और बैंकों के लिए पेनल्टी, धोखाधड़ी और प्रतिष्ठा से जुड़े नुकसान के जोखिम को कम करता है। कॉरपोरेट अभिशासन अग्रसक्रिय दृष्टिकोण के साथ बैंकों के जोखिम प्रबंधन को मजबूत करता है और अनर्जक आस्तियों, साइबर सुरक्षा खतरों और ऋण जोखिमों का शीघ्र पता लगाने एवं उन पर नियंत्रण रखने में सहायता करता है। इससे वित्तीय स्थिरता बढ़ती है और विफलताओं को रोका जा सकता है। कॉरपोरेट अभिशासन निदेशकों की जवाबदेही सुनिश्चित करता है। निदेशक मंडल के सदस्यों को नैतिक निर्णय लेने, जोखिम मूल्यांकन और वित्तीय प्रदर्शन के लिए जिम्मेदार बनाने से अभिशासन व्यवस्था मजबूत होती है। कॉरपोरेट अभिशासन में निदेशक मंडल के सदस्य अनुपालन की सक्रिय निगरानी करते हैं, कार्यकारी नीतियों का निरीक्षण करते हैं और नैतिक ढांचों को लागू करते हैं। कॉरपोरेट अभिशासन बैंक में पारदर्शिता भी बढ़ाता है। पारदर्शी रिपोर्टिंग हितधारकों को सूचित निर्णय लेने में मदद करती है और जोखिमों को कम करती है। हितधारकों और निवेशकों के समक्ष वित्तीय रिपोर्ट, अभिशासन संबंधी नीतियों और अनुपालन उपायों का प्रकटीकरण करने से बैंक पर उनका विश्वास बढ़ता है। कॉरपोरेट अभिशासन वित्तीय कुप्रबंधन, अनैतिक ऋण प्रथाओं और धोखाधड़ी को रोककर सार्वजनिक विश्वास बनाए रखते हुए ग्राहकों एवं निवेशकों के हितों की सुरक्षा भी करता है।

बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन की आवश्यकता

भारतीय बैंकों को निवेश, निधियों, बाजार और लाभप्रदता के लिए भारत के अंदर और बाहर निरंतर बढ़ती प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए, बैंकों के लिए यह जरूरी है कि वे अपने उत्पादों और सेवाओं को ग्राहकों की बदलती आवश्यकताओं, अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं के अनुसार लगातार रीइंजीनियर करते रहें। बैंकों को लेनदेन प्रोसेसिंग की गति भी बढ़ानी होगी। यह भी आवश्यक है कि बैंक अपने कर्मचारियों का नियमित मूल्यांकन करें और उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करें। कर्मचारियों के ज्ञान स्तर को नियमित रूप से अद्यतन करना और उनके दृष्टिकोण को पेशेवर एवं प्रतिस्पर्धी बनाना भी बहुत महत्वपूर्ण है। अच्छे कॉरपोरेट अभिशासन वाला बैंक निवेशकों को भी निवेश पर बेहतर प्रतिफल देता है, इसलिए ऐसे बैंक में निवेशक भी रूचि लेते हैं। जिन बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन प्रथाएं वैश्विक मानकों के अनुरूप होती हैं, उनके प्रति निवेशकों, कर्मचारियों, ग्राहकों सहित सभी हितधारकों का आकर्षण हमेशा बना रहता है।

बेसल कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार, बैंकों को कॉरपोरेट अभिशासन नियमों का समुचित पालन करते हुए अपनी वित्तीय विवरणियों और बैलेंस शीट में वित्तीय प्रदर्शन के अंतर्गत कॉरपोरेट अभिशासन प्रथाओं का अनुकरणीय उदाहरण दर्शाना होगा। बैंकों की वार्षिक रिपोर्ट में निधियों एवं निवेश, परिचालन लाभ, आस्तियों पर प्रतिफल, प्रति कर्मचारी व्यवसाय, अनर्जक आस्तियों, ऋण-अग्रिम एवं जमाराशियों की परिपक्वता प्रोफाइल से जुड़े लेखांकन अनुपातों का स्पष्ट एवं विस्तृत प्रकटीकरण किया जाना चाहिए। अच्छा कॉरपोरेट अभिशासन सुनिश्चित करने के लिए कॉरपोरेट परिचालन के विभिन्न पहलुओं के पर्यवेक्षण के महत्व को सही से समझना और लागू करना आवश्यक होता है। समुचित नियंत्रण और संतुलन सुनिश्चित करने के लिए बैंक की संगठनात्मक संरचना में निदेशक मंडल या पर्यवेक्षी बोर्ड द्वारा पर्यवेक्षण; कारोबार के विभिन्न क्षेत्रों के दैनिक कामकाज से असंबद्ध लोगों द्वारा पर्यवेक्षण; कारोबार के विभिन्न क्षेत्रों का प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण; और जोखिम प्रबंधन एवं लेखापरीक्षा कार्यों का स्वतंत्र पर्यवेक्षण अवश्य शामिल होने चाहिए। साथ ही, यह भी अत्यावश्यक है कि प्रमुख कर्मचारी अपने कार्य के लिए योग्य एवं उपयुक्त हों।

बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन के प्रमुख तत्व

क) **निदेशक मंडल की संरचना और स्वतंत्रता:** एक सुव्यवस्थित निदेशक मंडल रणनीतिक निर्णय, अनुपालन निगरानी और जोखिम प्रबंधन सुनिश्चित करता है। हितों के टकराव को रोकने के लिए बैंकों में कार्यकारी और

स्वतंत्र निदेशकों का मिश्रण होना चाहिए। अभिशासन को मजबूत करने के लिए बैंकों में चेयरमैन और सीईओ की भूमिका को अलग किया जाना चाहिए। निदेशक मंडल में वित्त, विधि, जोखिम प्रबंधन और प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता वाले सदस्य शामिल होने चाहिए।

ख) **जोखिम प्रबंधन और अनुपालन:** बैंकों को ऋण जोखिम, परिचालन जोखिम, साइबर खतरे और नियामक जोखिमों का सामना करना पड़ता है। एक मजबूत जोखिम प्रबंधन संस्कृति बेसल III मानदंडों, एएमएल कानूनों और केवाईसी (अपने ग्राहक को जानें) विनियमों आदि का अनुपालन सुनिश्चित करती है। वित्तीय जोखिमों की सक्रिय रूप से पहचान करने और उनका समाधान करने के लिए उद्यम-वार जोखिम प्रबंधन (ईआरएम) ढांचे और धोखाधड़ियों एवं प्रशासनिक खामियों का पता लगाने के लिए मजबूत आंतरिक लेखा परीक्षा प्रणाली का कार्यान्वयन किया जाता है।

ग) **नैतिक आचरण और पारदर्शिता:** बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन के लिए वित्तीय घोटालों को रोकने के लिए उच्च स्तर के नैतिक आचरण की आवश्यकता होती है। व्हिसल ब्लोअर नीतियां, पारदर्शी वित्तीय प्रकटीकरण, कर्मचारी आचार संहिता आदि इस हेतु मौजूद प्रमुख अभिशासन तंत्रों में शामिल हैं।

घ) **ग्राहक और शेयरधारक संरक्षण:** कॉरपोरेट अभिशासन सुनिश्चित करता है कि बैंक ग्राहक के अधिकारों और शेयरधारकों के हितों को प्राथमिकता दें, ऋण चूक एवं एनपीए को रोकने हेतु उचित ऋण प्रथाएं अपनाएं, ग्राहकों की शिकायतों के ससमय और कुशलतापूर्वक निपटान हेतु मजबूत शिकायत निवारण तंत्र स्थापित करें, बेहतर प्रकटीकरण और न्यायसंगत निर्णय प्रक्रिया के माध्यम से अल्पसंख्यक शेयरधारकों की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

ङ) **डिजिटल परिवर्तन और साइबर सुरक्षा अभिशासन:** डिजिटल बैंकिंग, फिनटेक साझेदारी और एआई-संचालित वित्तीय सेवाओं के तेजी से विकास के साथ, भारतीय बैंकों को कॉरपोरेट अभिशासन प्रथाओं को अपनाते हुए डेटा उल्लंघन और वित्तीय धोखाधड़ी को रोकने के लिए साइबर सुरक्षा अभिशासन को मजबूत करना होगा, एआई-आधारित धोखाधड़ी का पता लगाने और विनियामक अनुपालन के लिए स्वचालन को लागू करना होगा, निजी डेटा संरक्षण विधेयक के अनुरूप सख्त डेटा गोपनीयता नीतियां बनानी होंगी।

भारतीय बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन की हालिया प्रवृत्तियां

क) **ईएसजी और सतत् बैंकिंग का उदय:** बैंक अपनी कॉरपोरेट नीतियों में पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासनिक (ईएसजी) कारकों को शामिल कर रहे हैं और हरित एवं नैतिक वित्तपोषण पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। स्थिरता-आधारित ऋण और कार्बन-तटस्थ बैंकिंग पहल लोकप्रिय हो रही हैं।

ख) **एआई-संचालित जोखिम एवं अनुपालन प्रबंधन:** बैंक अभिशासन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से धोखाधड़ी का पता लगाने, केवाईसी सत्यापन और पूर्वानुमानित जोखिम आकलन के लिए एआई और बिग डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर रहे हैं। एआई-संचालित स्वचालन नियामक रिपोर्टिंग और वास्तविक समय अनुपालन निगरानी को भी बेहतर बना रहा है।

ग) **आरबीआई के दिशानिर्देश:** आरबीआई ने नियामक निगरानी को बढ़ाने और प्रशासनिक विफलताओं को रोकने के उद्देश्य से कॉरपोरेट अभिशासन मानदंडों को सुदृढ़ एवं सख्त बनाते हुए जोखिम ढांचों में सुधार किया है और बैंकों के लिए मुख्य अनुपालन अधिकारी (सीसीओ) रखना अनिवार्य कर दिया है।

घ) **डिजिटल-प्रथम अभिशासन मॉडल:** फिनटेक, डिजिटल बैंकिंग, ओमनी-चैनल बैंकिंग और ओपन बैंकिंग ढांचे की ओर बढ़ते बदलाव से साइबर सुरक्षा, डेटा संरक्षण और

ग्राहक-केंद्रित नवाचारों पर ध्यान केंद्रित करते अभिशासन मॉडल सामने आ रहे हैं।

भारतीय बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन को मजबूत करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाएं

क) **अनुपालन की संस्कृति को बढ़ावा दें:** कर्मचारियों के लिए नियमित प्रशिक्षण, नेतृत्व कार्यक्रम और मजबूत व्हिसल ब्लोअर सुरक्षा तंत्र शासन संस्कृति को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। निरंतर ज्ञानार्जन और जवाबदेही नैतिक बैंकिंग संचालन को मजबूत बनाते हैं।

ख) **ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन) मानकों को अपनाएं:** भारतीय बैंकों को अपने अभिशासन मॉडल में स्थिरता, नैतिक ऋण प्रथाओं और हरित बैंकिंग पहलों को एकीकृत करना चाहिए। ईएसजी सिद्धांतों को अपनाने से हितधारकों का विश्वास बढ़ाने और दीर्घकालिक विकास करने में मदद मिलती है।

ग) **निदेशक मंडल की निगरानी को मजबूत बनाएं:** सुनिश्चित करें कि बैंक के निदेशक मंडल में वित्तीय, कानूनी और जोखिम प्रबंधन विशेषज्ञता वाले स्वतंत्र निदेशक हों। सुव्यवस्थित निदेशक मंडल निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है और हितों के टकराव को कम करता है।

घ) **नैतिक नेतृत्व और जवाबदेही को प्रोत्साहित करें:** कॉरपोरेट अभिशासन की विफलताओं, ऋण चूक और धोखाधड़ी की घटनाओं के लिए वरिष्ठ प्रबंधन को जवाबदेह बनाया जाना चाहिए। नेतृत्व की अखंडता जिम्मेदार बैंकिंग प्रथाओं और दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करती है।

ङ) **जोखिम और अनुपालन कार्यों को बेहतर बनाएं:** वास्तविक समय जोखिम निगरानी, धोखाधड़ी का पता लगाने वाली एआई प्रणाली, और सख्त एएमएल अनुपालन ढांचे को लागू करें। एक सक्रिय जोखिम संस्कृति नियामक उल्लंघनों और वित्तीय कदाचार को रोकने में मदद करती है।

च) **पारदर्शिता और प्रकटीकरण में सुधार करें:** निवेशकों और जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए वित्तीय रिपोर्ट, अभिशासन नीतियां और जोखिम आकलन आदि को नियमित रूप से प्रकाशित करें। स्पष्ट और ससमय प्रकटीकरण विश्वसनीयता और नियामक अनुपालन को बढ़ाता है।

छ) **मजबूत साइबर सुरक्षा उपाय लागू करें:** डिजिटल लेनदेन को सुरक्षित करने के लिए बैंकिंग साइबर सुरक्षा ढांचे, धोखाधड़ी रोकथाम, एआई और डेटा गोपनीयता नियम विकसित करें। ग्राहक डेटा और वित्तीय आस्तियों की सुरक्षा के लिए साइबर संरचना को लचीली और मजबूत बनाएं।

भारत में बैंकों द्वारा कॉरपोरेट अभिशासन के लिए उठाए गए कुछ उल्लेखनीय कदम इस प्रकार हैं:

क) नागरिक चार्टर को लागू करना।

ख) 'अपने ग्राहक को जानो' अवधारणा को लागू करना।

ग) भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बताए गए विवेकपूर्ण मानदंडों को लागू करना।

घ) निदेशक मंडल में गैर-कार्यपालक सदस्यों को शामिल करना।

ङ) अभिशासन का मुख्य उत्तरदायित्व बैंक के निदेशक मंडल और शीर्ष प्रबंधन द्वारा पूरा करना।

च) प्रबंधन समिति, लेखापरीक्षा समिति, निवेशक शिकायत समिति आदि विभिन्न समितियों का गठन करना।

निष्कर्ष

आज के अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में, जो संगठन कॉरपोरेट अभिशासन की सर्वोत्तम प्रथाएं अपनाएंगे, वही निरंतर वृद्धि करते हुए कारोबार में टिक पाएंगे। कानून और नियम बैंकिंग को कुछ हद तक नियंत्रित और विनियमित कर सकते हैं परंतु नैतिक बैंकिंग की जिम्मेदारी पूर्णतया बैंकों की ही है। ऐसी दशा में, बैंकों के लिए विनियमन मुक्त माहौल और अधिक कार्यात्मक स्वायत्तता आवश्यक है। हालांकि, ऐसी स्वायत्तता के साथ बैंकों के निदेशक मंडल का अन्य हितधारकों के प्रति अधिक जवाबदेह होना भी आवश्यक है। कॉरपोरेट अभिशासन नीति इस दोहरे लक्ष्य को पाने में बैंकों की सहायता करती है।

भारतीय बैंकों में कॉरपोरेट अभिशासन अब केवल अनुपालन की आवश्यकता नहीं रह गया है-यह वित्तीय स्थिरता, ग्राहक विश्वास और दीर्घकालिक सफलता के लिए एक रणनीतिक आवश्यकता है। जैसे-जैसे भारतीय बैंकिंग क्षेत्र डिजिटल परिवर्तन को अपना रहा है, जोखिम प्रबंधन को मजबूत कर रहा है और वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को अपना रहा है, कॉरपोरेट अभिशासन दीर्घकालिक वृद्धि और लचीलेपन के सर्वप्रमुख चालक के रूप में विकसित होता रहेगा।

कॉरपोरेट अभिशासन पारदर्शिता, जवाबदेही, जोखिम प्रबंधन और नैतिक निर्णय लेने को सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में, कॉरपोरेट अभिशासन वित्तीय स्थिरता बनाए रखने, हितधारकों के हितों की रक्षा करने और सतत् विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नियामक परिदृश्य, तकनीकी प्रगति और ग्राहकों की बदलती अपेक्षाओं को देखते हुए भारतीय बैंकों को धोखाधड़ी रोकने, अनुपालन बढ़ाने और दीर्घकालिक विश्वास बनाने के लिए अभिशासन संरचनाओं को मजबूत करना ही होगा।

"मैं कुछ लिखना चाहता हूं ...."

चिरंजीव चक्रवर्ती
वरिष्ठ प्रबंधक, मंडल कार्यालय
24 परगना, कोलकाता

मैं कुछ लिखना चाहता हूं !
पर क्या लिखूं यह समझ नहीं पाता हूं,
लेकिन फिर भी, मैं कुछ लिखना चाहता हूं,
सारा दिन ऑफिस में सिर्फ कंप्यूटर चलाता हूं,
घर आने पर फोन में इंस्टाग्राम से चिपक जाता हूं,
खाली वक्त होता नहीं, जो होता भी है तो रील बनाता हूं,
इतना आधुनिक होकर भी सुकून नहीं पाता हूं,
उस सुकून की तलाश के लिए ही......

मैं कुछ लिखना चाहता हूं ......।
हूं बड़ा व्यावहारिक मुंह खूब चलाता हूं,
काम निकालने के लिए खूब बड़े बोल भी बोल जाता हूं,
सब करके भी, फिर क्यों उलझा सा रह जाता हूं,
खुद को खुद से मिलवाने के लिए भी.......

मैं कुछ लिखना चाहता हूं ....।
रोते-हंसते कट जाएगा जीवन भी,
बड़े तो हो ही चुके हैं, एक दिन हो जायेंगे बूढ़े भी,
बंद मुट्ठी से रेत की तरह, आज भी निकल जाएगा,
लेकिन उसके पहले अपनी ही लेखनी में अमर हो जाना चाहता हूं,
जीवन के अनमोल अनुभवों को औरों की दृष्टि में अंकित कर देना चाहता हूं,

इसलिए मैं कुछ लिखना चाहता हूं ......।
अच्छी लगी हो यह कविता तो, कर दीजिएगा लाइक, शेयर और सबस्क्राईब
क्योंकि आपके स्नेह से ही तो मिलती है मुझे पोजिटिव वाइब्स,
इसी तरह आपके प्रेम का अभिलाषी बने रहना चाहता हूं .... और,
यूं ही मैं कुछ लिखना चाहता हूं ......।

पीएनबी ने किया रिटेल मेगा आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन

पंजाब नैशलन बैंक ने 14 नवंबर 2025 को पूरे देश में 138 स्थानों पर रिटेल मेगा आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया। यह समन्वित राष्ट्रीय स्तर का प्रयास बैंक के रिटेल कारोबार को मजबूत करने, आमजन तक बैंक की पहुंच बढ़ाने और ग्राहकों और चैनल पार्टनर्स के साथ जोड़ने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस पहल की मुख्य विशेषता बैंक के उच्च प्रबंधन की जमीनी स्तर पर सक्रिय भागीदारी थी। श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशकगण, श्री एम. परमशिवम्, श्री बी. पी. महापात्र, श्री डी. सुरेन्द्रन और मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण एवं अन्य उच्चाधिकारीयों ने देश के विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में सहभागिता की और स्टाफ सदस्यों में उत्साह का संचार किया। उच्च प्रबंधन की उपस्थिति ने उक्त कार्यक्रम को रणनीतिक दिशा दी तथा फील्ड स्टाफ को प्रेरित किया और ग्राहकों और पार्टनर्स के साथ सीधे जुड़ाव में मदद की। लीडरशिप के इंटरैक्शन से एक समान मैसेजिंग, बेहतर विजिबिलिटी और बैंक की रिटेल बिजनेस प्राथमिकताओं के साथ तालमेल सुनिश्चित हुआ।

पीएनबी ने किया मेगा एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन

पंजाब नैशलन बैंक ने देश भर में 175 स्थानों पर एक साथ 24 नवंबर 2025 को मेगा एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस आयोजन का उद्देश्य समन्वित, बड़े पैमाने की पहलों, एमएसएमई पोर्टफोलियो को मजबूत करना, बैंक की क्षेत्रीय पहुंच को बढ़ाना, ग्राहक और चैनल पार्टनर्स के साथ जुड़ाव को मजबूत करना था।

इस आयोजन की विशेषता यह रही कि इसमें बैंक के उच्च नेतृत्व ने बहुत ही सक्रियता से जमीनी स्तर अपनी सहभागिता की। इन कार्यक्रमों में कार्यपालक निदेशकगण, वरिष्ठ उच्चाधिकारीगण भी शामिल हुये, जिन्होंने कई स्थानों पर कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। उच्च प्रबंधन की उपस्थिति ने कार्यनैतिक मार्गदर्शन करते हुए फील्ड टीमों में नए उत्साह का संचार किया। साथ ही ग्राहकों तथा हितधारकों के बीच सीधी बातचीत को संभव और सरल बनाया।

कॉरपोरेट गवर्नेंस के मूलभूत सिद्धांत

इन्द्रजीत सातौरिया
मुख्य संकाय
कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र, जयपुर

आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तेजी से बदलते व्यावसायिक वातावरण में कॉरपोरेट गवर्नेंस किसी भी संस्था की विश्वसनीयता, स्थिरता और दीर्घकालिक सफलता का आधार बन चुका है। कॉरपोरेट गवर्नेंस केवल एक नियमों का सेट नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा ढांचा है जो संस्था के संचालन, निर्णय-निर्धारण, और सभी हितधारकों के साथ संबंधों को नैतिक, पारदर्शी और उत्तरदायी बनाता है। भारत में SEBI, MCA, RBI और विभिन्न नियामक संस्थाओं द्वारा निर्धारित दिशानिर्देश कॉरपोरेट गवर्नेंस को एक उच्च मानक प्रदान करते हैं, ताकि कंपनियां न केवल लाभ कमाएं बल्कि समाज, निवेशकों, कर्मचारियों, ग्राहकों और संपूर्ण अर्थव्यवस्था के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी निभाएं।

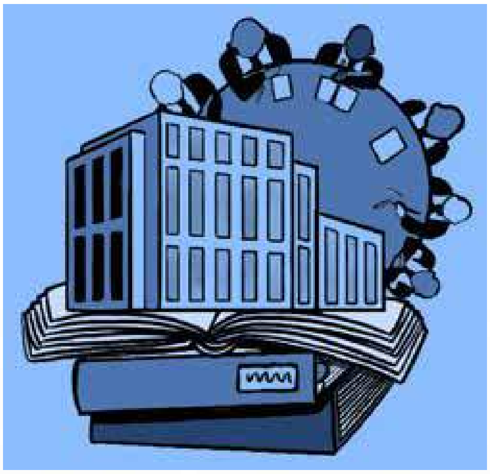

कॉरपोरेट गवर्नेंस के चार मूलभूत स्तंभ-पारदर्शिता (Transparency), जवाबदेही (Accountability), निष्पक्षता (Fairness) और उत्तरदायित्व (Responsibility)-किसी भी संगठन के अंदर स्वस्थ, टिकाऊ और नैतिक कार्यसंस्कृति को जन्म देते हैं। इन सिद्धांतों का महत्व समय के साथ और बढ़ गया है, विशेषकर तब जब वैश्विक स्तर पर कई कॉरपोरेट घोटालों ने संस्थाओं के प्रति विश्वास को चुनौती दी। ऐसे समय में ये चार सिद्धांत किसी भी प्रतिष्ठित कंपनी के लिए दिशा-निर्देशक की तरह काम करते हैं।

1. पारदर्शिता (Transparency)

पारदर्शिता का अर्थ है-सूचनाओं का स्पष्ट, ईमानदार और समय पर प्रकटीकरण। जब एक संस्था अपने वित्तीय परिणामों, नीतियों, जोखिमों, निर्णयों और संचालन प्रक्रियाओं को बिना किसी छिपाव के सामने रखती है, तब वह निवेशकों, ग्राहकों और कर्मचारियों के बीच विश्वसनीयता स्थापित करती है।

पारदर्शिता के मुख्य पक्ष

- वित्तीय विवरणों का सटीक और स्पष्ट खुलासा।
- प्रबंधन के महत्वपूर्ण निर्णयों की जानकारी।
- जोखिमों और चुनौतियों का वास्तविक प्रतिबिंब।
- आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था का सही प्रस्तुतिकरण

पारदर्शिता से कंपनी की छवि मजबूत होती है और निवेशकों का भरोसा बढ़ता है। बैंकिंग क्षेत्र में तो यह सिद्धांत और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि ग्राहकों का पैसा और उनका विश्वास ही बैंक की सबसे बड़ी पूंजी होता है। पारदर्शिता की कमी अक्सर घोटालों, धोखाधड़ी और वित्तीय अनियमितताओं को जन्म देती है, जिसके परिणाम पूरे तंत्र को झेलने पड़ते हैं।

2. जवाबदेही (Accountability)

जवाबदेही का सिद्धांत इस बात को सुनिश्चित करता है कि संगठन के प्रत्येक स्तर पर, विशेष रूप से उच्च प्रबंधन और निदेशक मंडल, अपने निर्णयों और कार्यों के प्रति उत्तरदायी हों। एक उत्तरदायी नेतृत्व न केवल अच्छे निर्णय लेता है, बल्कि उन निर्णयों के सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों को भी स्वीकार करता है।

जवाबदेही सुनिश्चित करने वाली व्यवस्थाएं

- निदेशक मंडल की स्पष्ट भूमिकाएं।
- आंतरिक और बाहरी लेखापरीक्षा (ऑडिट)।
- नीतियों और प्रक्रियाओं की नियमित समीक्षा।
- व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर निर्णय लेने की जवाबदेही।

जब जवाबदेही नहीं होती, तो सत्ता का केंद्रीकरण, अनियमितताएं और भ्रष्टाचार बढ़ता है। दूसरी ओर, जब नेतृत्व जवाबदेह होता है, तो संगठन में विश्वास और दक्षता का प्रवाह स्वतः बढ़ जाता है।

3. निष्पक्षता (Fairness)

निष्पक्षता का सिद्धांत सभी हितधारकों - जैसे निवेशक, कर्मचारी, ग्राहक, आपूर्तिकर्ता और समाज के साथ समान और न्यायपूर्ण व्यवहार पर आधारित है। एक निष्पक्ष संगठन में भेदभाव, पक्षपात और गलत प्राथमिकताओं के लिए कोई स्थान नहीं होता।

निष्पक्षता के महत्वपूर्ण पहलू

- सभी शेयरधारकों के साथ समान व्यवहार।
- कर्मचारियों के लिए समान अवसर और न्यायपूर्ण नीतियां।
- ग्राहकों और उपभोक्ताओं के साथ पारदर्शी व्यवहार।
- किसी भी प्रकार के हितों के टकराव (Conflict of Interest) से बचाव।

निष्पक्षता संगठन की संस्कृति का एक अनिवार्य तत्व है। यह न केवल नैतिकता को बढ़ाती है, बल्कि कर्मचारियों का मनोबल भी मजबूत करती है और ग्राहकों का विश्वास बढ़ाती है। बैंकिंग जैसी सेवा-आधारित संस्थाओं में निष्पक्षता अत्यधिक आवश्यक हो जाती है, क्योंकि सेवा की गुणवत्ता और भरोसे पर ही संस्था की प्रतिष्ठा निर्मित होती है।

4. उत्तरदायित्व (Responsibility)

उत्तरदायित्व का सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि कंपनी का अस्तित्व केवल लाभ कमाने के लिए नहीं है, बल्कि समाज, पर्यावरण, ग्राहकों, कर्मचारियों तथा राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाना भी उसका दायित्व है।

उत्तरदायित्व के प्रमुख आयाम

- नियामक निर्देशों का पालन।
- उपभोक्ता संरक्षण।
- पर्यावरणीय और सामाजिक उत्तरदायित्व।
- कर्मचारियों की सुरक्षा और कल्याण।
- जोखिम प्रबंधन के प्रभावी उपाय।

आज ESG (Environmental, Social Governance) की अवधारणा ने संस्थाओं के लिए उत्तरदायित्व का दायरा और बढ़ा दिया है। कंपनियां अब अपनी गतिविधियों के पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव के प्रति भी उत्तरदायी मानी जाती हैं। यह दृष्टिकोण संगठन को दीर्घकालिक और सतत विकास की दिशा में आगे ले जाता है।

शिक्षा

हर्षिता गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
सीबीबी, एफसी रोड, पुणे

शिक्षा से ही मिटता है अज्ञान का अंधकार।
ज्ञान से ही बढ़ते हैं समझ और तेरे विचार।।

ज्ञान से जान पता है इंसान अपने अधिकार।
अक्षर ज्ञान नही तो है जीवन पर धिक्कार।।

महिला की शिक्षा से शिक्षित होता है परिवार।
शिक्षा के महत्व को तुम नहीं सकते हो नकार।।

शिक्षा ही है सभ्य समाज के निर्माण का आधार।
शिक्षा एवं समझ से ही होता है अच्छा व्यवहार।।

शिक्षा के बल पर ही हर कोई है जग को स्वीकार।
शिक्षा से ही दिमाग को लगाई जाती है तेज धार।

शिक्षा के चलते ही जीवन में सबके आता है सुधार।
विकट परिस्थितियों में यही काम आती है हर बार।।

शिक्षा ही जीवन है और यही है जीवन का सार।
ज्ञान और शिक्षा ही लगाते हैं जीवन की नैया पार।।

शिक्षा बिन इस संसार में हर कोई होता है लाचार।
ज्ञान है तो तू हर समस्या से कर सकता है दो-चार।।

खुली आँखों से देखा गया हर सपना ज्ञान से ही है साकार।
शिक्षा के हर चमत्कार को दुनिया ने किया है नमस्कार।।

शिक्षा से ही आते हैं शिष्टाचार और संस्कार।
यही समय की मांग है और यही है समय की पुकार।।

सबको मिले ज्ञान और शिक्षा पर हो सबका अधिकार।
शिक्षा और ज्ञान का हो दुनिया में हर जगह प्रसार।।

शिक्षा और ज्ञान को मिले सम्मान और बेहद प्यार।
शिक्षा का चारो दिशाओं में हो बोल-बाला और प्रचार।।

धर्म, मजहब से ऊपर हो शिक्षा का खुला नवाचार।
शिक्षा का दान किया जाए ना बनने पाए ये व्यापार।।

शिक्षा से ऊंचा बनता है हर इंसान का किरदार।
शिक्षा से बड़ा नहीं है दुनिया का कोई भी हथियार।।

शिक्षा ही गिरा सकती है हर भेदभाव की दीवार।
कभी नहीं गिरता जो है शिक्षा के रथ पर सवार।।

प्रधान कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का भव्य आयोजन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 के अवसर पर प्रधान कार्यालय में आयोजित सतर्कता की शपथ ग्रहण कार्यक्रम के दौरान श्री बिभु प्रसाद महापात्र, कार्यपालक निदेशक, श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक, श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, मुख्य महाप्रबंधकगण, श्री सुरेश कुमार राणा, श्री संजय वार्ष्णेय, श्री राकेश ग्रोवर, श्री संजीवन निखर एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

पंजाब नैशनल बैंक ने 22 अंचल, 138 मंडल कार्यालयों सहित प्रधान कार्यालय में तीन माह के सतर्कता जागरूकता अभियान को दिनांक 18 अगस्त 2025 से लेकर 17 नवंबर 2025 तक सफलतापूर्वक आयोजित किया। इन तीन महीनों के दौरान बैंक द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध लेखन, चित्रकला प्रतियोगिता, वॉकथॉन और साइक्लोथॉन आदि का बहुत ही उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। जिसमें स्टाफ सदस्यों की भारी संख्या में भागीदारी देखी गई। इसके अतिरिक्त बैंक द्वारा देशभर के विभिन्न कार्यालयों में रक्तदान शिविरों का भी आयोजन किया गया जिसके माध्यम से 4,700 यूनिट रक्त का संग्रह, सेवा की भावना को दर्शाता है।

27 अक्टूबर को राष्ट्रव्यापी सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा के साथ शुरू हुए इस कार्यक्रम में एक लाख से अधिक कर्मचारियों और बहुतायत में ग्राहकों ने भाग लिया। बैंक ने डिजिटल और मूलभूत पहलों के माध्यम से व्यापक जनभागीदारी सुनिश्चित की। 11,000 एटीएम (ATMs), मोबाइल ऐप्स और व्हाट्सएप बैंकिंग पर सतर्कता संदेशों को प्रदर्शित करने से लेकर 8,000 से अधिक ग्राम सभाओं में जागरूकता अभियान आयोजित करने तक, पीएनबी ने सत्यनिष्ठा के संदेश को देश के कोने-कोने तक पहुंचाया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 के अवसर पर आयोजित वॉकथॉन में सहभागिता करते हुए श्री बिभु प्रसाद महापात्र, कार्यपालक निदेशक, श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक, श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

द्वारका, दिल्ली स्थित प्रधान कार्यालय में आयोजित मुख्य कार्यक्रम के अवसर पर माननीय केंद्रीय सतर्कता आयुक्त श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव ने कार्यक्रम में सहभागिता करके कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री बिभु प्रसाद महापात्र, कार्यपालक निदेशक तथा श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी सहित मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण एवं उच्चाधिकारीगण की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के दौरान, 'पीएनबी की विजिलेंस मैनुअल 2025' के 5वें संस्करण और त्रैमासिक पत्रिका 'पीएनबी विजिल' के सितंबर 2025 के अंक का अनावरण किया गया। इसके अतिरिक्त, बैंक ने कई प्रमुख पहलों का शुभारंभ किया, जिनमें कर्मचारी जवाबदेही पोर्टल का संपूर्ण डिजिटलीकरण, आचरण जोखिम ढांचा (कर्मचारियों के लिए) और पीएम स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) के लिए डिजिटल समाधान शामिल हैं। ये पहल पीएनबी की अपने परिचालन में दक्षता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

प्रधान कार्यालय, द्वारका में सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 के आयोजन के अवसर पर श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी तथा श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, स्टाफ सदस्यों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलवाते हुए। दृष्टव्य हैं कार्यपालक निदेशकगण श्री बी.पी. महापात्र तथा श्री डी. सुरेंद्रन ।

प्रधान कार्यालय, द्वारका में आयोजित रक्तदान शिविर के अवसर पर सहभागिता करते हुए श्री अशोक चंद्र एमडी एवं सीइओ, श्री डी. सुरेंद्रन, कार्यपालक निदेशक, श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सर्तकता अधिकारी एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सतर्कता योद्धाओं को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव, केंद्रीय सतर्कता आयुक्त, श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री बिभु प्रसाद महापात्र, कार्यपालक निदेशक तथा श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी।

इस कार्यक्रम में सतर्कता योद्धाओं को भी सम्मानित किया गया, यह उन कर्मचारियों के अनुकरणीय प्रयासों को सम्मानित करने के लिए किया गया जिन्होंने बैंक के नैतिक मूल्यों को बनाए रखने में असाधारण समर्पण का प्रदर्शन किया है।

श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव, माननीय केंद्रीय सतर्कता आयुक्त ने अपने उद्‌बोधन में कहा: "हमारे समाज का कल्याण, हमारी अर्थव्यवस्था का विकास और आजीविका का सृजन पंजाब नैशनल बैंक जैसे बैंकों द्वारा प्रदान किए गए समर्थन और वित्तपोषण से गहराई से जुड़ा हुआ है। हमारा लक्ष्य सतर्कता की ऐसी संस्कृति का निर्माण करना है जहां कार्य दंड के भय से नहीं, बल्कि सही काम करने की प्रतिबद्धता से प्रेरित हों। यह संस्कृति व्यक्ति, संगठन और समाज को बड़े पैमाने पर लाभान्वित करती है, जिससे बैंक, अर्थव्यवस्था और अंतत: राष्ट्र के विकास में योगदान मिलता है, क्योंकि हम 2047 तक 'विकसित भारत' की दिशा में काम कर रहे हैं।"

श्री अशोक चंद्र, एमडी एवं सीईओ, ने स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा: "जैसे-जैसे भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अपना मार्ग प्रशस्त कर रहा है हम पर, सबसे बड़े बैंकों में से एक के रूप में, जिम्मेदारी कई गुना बढ़ जाती है। हम सत्यनिष्ठा, नैतिकता, और पारदर्शिता पर आधारित गुणात्मक, सतत्, और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सतर्कता, विशेष रूप से निवारक सतर्कता (प्रिवेंटिव विजिलेंस), यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है कि प्रगति सुदृढ़ शासन और जवाबदेही के साथ जुड़ी रहे। इन मूल्यों से प्रेरित होकर, पीएनबी विश्वास और नैतिक उत्कृष्टता के माध्यम से भारत की विकास यात्रा का समर्थन करने के लिए समर्पित है।"

श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी (सीवीओ) ने अपने संबोधन में कहा: "इन डिजिटल पहलों का शुभारंभ पारदर्शिता और जिम्मेदारी की संस्कृति के निर्माण के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। अपने सतर्कता ढांचे के साथ प्रौद्योगिकी को एकीकृत करके, हम न केवल परिचालन दक्षता को बढ़ा रहे हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि विश्वसनीयता बैंक के भीतर हर प्रक्रिया की आधारशिला बनी रहे।"

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 के अवसर पर पुलिस मैमोरियल, दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक तथा स्टाफ सदस्यों को सतर्कता की शपथ दिलवाते हुए श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह की कड़ी में, अंचल कार्यालय, दिल्ली ने 01.11.2025 को "राष्ट्रीय पुलिस स्मारक" पर पुलिस शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित करने के कार्यक्रम और वॉकथॉन का आयोजन किया जिसमें श्री डी. सुरेंद्रन, कार्यपालक निदेशक, श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी (सी.वी.ओ), श्री सोमेश कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन प्रभाग), श्री प्रवीन गोयल, अंचल प्रबंधक, दिल्ली के साथ अन्य वरिष्ठ अधिकारियों, दिल्ली अंचलाधीन सभी मंडल प्रमुखों, और अन्य स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत में सभी वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की गयी। उसके उपरांत श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी (सी.वी.ओ) ने सभी स्टाफ सदस्यों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई। अपने संबोधन में श्री डी. सुरेंद्रन ने बैंक और अर्थव्यवस्था की सुरक्षा और पारदर्शिता के लिए वित्तीय और आर्थिक नियमों के प्रति ईमानदारी, अखंडता और प्रतिबद्धता के लिए कर्मचारियों के दायित्व पर जोर दिया। श्री प्रवीन गोयल, मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रबंधक, दिल्ली द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 के अवसर पर पुलिस मैमोरियल में आयोजित कार्यक्रम में स्टाफ सदस्यों के साथ श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक, राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री प्रवीन गोयल, अंचल प्रबंधक, दिल्ली, श्री सोमेश कुमार, मुख्य महाप्रबंधक एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

सतर्कता जागरूकता अभियान के तहत बैंक के प्रधान कार्यालय में साइक्लोथॉन 2025 का आयोजन किया गया जिसमें पीएनबी के कर्मचारियों के साथ-साथ आम नागरिकों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई। कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों में ईमानदारी, जिम्मेदारी और जागरूकता की भावना को मजबूत करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक तथा श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस अवसर पर श्री अशोक चंद्र, एमडी एवं सीईओ ने अपने संबोधन में कहा कि सतर्कता का अर्थ केवल नियमों का पालन करना नहीं है, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में सजगता और ईमानदारी अपनाना भी है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 के अवसर पर प्रधान कार्यालय, द्वारका, दिल्ली में आयोजित साइक्लोथॉन का ध्वज दिखाकर शुभारंभ करते हुए श्री अशोक चंद्र, एमडी एवं सीईओ, श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक तथा श्री राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी ।

ईएसजी एकीकरण - कॉरपोरेट अभिशासन का भविष्य

अजय यादव
मुख्य प्रबंधक-आईटी
अंचल कार्यालय, लुधियाना

प्रस्तावना

जैसे-जैसे जलवायु जोखिम, हितधारक अपेक्षाएं और नियामकीय दबाव एक दूसरे से जुड़ रहे हैं, ईएसजी (पर्यावरण, समाज और शासन) एकीकरण भारत के बैंकिंग क्षेत्र के लिए स्वैच्छिक सुव्यवहार के बजाय जोखिम प्रबंधन और रणनीति की मुख्य प्राथमिकता बनता जा रहा है। यदि ईएसजी-संचालित बैंकिंग को उचित रूप से क्रियान्वित किया जाए तो यह जलवायु आदि जैसे विभिन्न जोखिमों से बैलेंस शीट को सुरक्षित रखेगी, हरित वित्त के लिए नए बाजार खोलेगी और भारत के निम्न-कार्बन विकास को गति देगी परन्तु ईएसजी-संचालित बैंकिंग की सफलता के लिए बेहतर आंकड़ों, स्पष्ट वर्गीकरणों, सुदृढ़ शासन और बैंकों एवं नियामकों में व्यापक क्षमता निर्माण अनिवार्य कारक हैं।

भारतीय बैंकों के लिए ईएसजी महत्वपूर्ण क्यों है?

बैंक दीर्घकालिक ऋणदाता और निवेशक हैं। बैंकों के ऋण पोर्टफोलियो, बॉण्ड एवं निवेश तथा परियोजना वित्तपोषण पर्यावरणीय और सामाजिक परिवर्तनों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। ऊर्जा-प्रधान क्षेत्रों, कृषि और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों पर अत्यधिक निर्भरता वाली भारतीय अर्थव्यवस्था बाढ़, गर्मी, सूखा जैसे भौतिक जलवायु जोखिमों और नीतिगत बदलावों, फंसी हुई संपत्तियों जैसे संक्रमण जोखिमों दोनों ही के प्रति संवेदनशील है। जब तक इन जोखिमों की सही पहचान और मूल्यनिर्धारण नहीं किया जाता है, तब तक ये ऋणदाताओं के लिए ऋण हानि, संपार्श्विक क्षति और बाजारगत अस्थिरता का कारण बनते हैं। वर्तमान में, पूंजी बाजार और ग्राहक ईएसजी-संरेखित उत्पादों की मांग कर रहे हैं जिससे भारत में हरित बॉण्ड, सस्टेनेबिलिटी-लिंक्ड ऋण, हरित जमाराशियां और ट्रॉजिक्शन वित्तीय साधन तेजी से बढ़ रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि स्थायी वित्त क्षेत्र में निवेशकों की रुचि और बैंकों के लिए अवसर, दोनों ही तेजी से बढ़ रहे हैं।

नियामकीय दबाव और प्रकटीकरण का बदलता परिदृश्य

विनियामक संस्थाएं मार्गदर्शन से औपचारिक प्रकटीकरण अपेक्षाओं की ओर बढ़ रही हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक ने जलवायु-संबंधी वित्तीय जोखिमों पर प्रकटीकरण रूपरेखा संबंधी मसौदा दिशानिर्देश प्रकाशित किए हैं और जलवायु जोखिम मूल्यांकन एवं प्रकटीकरण पर विनियमित संस्थाओं के साथ सहयोग करने के लिए सतत् वित्त समूह के रूप में संस्थागत क्षमता स्थापित की है। यह मसौदा रूपरेखा शासन, रणनीति, जोखिम प्रबंधन, मापदंड और लक्ष्यों के इर्द-गिर्द प्रकटीकरणों को रेखांकित करती है, जो वैश्विक शैली के दृष्टिकोणों के अनुरूप हैं और भारत के लिए अनुकूलित हैं। भारतीय जलवायु वित्त वर्गीकरण पर समानांतर कार्य का उद्देश्य ग्रीनवाशिंग को कम करना और पूंजी प्रवाह को वास्तविक रूप से जलवायु-संरेखित गतिविधियों की ओर दिशा देना है जो सुसंगत ईएसजी लेबलिंग और रिपोर्टिंग के लिए महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा है। प्रतिभूति बाजार के नियामकों ने कॉरपोरेट ईएसजी रिपोर्टिंग आवश्यकताओं को भी कड़ा कर दिया है जिससे कॉरपोरेट ईएसजी सूचना की उपलब्धता बढ़ रही है और बैंक इस सूचना का उपयोग क्रेडिट मूल्यांकन के लिए कर रहे हैं। सूचीबद्ध कंपनियों के लिए सेबी की बीआरएसआर व्यवस्था ऐसा ही एक उदाहरण है।

ईएसजी एकीकरण से बैंकिंग पद्धति में आ रहे प्रमुख परिवर्तन

पर्यावरण, समाज और शासन (ईएसजी) सिद्धांतों का एकीकरण भारतीय बैंकिंग क्षेत्र को नया आकार दे रहा है।

अब इसे केवल अनुपालन प्रक्रिया या कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधि के रूप में नहीं देखा जाता है बल्कि यह रणनीतिक निर्णय, ऋण मूल्यांकन और दीर्घकालिक जोखिम प्रबंधन का केंद्र बिंदु बनता जा रहा है।

- **रणनीतिक पुनर्गठन और प्रशासन:** बोर्ड एवं शीर्ष प्रबंधन के लिए स्थिरता को व्यावसायिक योजना के मूल में रखना आवश्यक हो रहा है। ईएसजी लक्ष्यों के अनुरूप जोखिम, अनुपालन और रणनीतिक निवेशों की निगरानी के लिए बैंकों में समर्पित ईएसजी समितियां स्थापित की जा रही हैं।
- **जोखिम मूल्यांकन और ऋण निर्णय:** पारंपरिक ऋण मूल्यांकन अब बहुआयामी मूल्यांकनों में बदल रहे हैं जो जलवायु जोखिमों, कार्बन फुटप्रिंट, श्रम प्रथाओं और शासन मानकों आदि पर समुचित विचार करते हैं। कार्बन-प्रधान उद्योगों की परियोजनाओं को अधिक समुचित सावधानी और विभेदित मूल्य निर्धारण का सामना करना पड़ता है जिससे उनमें निहित संभावित दीर्घकालिक जोखिम सामने स्पष्ट होता है।
- **वित्तीय उत्पाद और नवाचार:** ईएसजी एकीकरण ग्रीन बॉण्ड, सोशल बॉण्ड, सस्टेनेबिलिटी-लिंक्ड ऋण और ग्रीन डिपॉजिट जैसे नए वित्तीय उपकरणों के प्रसार को बढ़ावा दे रहा है। इलेक्ट्रिक वाहन ऋण और ऊर्जा-कुशल गृह ऋण जैसी खुदरा पेशकशें भी उभर रही हैं।
- **जोखिम मॉडलिंग और स्ट्रेस (तनाव) परीक्षण:** बैंक अपने तनाव परीक्षण फ्रेमवर्क में अब जलवायु जोखिम परिदृश्यों को भी शामिल कर रहे हैं। इसमें मौसम संबंधी चरम घटनाओं, कार्बन कराधान, या नियामकीय सख्ती के कारण आस्ति गुणवत्ता और क्षेत्रगत जोखिम पर पड़ने वाले प्रभाव की मॉडलिंग शामिल है।
- **आंतरिक क्षमता निर्माण:** ईएसजी को अपनाने की दिशा में बैंक प्रशिक्षण, ईएसजी-समर्पित टीमों और पर्यावरण एवं सामाजिक प्रदर्शन संकेतकों की निगरानी के लिए उन्नत डेटा विश्लेषण में निवेश कर रहे हैं।

समग्र रूप से हम कह सकते हैं कि ईएसजी एकीकरण बैंकिंग क्षेत्र में अल्पकालिक लाभप्रदता से स्थायी मूल्य सृजन तक हुए आदर्श बदलाव का उचित प्रतिनिधित्व करता है।

भारतीय बैंकों के लिए अवसर

ईएसजी एकीकरण भारतीय बैंकों को महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है कि वे भारत की स्थायी होती अर्थव्यवस्था में उपयोगी सहायक के रूप में स्वयं को स्थापित करें। इससे बैंकों के लिए निम्न अवसर भी उत्पन्न होते हैं:

- **वृद्धि के नए मार्ग:** सतत् वित्त की बढ़ती मांग हरित बॉण्ड, नवीकरणीय ऊर्जा वित्तपोषण और स्थिरता-संबंधी ऋण सुविधाओं के लिए नए रास्ते खोल रही है। ऐसा विविधीकरण राजस्व के स्रोतों को बढ़ाने के साथ-साथ जिम्मेदारी भरे विकास को भी बढ़ावा देता है।
- **जोखिम न्यूनीकरण और लचीलापन:** ईएसजी जोखिमों की शीघ्र पहचान करके बैंक कमजोर क्षेत्रों में जोखिम लेने से बच सकते हैं, डिफॉल्ट के जोखिम को कम कर सकते हैं, और फंसी हुई आस्तियों के विरुद्ध सुरक्षित रह सकते हैं।
- **प्रतिस्पर्धी विभेदीकरण:** तेजी से विकसित हो रहे बाजार में, ईएसजी ब्रांड की प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, निवेशकों के विश्वास को मजबूत करता है और स्थिरता के प्रति जागरूक हितधारकों के बीच वफादारी का निर्माण करता है।
- **वैश्विक पूंजी पहुंच:** विश्वसनीय ईएसजी संरेखण प्रदर्शित करने वाले बैंक वैश्विक ईएसजी निधियों, विकास वित्त संस्थानों और बहुपक्षीय एजेंसियों से रियायती वित्तपोषण का लाभ उठाने की बेहतर स्थिति में होते हैं। इससे उनकी पूंजी लागत में सुधार होता है।
- **राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ संरेखण:** नवीकरणीय ऊर्जा, विद्युत गतिशीलता, हरित बुनियादी ढांचे और समावेशी विकास का सक्रियता से वित्तपोषण करने वाले भारतीय बैंक पेरिस समझौते और नेट जीरो 2070 लक्ष्यों के तहत भारत की प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में प्रत्यक्ष योगदान करते हैं जिससे अर्थव्यवस्था के लिए उनका रणनीतिक महत्व मजबूत होता है।

ये अवसर न केवल भारतीय बैंकों को वाणिज्यिक लाभ प्रदान करते हैं, बल्कि राष्ट्र के सतत् विकास एजेंडे को गति प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ईएसजी एकीकरण के समक्ष प्रमुख चुनौतियां

अनगिनत अवसरों के बावजूद, भारतीय बैंकिंग में ईएसजी एकीकरण जटिलताओं और संरचनात्मक बाधाओं से भरा हुआ है। इनमें से कुछ प्रमुख बाधाएं एवं चुनौतियां इस प्रकार हैं:

- **क्षमता एवं संसाधनों की कमी:** जहां बड़े निजी एवं सार्वजनिक बैंक ईएसजी फ्रेमवर्क में निवेश कर रहे हैं, छोटे क्षेत्रीय और सहकारी बैंकों में ईएसजी एकीकरण को संचालित करने के लिए तकनीकी विशेषज्ञता, मानव संसाधन और वित्तीय क्षमता की कमी है।
- **बदलता विनियामक परिदृश्य:** हालांकि भारतीय रिज़र्व बैंक एवं भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड ने ईएसजी संबंधी दिशानिर्देश जारी किए हैं परंतु वैश्विक मानक निरंतर बदल रहे हैं। इससे अनुपालन संबंधी अनिश्चितता पैदा होती है और निरंतर पुनर्संयोजन आवश्यक हो जाता है।
- **मानकीकृत वर्गीकरणों का अभाव:** भारत में हरित वित्त वर्गीकरण अभी भी विकसित होने की प्रक्रिया में है। जब तक एक स्पष्ट नियामक फ्रेमवर्क तैयार नहीं हो जाता, बैंकों के लिए असंगत प्रथाओं और 'ग्रीनवाशिंग' के संभावित आरोपों का जोखिम बना रहेगा।
- **डेटा की उपलब्धता और गुणवत्ता:** उधारकर्ताओं, विशेष रूप से छोटे और मध्यम उद्यमों, से ईएसजी-संबंधी विश्वसनीय प्रकटीकरण दुर्लभ बने हुए हैं। मानकीकृत मानकों के बिना बैंकों को ईएसजी जोखिमों का मूल्यांकन और बेंचमार्किंग करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- **संक्रमण और सामाजिक जोखिम:** निम्न-कार्बन अर्थव्यवस्था के परिणामस्वरूप विशेष रूप से ऊर्जा-प्रधान उद्योगों को फंसी आस्तियों और आर्थिक अव्यवस्थाओं का सामना करना पड़ सकता है। बैंकों की अनर्जक आस्तियां बढ़ सकती हैं। साथ ही, प्रभावित क्षेत्रों में रोजगार की हानि के सामाजिक कुप्रभाव भी हो सकते हैं।

ये चुनौतियां सुदृढ़ ईएसजी अवसंरचना स्थापित करने और संक्रमण प्रक्रिया में संघर्ष से बचने के लिए नियामकों, बैंकों और उधारकर्ताओं के बीच प्रणालीगत सहयोग की आवश्यकता को उजागर करती हैं।

ईएसजी – व्यावहारिक परिचालनात्मक रोडमैप

ईएसजी एकीकरण के सफल क्रियान्वयन के लिए भारतीय बैंकों को एक चरणबद्ध व्यावहारिक परिचालनात्मक रोडमैप की आवश्यकता है जिसे निम्नानुसार वर्णित किया जा सकता है।

शासन और नेतृत्व

- बैंक बोर्ड स्तर पर ईएसजी निरीक्षण समितियां स्थापित करें और ईएसजी लक्ष्यों को कार्यकारी केपीआई और कार्यनिष्पादन बोनस से जोड़ें। साथ ही, बैंक टीसीएफडी, आईएसएसबी जैसे वैश्विक फ्रेमवर्क के साथ संरेखित वार्षिक स्थिरता और जलवायु जोखिम प्रकटीकरण प्रकाशित करें।

जोखिम प्रबंधन और नीति ढांचे

- बैंक क्रेडिट मूल्यांकन और पोर्टफोलियो निगरानी में एकीकृत ईएसजी जोखिम ढांचा विकसित करें और जलवायु तनाव परीक्षण एवं परिदृश्य विश्लेषण को भी इसमें शामिल करें। साथ ही, बैंक क्षेत्रवार बहिष्करण सूचियां (जैसे, कोयला खनन, असंवहनीय वानिकी) और संक्रमण वित्तपोषण दिशानिर्देश लागू करें।

डेटा और प्रौद्योगिकी सक्षमता

- बैंक ईएसजी डेटा संग्रह प्लेटफार्मों और ऋणी प्रकटीकरण प्रणालियों में समुचित निवेश करें और ईएसजी स्कोरिंग मॉडल के लिए फिनटेक एवं रेटिंग एजेंसियों के साथ सहयोग करें। साथ ही, बैंक उत्सर्जन डेटा, जलवायु जोखिम और सामाजिक मैट्रिक्स का विश्लेषण करने के लिए एआई/एमएल उपकरणों का पूरा लाभ उठाएं।

उत्पाद और बाजार विकास

- बैंक कॉरपोरेट और रिटेल क्षेत्रों के लिए हरित और स्थिरता से जुड़े वित्तीय उत्पाद आरंभ करें, स्वच्छ प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए ईएसजी से जुड़ी सलाहकार सेवाओं और रियायती ऋणों के साथ एसएमई को समर्थन प्रदान करें, और बड़ी नवीकरणीय एवं बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के सह-वित्तपोषण के लिए बहुपक्षीय एजेंसियों के साथ साझेदारी करें।

क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण

- बैंक समर्पित ईएसजी जोखिम और अनुसंधान टीमें बनाएं और ऋण अधिकारियों एवं जोखिम प्रबंधकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित करें। साथ ही, बैंक वैश्विक स्थायी बैंकिंग नेटवर्क के साथ सहयोग से क्रॉस-लर्निंग को प्रोत्साहित करें।

हितधारक संलग्नता और रिपोर्टिंग

- बैंक अनुपालन आवश्यकताओं से परे पारदर्शी ईएसजी प्रकटीकरण प्रकाशित करें और ईएसजी फ्रेमवर्क को परिष्कृत करने के लिए नियामकों, निवेशकों और नागरिक समाज के साथ संलग्नता बढ़ाएं। साथ ही, स्थायी वित्त विकल्पों को बढ़ावा देने के लिए ग्राहक जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित करें।

सार्वजनिक नीति और पारिस्थितिकी तंत्र की भूमिका

भारतीय बैंकिंग में ईएसजी एकीकरण को गति देने के लिए सुदृढ़ एवं सक्षम वातावरण अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसमें सार्वजनिक नीति और पारिस्थितिकी तंत्र की निम्न प्रमुख भूमिकाएं शामिल हैं:

- **सरकारी प्रोत्साहन:** कर लाभ, ऋण गारंटी या ब्याज सब्सिडी हरित वित्तपोषण को अपनाने में तेजी ला सकती है। नवीकरणीय ऊर्जा और बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) बैंकों के लिए बड़े पैमाने पर अवसर पैदा कर सकती है।
- **नियामक मार्गदर्शन:** भारतीय रिज़र्व बैंक और सेबी मानकीकृत ईएसजी रिपोर्टिंग दिशानिर्देश जारी करने, जलवायु जोखिम प्रकटीकरण को अनिवार्य बनाने एवं हरित वित्त वर्गीकरण को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **विकास वित्त संस्थान (डीएफआई):** डीएफआई एवं बहुपक्षीय संस्थान (विश्व बैंक, एडीबी, आदि) रियायती पूंजी तथा जोखिम साझा करने के उपकरण प्रदान कर सकते हैं जो स्थायी वित्तपोषण की लागत को कम कर देते हैं।
- **फिनटेक और डेटा प्रदाता:** फिनटेक ईएसजी संबंधी डेटा के संग्रहण, विश्लेषण और ऋणी की स्कोरिंग आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **उद्योग संघ:** आईबीए और फिक्की जैसे निकाय ज्ञान साझा करने, ईएसजी बेंचमार्किंग करने और सर्वोत्तम प्रथाओं के विकास को सुविधाजनक बना सकते हैं।
- **नागरिक समाज एवं शिक्षा जगत:** गैर सरकारी संगठन और विश्वविद्यालय प्रभाव के मापन, अनुसंधान एवं विकास तथा क्षमता निर्माण पहलों में सहयोग कर सकते हैं।

निष्कर्ष

स्पष्ट परिचालन रोडमैप, सक्षम सार्वजनिक नीति एवं स्वच्छ पारिस्थितिकी तंत्र के सहयोग से भारतीय बैंक देश के हरित एवं समावेशी विकास एजेंडे के उत्प्रेरक बन सकते हैं। भारतीय बैंकिंग में ईएसजी का एकीकरण अनुपालन क्षेत्र में आए परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ वित्तीय क्षेत्र में हुए रणनीतिक परिवर्तन का भी प्रतिनिधि है। जहां बैंक डेटा उपलब्धता, वर्गीकरण मानकीकरण और संस्थागत क्षमता के संदर्भ में चुनौतियों का सामना करेंगे वहीं उन्हें पूंजी की व्यापक पहुंच, जोखिम सहनशीलता और सुदृढ़ प्रतिष्ठा के संदर्भ में महत्वपूर्ण अवसर भी मिलेंगे। ईएसजी अब केवल स्थायी बैंकिंग का भविष्य नहीं है बल्कि यह मौजूदा बैंकिंग का मैंडेट भी बन गया है और भारत के सुदृढ़ एवं स्थायी वित्तीय भविष्य को आकार दे रहा है जहां ईएसजी एकीकरण ऋण निर्णयों, उत्पाद डिजाइन और कॉरपोरेट रणनीति की मुख्यधारा होगा। जो बैंक जलवायु संबंधी जोखिमों का मजबूती से मूल्यांकन और प्रबंधन कर सकेंगे, वित्तीय स्थिरता की रक्षा करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, जलवायु-प्रतिरोधी अवसंरचना और सामाजिक रूप से समावेशी अनुकूलन परियोजनाओं में बड़े पैमाने पर पूंजी जुटा सकेंगे, वही सफलता के साथ अस्तित्व में रहेंगे।

कॉरपोरेट गतिविधियां

"आपकी पूंजी आपका अधिकार – योर मनी योर राइट" की थीम के तहत दिल्ली में आयोजित मेगा कैंप के दौरान दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री, श्री पंकज चौधरी, डीएफएस सचिव, श्री एम. नागराजू, श्री शूरबीर सिंह, आईएएस, सचिव (वित्त), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार (जीएनसीटीडी) और एमडी एवं सीईओ, श्री अशोक चंद्र उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग (एनसीएससी) द्वारा वित्त मंत्रालय के अधीन पंजाब नैशनल बैंक में अनुसूचित जातियों के कल्याण एवं विकास हेतु स्वरोजगार, आय सृजन योजनाओं के लिए विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन एवं आरक्षण नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा एवं निगरानी बैठक आयोजित की गई। दृष्टव्य है श्री किशोर मकवाना, अध्यक्ष, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, श्री वड्डेपल्ली रामचंद्र, सदस्य, एनसीएससी, श्री लव कुश कुमार, सदस्य, एनसीएससी, श्री अशोक चंद्र, एमडी एवं सीईओ, श्री डी. सुरेंद्रन, कार्यपालक निदेशक, मुख्य महाप्रबंधकगण, श्री सुमेश कुमार, श्री सुरिंदर पाल सिंह, श्री फिरोज हसनैन एवं श्री अमरेन्द्र कुमार, महाप्रबंधक।

कॉरपोरेट गतिविधियां

पीएनबी ने मनाया 76वां संविधान दिवस

श्री अशोक चंद्र, एमडी एवं सीईओ, प्रधान कार्यालय में आयोजित संविधान दिवस के अवसर पर समस्त उच्चाधिकारियों के साथ संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पाठ करते हुए। साथ में हैं कार्यपालक निदेशकगण, श्री एम. परमशिवम, श्री डी. सुरेंद्रन और श्री अमित कुमार श्रीवास्तव, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री राघवेंद्र कुमार और बैंक के अन्य वरिष्ठ अधिकारी।

ब्रेल क्रेडिट कार्ड के लांच के साथ पीएनबी ने मनाया अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस

अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के अवसर पर प्रधान कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान ब्रेल क्रेडिट कार्ड लांच करते हुए श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री राघवेंद्र कुमार मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं मुख्य अतिथि अंतरराष्ट्रीय पैरा-बैडमिंटन खिलाड़ी तथा पीएचडी स्कॉलर, श्री मुन्ना खालिद।

यूट्यूब चैनल "जिंदगी विद ऋचा" में एमडी एवं सीईओ का साक्षात्कार

श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, यूट्यूब चैनल "जिंदगी विद ऋचा" की होस्ट सुश्री रिचा अनिरुद्ध को एक पॉडकास्ट में साक्षात्कार देते हुए।

कॉरपोरेट गतिविधियां

अधीनस्थ संवर्ग के स्टाफ सदस्यों के साथ संवाद

श्री अशोक चंद्र, एमडी एवं सीईओ प्रधान कार्यालय में दिल्ली अंचल तथा प्रधान कार्यालय में पदस्थापित अधीनस्थ संवर्ग के स्टाफ सदस्यों हेतु आयोजित संवाद कार्यक्रम में संबोधित करते हुए। साथ में हैं श्री डी. सुरेंद्रन, कार्यपालक निदेशक।

पंजाब नैशनल बैंक ने उत्तराखंड पूर्व सैनिक कल्याण निगम लिमिटेड (UPNL) के कर्मचारी स्वर्गीय सागर नेगी और स्वर्गीय कृष्णा देवी के नॉमिनी को 50 लाख रुपये का इंश्योरेंस क्लेम सहायता राशि प्रदान की। यह राशि एमडी एवं सीईओ, श्री अशोक चंद्र, अंचल प्रबंधक, देहरादून, श्री अनुपम और UPNL के प्रबंध निदेशक, ब्रिगेडियर (रिटायर्ड) जेएनएस बिष्ट ने सौपीं। इस मौके पर अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

भारत मंडपम में आयोजित व्यापार मेले में पीएनबी ने दर्ज कराई उपस्थिति

भारत मंडपम, नई दिल्ली में 14-27 नवम्बर, 2025 तक 44 वें भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला का आयोजन किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम में पंजाब नैशनल बैंक द्वारा लगाए स्टॉल में डॉ. राजेश प्रसाद, मुख्य महाप्रबंधक, श्री प्रवीन गोयल, अंचल प्रबंधक, दिल्ली एवं श्री आलोक कुमार जैन, मंडल प्रमुख, श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, उप मंडल प्रमुख तथा मंडल एवं शाखाओं के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बैंकों में सुरक्षा विभाग का बढ़ता महत्व

अनुभव चौधरी
प्रबंधक-विपणन
सीएसी, लुधियाना

वर्तमान आधुनिक युग में बैंकिंग प्रणाली हमारे आर्थिक ढांचे की रीढ़ बन चुकी है। वित्तीय सेवा उद्योग अप्रत्याशित और अक्सर विरोधाभासी तरीकों से खुद को बदल रहा है। जैसे-जैसे डिजिटल बैंकिंग, मोबाइल भुगतान, ऑनलाइन ट्रांजैक्शन और इंटरनेट बैंकिंग का विस्तार हो रहा है, वैसे-वैसे बैंकों के सामने सुरक्षा की चुनौतियां भी बढ़ती जा रही हैं। साइबर अपराधों, धोखाधड़ी, डेटा चोरी और फिजिकल सुरक्षा की समस्याओं ने बैंकिंग सुरक्षा विभाग की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है। आज बैंक सिर्फ पैसे जमा करने या ऋण देने का स्थान नहीं हैं, बल्कि ये डेटा सुरक्षा, ग्राहक गोपनीयता और वित्तीय अखंडता के केंद्र भी हैं।

1. डिजिटल बैंकिंग का उदय और बढ़ती साइबर सुरक्षा चुनौतियां

21वीं सदी में बैंकिंग ने जब डिजिटल रूप लिया, तब लोगों की सुविधा तो बढ़ी, परंतु इसके साथ ही जोखिमों का नया दौर भी शुरू हो गया। ऑनलाइन बैंकिंग, नेट बैंकिंग, मोबाइल ऐप्स आदि के माध्यम से ग्राहकों ने बैंक सेवाओं का लाभ घर बैठे लेना शुरू किया। किंतु इस सुविधा ने बैंकों को साइबर हमलों के लिए एक आसान लक्ष्य भी बना दिया। साइबर अपराधी विभिन्न तकनीकों जैसे फिशिंग, मालवेयर, रैनसमवेयर और सोशल इंजीनियरिंग का उपयोग करके बैंकिंग डेटा तक पहुंचने की कोशिश करते हैं। भारत में ही वर्ष 2024 में राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (एनसीआरपी) और नागरिक वित्तीय साइबर धोखाधड़ी रिपोर्टिंग और प्रबंधन प्रणाली पर वित्तीय धोखाधड़ी की 36.37 लाख घटनाएं दर्ज की गईं, जिनसे लगभग 22,845 करोड़ रुपये की क्षति हुई। इन्हीं कारणों की वजह से, बैंकों ने अपने सुरक्षा विभागों को और अधिक मजबूत बनाना शुरू किया। आज हर बैंक के पास एक साइबर सिक्योरिटी सेल है जो लगातार नेटवर्क की निगरानी करता है, आंकड़ा गूढ़लेखन सुनिश्चित करता है और किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर तुरंत प्रतिक्रिया करता है।

2. ग्राहक डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा

बैंकों के पास लाखों ग्राहकों की व्यक्तिगत और वित्तीय जानकारियां होती हैं जैसे कि आधार संख्या, पैन, ट्रांजेक्शन इतिहास, क्रेडिट स्कोर आदि। यदि ये जानकारियां किसी गलत हाथ में चली जाएं तो इसका दुरुपयोग करके गंभीर अपराध किए जा सकते हैं। इसलिए सुरक्षा विभागों की जिम्मेदारी यह भी बनती है कि वे ग्राहकों के डेटा की गोपनीयता को सुनिश्चित करें। इसलिए बैंकों में डेटा प्रोटेक्शन नीतियां अपनाई जाती हैं, जैसे मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन, बायोमेट्रिक लॉगिन्स, और फायरवॉल सुरक्षा। इसके अलावा, भारत में 2023 में पास हुआ डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट भी बैंकों को यह जिम्मेदारी देता है कि वे उपभोक्ताओं के डेटा का दुरुपयोग न करें और किसी भी डेटा उल्लंघन की स्थिति में तुरंत कार्रवाई करें।

3. भौतिक सुरक्षा की भूमिका

हालांकि डिजिटल सुरक्षा पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है, परंतु बैंकों की भौतिक सुरक्षा भी उतनी ही आवश्यक है। एटीएम, बैंक शाखाएं, लॉकर रूम, और नकद संग्रहण केंद्रों को सुरक्षित रखने के लिए प्रशिक्षित सुरक्षा अधिकारी, बंद-परिपथ प्रणाली कैमरा, अलार्म सिस्टम, और स्मार्ट लॉकिंग सिस्टम का उपयोग किया जाता है। कई बार बैंक डकैती, आगजनी, या उपद्रव जैसी घटनाओं से सुरक्षा की जरूरत और अधिक बढ़ जाती है। अगस्त 2025 में कर्नाटक में एक बैंक डकैती में 20 करोड़ के सोने और नगदी की लूट ने यह साबित किया कि भौतिक सुरक्षा को हल्के में नहीं लिया जा सकता। इसलिए बैंकों में सुरक्षा विभागों द्वारा विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, कर्मचारियों को आपातकालीन

परिस्थितियों में कार्य करने के लिए तैयार किया जाता है और नियमित सुरक्षा ऑडिट भी करवाया जाता है।

4. नियामक संस्थाएं और कानूनी दबाव

बैंकिंग एक अत्यधिक विनियमित क्षेत्र है। भारत में रिज़र्व बैंक, भारतीय कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम और वित्त मंत्रालय जैसी संस्थाएं समय-समय पर बैंकों को सुरक्षा मानकों के पालन के निर्देश देती हैं। उदाहरणस्वरूप, रिज़र्व बैंक की साइबर सुरक्षा ढांचा नीति के तहत हर बैंक को एक मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी नियुक्त करना अनिवार्य है, जो सुरक्षा रणनीतियों का नेतृत्व करता है। यदि कोई बैंक इन मानकों का उल्लंघन करता है और उसके कारण किसी ग्राहक को नुकसान होता है, तो उस बैंक पर जुर्माना भी लगाया जा सकता है। इस कानूनी दबाव के कारण भी बैंकों ने अपने सुरक्षा विभागों में अधिक निवेश करना शुरू कर दिया है।

5. धोखाधड़ी की रोकथाम और जोखिम प्रबंधन

बैंकों में हर दिन लाखों लेन-देन होते हैं। इनमें से कई में धोखाधड़ी की संभावना भी होती है। नकली दस्तावेजों के आधार पर ऋण लेना, कार्ड क्लोनिंग, फर्जी खाता खोलना, मनी लॉन्ड्रिंग आदि अपराध आम हो गए हैं। सुरक्षा विभाग ऐसे धोखाधड़ी को रोकने के लिए 'फ्रॉड डिटेक्शन सिस्टम' का इस्तेमाल करते हैं, जो कृत्रिम बुद्धिमता और मशीन लर्निंग तकनीकों से संदेहास्पद गतिविधियों की पहचान करता है। इससे बैंक समय रहते जोखिम को पहचानकर उसे रोक सकता है। इसके अलावा, सुरक्षा विभाग 'अपने ग्राहक को जाने' प्रक्रियाओं की निगरानी करता है ताकि कोई जाली पहचान के साथ बैंकिंग सेवा का दुरुपयोग न कर सके।

6. सुरक्षा विभागों में तकनीकी नवाचार

सुरक्षा विभाग अब सिर्फ निगरानी या प्रतिक्रिया तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि अब ये तकनीकी नवाचारों के केंद्र बन गए हैं। बैंक अब कृत्रिम बुद्धिमता, बिग डेटा, ब्लॉकचेन और बायोमेट्रिक्स प्रमाणीकरण जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं ताकि सुरक्षा को अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके। उदाहरणस्वरूप, कुछ बैंक अब ग्राहकों के टाइपिंग पैटर्न, माउस मूवमेंट और ब्राउजिंग व्यवहार के आधार पर पहचान सुनिश्चित करते हैं। इससे यदि कोई और व्यक्ति उस ग्राहक के खाते में लॉगिन करने का प्रयास करे तो तुरंत अलार्म बज जाता है और ग्राहक को सूचना भेज दी जाती है।

निष्कर्ष

आज के तेजी से बदलते डिजिटल युग में बैंकों के लिए सुरक्षा सिर्फ एक विकल्प नहीं, बल्कि एक अनिवार्यता बन गई है। चाहे वह साइबर सुरक्षा हो, ग्राहक डेटा की गोपनीयता, भौतिक संपत्तियों की रक्षा, या धोखाधड़ी की रोकथाम - हर क्षेत्र में सुरक्षा विभागों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। बैंक यदि अपने ग्राहकों का विश्वास बनाए रखना चाहते हैं, तो उन्हें सुरक्षा में निरंतर निवेश करना होगा और अपने सुरक्षा विभागों को आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित करना होगा। आने वाले वर्षों में, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बैंकिंग सुरक्षा एक अत्यधिक विशेषज्ञता वाला और रणनीतिक क्षेत्र बन जाएगा, जो न केवल बैंकों को सुरक्षित रखेगा बल्कि पूरे वित्तीय तंत्र को स्थिरता प्रदान करेगा।

अनुरोध

पीएनबी स्टाफ जर्नल/प्रतिभा के सुधि पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं के बारे में यदि आप अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराएंगे तो हम इसके लिए आपके आभारी होंगे। निःसंदेह इससे पत्रिका के आगामी अंकों को और सुंदर तथा सुरुचिपूर्ण बनाने में हमें सहायता मिलेगी। आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका में सभी स्टाफ सदस्यों, उनके परिवारजनों तथा सेवानिवृत स्टाफ सदस्यों की रचनाएं भी स्वीकार्य हैं। आप सभी के सहयोग से हम इस पत्रिका को एक पारिवारिक पत्रिका बनाने की ओर अग्रसर रहेंगे।

अंचल कार्यालयों में नियुक्त पीएनबी स्टाफ जर्नल के प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वे अपने संबंधित मंडल कार्यालयों में नियुक्त अधिकारियों से पत्रिका में प्रकाशन योग्य सामग्री एकत्रित करके ई-मेल pnbstaffjournal@pnb.bank.in पर या सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा विभाग, प्रथम तल प्लॉट नं. 4, प्रधान कार्यालय, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली, को भिजवाना सुनिश्चित करें।

पीएनबी प्रतिभा का आगामी अंक **'बैंकिंग परिचालन एवं मार्केटिंग' (जनवरी-मार्च 2026)** के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

उच्चाधिकारियों के दौरे

देहरादून अंचल के दौरे के अवसर पर श्री अशोक चंद, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, अंचल कार्यालय, देहरादून के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करते हुए। साथ में हैं श्री अनुपम, अंचल प्रबंधक, देहरादून एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

उन्नत अध्ययन संस्थान, दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में श्री रवि मित्तल-चेयरमैन, आईबीबीआई का स्वागत करते श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी।

राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (पंजाब) की 174वीं बैठक में उपस्थित कार्यपालक निदेशक, श्री एम. परमशिवम एवं अंचल प्रबंधक, लुधियाना, श्री परमेश कुमार। इस बैठक में श्री अरविंद कुमार, आईएएस (निदेशक, कोषागार एवं लेखा, वित्त विभाग, पंजाब सरकार), श्री पंकज सेतिया (महाप्रबंधक, आरबीआई) एवं श्री विनोद कुमार आर्या (मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड) आदि उच्चाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

श्री एम. परमशिवम, कार्यपालक निदेशक, चंडीगढ़ अंचल के दौरे के अवसर पर आयोजित आउटरीच कार्यक्रम के दौरान लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए। साथ में हैं श्री ललित तनेजा, अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़ एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

श्री बिभु प्रसाद महापात्र, कार्यपालक निदेशक भुवनेश्वर में आयोजित रिटेल आउटरीच कार्यक्रम में सम्मानित ग्राहकों को स्वीकृति पत्र (Sanction Letter) प्रदान करते हुए। साथ में हैं:- श्री भूषण कुमार, अंचल प्रबंधक, भुवनेश्वर तथा श्री लक्ष्मी कांत मिश्र, मंडल प्रमुख, भुवनेश्वर।

उन्नत अध्ययन संस्थान, दिल्ली में आयोजित वुमेन कॉनक्लेव कार्यक्रम में सहभागिता करते हुए श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक एवं श्री पवन सिंह, महाप्रबंधक एवं महिला उच्चाधिकारिगण एवं स्टाफ सदस्याएं।

उच्चाधिकारियों के दौरे

चंडीगढ़ में आयोजित राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (हरियाणा) की 174वीं बैठक में सहभागिता करते हुए श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक एवं श्री ललित तनेजा, अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़। इस बैठक में श्री विवेक श्रीवास्तव, क्षेत्रीय निदेशक, आरबीआई, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ एवं अन्य उच्चाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक कोलकाता अंचल के दौरे के अवसर आयोजित मेगा रिटेल आउटरीच कार्यक्रम में सम्मानित ग्राहकों को स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए।

उन्नत अध्ययन संस्थान, दिल्ली में आयोजित आई. बी. ए. (ईज 8.0) में श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक द्वारा श्री एस.के. थापर, वरिष्ठ सलाहकार, आईबीए का पौधा भेंट कर अभिनंदन किया गया।

अहमदाबाद अंचल के दौरे के अवसर पर गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री में आयोजित एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित करते हुए श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक, श्री विनीष कुमार चावला, अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री ब्रजेश कुमार यादव, उप अंचल प्रबंधक एवं अन्य।

पीएनबी ने किया राष्ट्रव्यापी डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र अभियान 4.0 का आयोजन

पीएनबी ने अक्टूबर से दिसंबर 2025 तक राष्ट्रव्यापी डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र अभियान 4.0 का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस अभियान के अंतर्गत बैंक ने समस्त अंचल/मंडल तथा शाखा कार्यालयों में डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र जमा कराने हेतु जनजागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया तथा सभी वरिष्ठ नागरिकों तथा पेंशनर्स को इसके बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान की।

बैंकों में सुरक्षा और अग्नि सुरक्षा व्यवस्था

अभीक सिंह
मुख्य प्रबंधक
सुरक्षा विभाग, प्रधान कार्यालय

बैंक किसी भी देश की वित्तीय संरचना का आधार होते हैं। यह केवल एक संस्था नहीं, बल्कि आर्थिक व्यवस्थाओं को संचालित करने वाला तंत्र है। बैंक में धन, दस्तावेज और डिजिटल डेटा, तीनों का प्रवाह निरंतर चलता रहता है। अतः इन सबको सुरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है। जिस बैंक की सुरक्षा मजबूत होती है, वही ग्राहकों का भरोसा जीत पाता है। आज जब तकनीक तेजी से आगे बढ़ रही है और डिजिटल लेन-देन व्यापक हो चुका है, तब बैंकिंग क्षेत्र में सुरक्षा की महत्ता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

सुरक्षा व्यवस्था का व्यापक महत्व

बैंक में सुरक्षा व्यवस्था केवल चोरों या अपराधियों से रक्षा करने के लिए ही नहीं होती, बल्कि-

- बैंक की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए
- ग्राहक के विश्वास को बनाए रखने के लिए
- आर्थिक लेन-देन को निर्बाध और सुरक्षित बनाने के लिए
- राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को व्यवस्थित बनाए रखने के लिए
- साइबर अपराधों से बचाव के लिए

आवश्यक होती है। जैसे-जैसे बैंकिंग क्षेत्र का विस्तार होता है, सुरक्षा जोखिम भी बढ़ते हैं। इसलिए मजबूत सुरक्षा व्यवस्था किसी भी आधुनिक बैंक की प्राथमिक आवश्यकता है।

1. भौतिक सुरक्षा व्यवस्था (Physical Security System)

भौतिक सुरक्षा बैंक सुरक्षा का सबसे मूलभूत स्तंभ है। इसमें बैंक भवन, कर्मचारियों और ग्राहकों की सुरक्षा शामिल होती है।

(क) बैंक भवन की संरचनात्मक सुरक्षा

बैंक भवन को सुरक्षा की दृष्टि से विशेष रूप से डिजाइन किया जाता है। मोटी दीवारें, सुरक्षात्मक दरवाजे, सीमित प्रवेश-द्वार और कड़े नियंत्रण से सुरक्षा का पहला स्तर बनता है।

- प्रवेश द्वार पर सुरक्षा गार्ड।
- पहचान प्रक्रिया (ID psd)।
- बैग स्कैनर।
- मेटल डिटेक्टर।

इनके माध्यम से बैंक में प्रवेश करने वालों की निगरानी की जाती है।

(ख) तिजोरी और स्ट्रांग रूम (Strong Room)

बैंक की तिजोरी विशेष धातुओं से बनी होती है, जिन्हें तोड़ना लगभग असंभव है। स्ट्रांग रूम में-

- मोटे स्टील के दरवाजे
- टाइम-लॉक सिस्टम
- तापमान नियंत्रण
- अग्निरोधक संरचना

जैसी व्यवस्थाएं होती हैं। यह बैंक की सबसे सुरक्षित जगह मानी जाती है।

(ग) सीसीटीवी कैमरा व्यवस्था

सभी बैंक शाखाओं में उच्च गुणवत्ता वाले सीसीटीवी कैमरे लगाए जाते हैं, जो 24×7 रिकॉर्डिंग करते हैं। यह कैमरे-

- नकदी काउंटर।
- प्रवेश और निकास द्वार।
- ATM कक्ष।
- स्ट्रॉंग रूम के बाहर।
- सभी गोल्ड लोन शाखाओं में गोल्ड सेफ के पास।

विशेष निगरानी रखते हैं। इनका डेटा लंबे समय तक सुरक्षित रखा जाता है ताकि किसी भी घटना की जांच में मदद मिल सके।

(घ) अलार्म सिस्टम

बैंकों में दो प्रकार के अलार्म पाए जाते हैं-

1. **इमरजेंसी अलार्म** - संकट की स्थिति में गार्ड या कर्मचारी दबाते हैं।
2. **साइलेंट अलार्म** - चोरी या संदिग्ध गतिविधि की जानकारी सीधे पुलिस को भेज देता है।

यह त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करते हैं।

2. तकनीकी एवं डिजिटल सुरक्षा (Cyber & Tech Security)

आज बैंकिंग प्रणाली का बड़ा हिस्सा डिजिटल हो चुका है। यूपीआई, नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और कार्ड पेमेंट के चलते साइबर सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है।

(क) एन्क्रिप्शन तकनीक

बैंक डेटा को एन्क्रिप्ट करके सुरक्षित रखते हैं। इससे यदि कोई डेटा चोरी भी कर ले, तो वह पढ़ नहीं सकता।

(ख) मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (MFA)

इसके अंतर्गत-

- पासवर्ड
- OTP
- बायोमैट्रिक
- MPIN

जैसे कई स्तरों की पहचान प्रमाणन प्रक्रिया होती है।

(ग) फायरवॉल एवं सिक्योरिटी सॉफ्टवेयर

बैंक के सर्वर को बाहरी हमलों से सुरक्षित रखने के लिए अत्याधुनिक फायरवॉल का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा-

- ऐंटी-मैलवेयर
- ऐंटी-फिशिंग सिस्टम
- निरंतर नेटवर्क मॉनीटरिंग

से साइबर जोखिमों को कम किया जाता है।

(घ) साइबर सुरक्षा टीम

हर बड़े बैंक में आईटी विशेषज्ञों की एक विशेष टीम होती है, जो-

- बैंक नेटवर्क
- सर्वर सुरक्षा
- डेटा विश्लेषण
- साइबर हमलों की रोकथाम का कार्य संभालती है।

3. ग्राहक सुरक्षा जागरूकता (Customer Awareness)

बैंक सुरक्षा में ग्राहक की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। तकनीक जितनी बढ़ी है, धोखाधड़ी के तरीके भी उतने बढ़े हैं। इसलिए बैंक ग्राहकों को सलाह देते हैं-

- OTP किसी के साथ साझा न करें।
- फर्जी कॉल-SMS से दूर रहें।
- संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करें।
- ATM का पिन याद रखें, लिखकर न रखें।
- केवल बैंक की आधिकारिक साइट/ऐप का उपयोग करें

बैंकों द्वारा समय-समय पर जागरूकता अभियान, वीडियो, SMS चेतावनियां और सोशल मीडिया पोस्ट भी किए जाते हैं।

4. बैंक कर्मचारियों की भूमिका और प्रशिक्षण

सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने में बैंक कर्मचारियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उन्हें-

- नकली नोट पहचान।
- संदिग्ध ग्राहक विश्लेषण।
- डिजिटल सुरक्षा प्रोटोकॉल।
- आपातकालीन कार्रवाई।
- फायर सेफ्टी।

जैसे विषयों पर नियमित प्रशिक्षण दिया जाता है।

5. सुरक्षा नियम और निगरानी (Regulations & Supervision)

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने बैंकों की सुरक्षा के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए हैं। इनमें-

- सुरक्षा ऑडिट
- शाखा निरीक्षण
- तकनीकी मानक
- डेटा सुरक्षा नियम
- ATM सुरक्षा गाइडलाइन

शामिल हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी एजेंसियां भी सुरक्षा व्यवस्था की निगरानी करती हैं।

6. ATM सुरक्षा

ATM बैंक सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें-

- सीसीटीवी कैमरा (केंद्रीकृत एलेक्ट्रोनिक निगरानी)
- कार्ड स्किमिंग रोधक डिवाइस
- PIN शील्ड
- मशीन में नकली डिवाइस की जांच जैसी व्यवस्थाएं की जाती हैं।

7. आधुनिक चुनौतियां

(क) साइबर अपराध

हैकिंग, फिशिंग, रैनसमवेयर जैसे हमले बैंक को भारी नुकसान पहुंचा सकते हैं।

(ख) डिजिटल ठगी

UPI, QR कोड, नकली ऐप, स्क्रीन शेयरिंग के माध्यम से धोखाधड़ी के मामले लगातार बढ़ रहे हैं।

(ग) नकली नोट एवं आर्थिक अपराध

बैंकों को विशेष मशीनों और प्रशिक्षण के माध्यम से नकली नोट की पहचान सुनिश्चित करनी पड़ती है।

8. भविष्य की सुरक्षा व्यवस्था

भविष्य में बैंक सुरक्षा और अधिक उन्नत हो सकती है। जैसे-

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित निगरानी।
- फेस रिकग्निशन सिस्टम।
- बायोमेट्रिक वॉयस आइडेंटिफिकेशन।
- रोबोटिक सुरक्षा गार्ड।

इन तकनीकों से बैंकिंग व्यवस्था और अधिक सुरक्षित होगी।

9. बैंकों में अग्निशमन हेतु किए जाने वाले उपाय

बैंक में प्रतिदिन बड़ी संख्या में कर्मचारी, ग्राहक, नकदी, महत्त्वपूर्ण दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण मौजूद रहते हैं। इसलिए आग लगने की स्थिति में भारी नुकसान की संभावना रहती है। इसी कारण अग्निशमन (Fire Safety) बैंक सुरक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा है।

बैंक में आग से बचाव और नियंत्रण के लिए किए जाने वाले प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं-

i. अग्निशमन उपकरणों की स्थापना

- बैंक में फायर एक्सटिंग्विशर (ABC/CO_2/Water Based) अनिवार्य रूप से लगाए जाते हैं।
- फायर बकेट, फायर ब्लैंकेट, फायर बॉल जैसे उपकरण उपलब्ध रखे जाते हैं।
- इन उपकरणों का समय-समय पर सर्विसिंग और निरीक्षण किया जाता है ताकि खराबी की स्थिति न बने।

ii. स्वचालित अग्नि चेतावनी प्रणाली (Fire Alarm System)

- धुआं और तापमान सेंसर (Smoke & Heat Detectors) लगाए जाते हैं।
- आग लगते ही स्वचालित सायरन/अलार्म बजने लगता है।
- मंडल/अंचल और प्रधान कार्यालय और सुरक्षा विभाग तक तुरंत सूचना पहुंच जाती है।

iii. फायर स्प्रिंकलर सिस्टम

- कई बैंक शाखाओं में ऑटोमैटिक स्प्रिंकलर सिस्टम लगाया जाता है।
- आग लगने पर सेंसर सक्रिय होते ही पानी का छिड़काव शुरू हो जाता है, जिससे आग प्रारंभिक स्तर पर नियंत्रित हो जाती है।

iv. विद्युत सुरक्षा

- बैंक में आग लगने के अधिकांश मामले शॉर्ट सर्किट के कारण होते हैं।

इससे बचाव के लिए-

- वायरिंग की समय-समय पर जांच।
- सुरक्षित MCB और ELCB सिस्टम।
- ओवरलोड प्रोटेक्शन।
- पुरानी विद्युत तारों का नवीनीकरण आवश्यक माना जाता है।

v. आपातकालीन निकास (Emergency Exit)

- बैंक में आपातकालीन दरवाजे (**Emergency Exit Doors**) होने चाहिए।
- एग्जिट हमेशा खुला और साफ रास्ता होना चाहिए।
- वहां ग्लो साइन बोर्ड लगाए जाते हैं ताकि धुएं में भी रास्ता दिखे।

vi. फायर ड्रिल और कर्मचारी प्रशिक्षण

- बैंक कर्मचारियों को अग्निशमन उपकरणों के सही उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाता है।
- फायर ड्रिल (अग्निशमन अभ्यास) समय-समय पर आयोजित की जाती है।

- कर्मचारी आग लगने पर ग्राहकों को सुरक्षित बाहर निकालने की प्रक्रिया सीखते हैं।

vii. ज्वलनशील सामग्री का सुरक्षित प्रबंधन

- कागज, पुराने रिकॉर्ड और कचरे को सुरक्षित तरीके से संग्रहित किया जाता है।
- इनका नियमित निस्तारण किया जाता है ताकि आग के फैलने की संभावना कम हो।

viii. सर्वर रूम और ATM कक्ष की सुरक्षा

- सर्वर रूम में FM-200 या CO_2 गैस आधारित फायर सप्रेशन सिस्टम लगाया जाता है, क्योंकि पानी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को नुकसान पहुंचा सकता है।
- ATM रूम में भी स्मोक डिटेक्टर और छोटी CO_2 मशीनें लगाई जाती हैं।

ix. आपातकालीन प्रकाश व्यवस्था (Emergency Lighting)

- बिजली कटने पर भी आग के दौरान बाहर निकलने के लिए इमरजेंसी लाइट लगाई जाती है।
- इससे अंधेरे या धुएं में बाहर निकलना आसान होता है।

x. अग्नि सुरक्षा लेखा परीक्षा (फायर सेफ्टी ऑडिट)

- बैंक में नियमित रूप से अग्नि सुरक्षा लेखा परीक्षा तथा निरीक्षण (Fire Safety Audit) कराया जाता है।
- कमियों का पता लगते ही उन्हें तुरंत सुधारा जाता है।
- फायर ब्रिगेड विभाग द्वारा प्रशिक्षण और प्रमाणन भी कराया जाता है।

बैंकों में सुरक्षा व्यवस्था किसी भी देश की आर्थिक मजबूती का आधार है। मजबूत भौतिक सुरक्षा, आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षित कर्मचारी, सजग ग्राहक और सख्त सरकारी नियम-ये सभी मिलकर एक सुरक्षित बैंकिंग वातावरण का निर्माण करते हैं। साथ हीं, बैंकों में अग्निशमन व्यवस्था लोगों के जीवन और संपत्ति दोनों की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षित कर्मचारी, उचित उपकरण और स्पष्ट आपातकालीन कार्य योजना-इन सबके संयुक्त प्रयास से आग जैसी आपदा का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया जा सकता है। उपयुक्त अग्निशमन व्यवस्था बैंक की सुरक्षा और विश्वसनीयता दोनों को मजबूत बनाती है।

इनके अतिरिक्त, बैंक का सुरक्षा विभाग, व्यवसाय निरंतरता प्रबंधन योजना (Business Continuity Management Plan) के अंतर्गत विभिन्न आपदाओं के समय किए जाने वाले अनेक सुरक्षात्मक उपायों एवं त्वरित/ प्रथम उत्तरदाता (फर्स्ट अधिकारियों) की भूमिका का भी निर्वहन करता है, जिसके तहत बैंक भवनों में उपस्थित/कार्यरत सभी ग्राहकों, कर्मचारियों, अधिकारियों एवं अन्य लोगों के भवन से बाहर शीघ्र एवं सुरक्षित निकास, साथ हीं- अन्य सुरक्षित वैकल्पिक भवनों से बैंकिंग कार्यों का सुचारु एवं समुचित रीति से कार्यारंभ किए जाने की व्यवस्था भी शामिल है। इसके लिए बैंक के शीर्ष प्रबंधन ने न केवल उपयुक्त नीतियां बनाई हैं अपितु उन नीतियों के सफल कार्यान्वयन हेतु मानक संचालन प्रक्रिया भी तैयार कराए गए हैं, जिसके अंतर्गत बैंक में सुरक्षा विभाग द्वारा समय-समय पर अग्नि सुरक्षा और आपदा सुरक्षा हेतु मॉकड्रिल/कवायद भी कराई जाती है।

जैसे-जैसे डिजिटल दुनिया का विस्तार हो रहा है, सुरक्षा चुनौतियां भी बढ़ती जा रही हैं। इसलिए सुरक्षा और अग्निशमन व्यवस्था को निरंतर अद्यतन और सुदृढ़ करना आवश्यक है, और इन महती आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति हेतु प्रधान कार्यालय में अवस्थित सुरक्षा विभाग देश के सभी अंचलों एवं मंडलों में तैनात सुरक्षा/ अग्निशामन अधिकारियों के साथ तन्मयता से अपनी इन वृहत्तर भूमिकाओं का निर्वहन अपनी संपूर्ण क्षमता के साथ कर रहा है।

पीएनबी प्रतिभा का वेब संस्करण

सभी स्टाफ सदस्यों एवं प्रिय पाठकों की सुविधा हेतु पीएनबी प्रतिभा का ऑन-लाइन संस्करण नॉलेज सेंटर पर उपलब्ध है। पीएनबी प्रतिभा तक निम्न नेविगेशन से पहुंच सकते हैं-

पीएनबी नॉलेज सेंटर → ई-सर्कुलर → मैगजीन → पीएनबी प्रतिभा

इस पत्रिका को और अधिक बेहतर तथा उपयोगी बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है

सूझबूझ तथा सतर्कता की मिसाल

(बुजुर्ग ग्राहक को डिजिटल अरेस्ट की ठगी से बचाया)

पंजाब नैशनल बैंक, शाखा कार्यालय, मामा चौराहा में डिजिटल अरेस्ट का एक मामला सामने आया, जिसमें शाखा प्रबंधक श्री श्रवण कुमार राठौर और शाखा के अन्य स्टाफ सदस्यों की सूझ-बुझ से एक वृद्ध महिला साइबर अरेस्ट की ठगी का शिकार होने से बच गई। आरोपी द्वारा फोन पर महिला के परिवार को मनी लॉड्रिंग में संलिप्त बताकर डिजिटल अरेस्ट किया गया और यह धमकाया गया कि आपके परिवार के सभी लोगों से घंटों पूछताछ की जा सकती है और सभी को गिरफ्तार भी किया जा सकता है। महिला यह सब सुनकर घबरा गई। आरोपी द्वारा महिला को एक खाता संख्या दी गई और लगभग दो करोड़ की मांग की गई। आरोपी का यह कहना था कि पैसा मिलने के बाद मामले को रफा-दफा कर दिया जाएगा।

इस कॉल के बाद महिला घबरा गई और अपनी एक करोड़ दस लाख की राशि की 13 एफडी लेकर बैंक की मामा चौराहा, शाखा में पहुंची। पैसा निकालने के लिए वह बैंक के काउंटर पर पहुंची, बैंक अधिकारी सुश्री इंद्राणी द्वारा उस महिला से इतनी बड़ी राशि को अचानक ट्रान्सफर करने का कारण पूछा गया लेकिन घबराई महिला ने उन्हें कोई भी जानकारी नहीं दी। अधिकारी ने इस बात की जानकारी शाखा प्रमुख, श्री श्रवण सिंह राठौर को दी। उन्होंने महिला को अपने केबिन में बुलाकर समझाना चाहा लेकिन वह महिला काफी डरी हुई थीं और कुछ भी बोलने को तैयार नहीं थीं। उनके द्वारा पैसे भेजने के लिए एक खाता संख्या दी गई थी। शाखा प्रबंधक ने संदेह के आधार पर खाता संख्या को जानबूझ कर गलत बताया और कहा कि आपको जिन्हें पैसे भेजने है उनसे सही खाता संख्या मांगिए। महिला फोन पर बात करने के लिए केबिन से बाहर चली गई। शाखा प्रबंधक ने तुरंत एक चपरासी को उनके पीछे भेजा कि देखिए वो क्या बात कर रही हैं, उनकी बात को सुनकर पूरा मामला खुल गया। इसके बाद शाखा प्रमुख ने काफी देर तक महिला को समझाया इसके बाद महिला ने उन्हें पूरी बात बताई। शाखा प्रबंधक ने तत्काल अपने उच्चाधिकारियों और पुलिस को इसकी सूचना दी। मामले की जानकारी मिलते ही मंडल प्रमुख, श्री राज कुमार सिंह एवं मुख्य प्रबंधक, श्री राम बाबू, मौके पर पहुंचे और महिला को समझाया और उनके साथ जाकर उनके अन्य खातों, जो आईसीआईसीआई बैंक और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में थे को फ्रीज करवाने में उनकी मदद की। बैंक के स्टाफ सदस्यों की समझदारी से साइबर क्राइम की एक बड़ी घटना होने से बच गई और हमारे ग्राहक के पैसे सुरक्षित रहे। मंडल प्रमुख, श्री राज कुमार सिंह द्वारा शाखा कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों की सूझ-बूझ की सराहना की गई और मंडल कार्यालय की तरफ से उन्हें पुरस्कृत किया गया।

प्रधान कार्यालय में राजभाषा समारोह का आयोजन

पीएनबी ने प्रधान कार्यालय सहित बैंक के सभी अंचल/मंडल एवं शाखाओं में हिंदी माह का आयोजन किया। इस अवसर पर हिंदी के अनेक कार्यक्रम जैसे, हिंदी कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, काव्य-पाठ, गीत-गायन और हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगितायें आयोजित की गईं। अंचल एवं मंडल कार्यालयों में हिंदी दिवस तथा पुरस्कार वितरण समारोह का भी आयोजन किया गया।

मुख्य समारोह के रूप में प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा दिल्ली स्थित होटल वेलकम में राजभाषा समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोक चंद्र, एमडी एवं सीईओ ने की।

इस अवसर पर कार्यपालक निदेशकगण, श्री एम. परमशिवम, श्री बी. पी. महापात्र तथा श्री डी. सुरेंद्रन, समस्त अंचल प्रमुखों, मंडल प्रमुखों स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्रों के प्रमुखों सहित श्री राकेश ग्रोवर, मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री आशीष करमकर, महाप्रबंधक (राजभाषा), श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक, राजभाषा की उपस्थिति रही।

सम्मेलन का शुभारंभ माननीय एमडी एवं सीईओ तथा कार्यपालक निदेशकगणों के द्वारा लाला लाजपत राय को पुष्पांजलि तथा दीप प्रज्जवल के द्वारा हुआ।

तदनुपरान्त एमडी एवं सीईओ तथा कार्यपालक निदेंशकगण के द्वारा वर्ष 2024-25 हेतु लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड के अंतर्गत प्रधान कार्यालय के प्रभागों/विभागों, अंचल कार्यालयों, प्रशिक्षण केंद्रों तथा आंचलिक लेखा परीक्षा केंद्रों सहित अंचलों में प्रकाशित पत्रिकाओं और उनके संपादकों को लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन्न श्री आशीष शर्मा, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

अंचल कार्यालयों में राजभाषा समारोह की झलकियां

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

अंचल कार्यालय, आगरा

अंचल कार्यालय, भोपाल

अंचल कार्यालय, पटना

अंचल कार्यालय, कोलकाता

अंचल कार्यालय, देहरादून

अंचल कार्यालय, रायपुर

अंचल कार्यालय, हैदराबाद

अंचल कार्यालयों में राजभाषा समारोह की झलकियां

अंचल कार्यालय, शिमला

अंचल कार्यालय, चेन्नई

अंचल कार्यालय, लुधियाना

अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

अंचल कार्यालय, जयपुर

अंचल कार्यालय, वाराणसी

अंचल कार्यालय, लखनऊ

अंचल कार्यालय, अमृतसर

कॉरपोरेट अभिशासन एवं सुरक्षा - विश्वसनीय बैंकिंग की मजबूत नींव

पल्लवी प्रिया
मुख्य प्रबंधक-संकाय
उन्नत अध्ययन संस्थान, पंचकूला

बैंकिंग व्यवस्था किसी भी देश की आर्थिक रीढ़ होती है। बैंक केवल धन का लेन-देन ही नहीं करते, बल्कि वे समाज के हर वर्ग के सपनों, योजनाओं और विश्वास से जुड़े होते हैं। ऐसे में बैंक का संचालन यदि पारदर्शी, उत्तरदायी और सुरक्षित न हो, तो उसका प्रभाव केवल संस्था तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे समाज पर पड़ता है। इसी संदर्भ में कॉरपोरेट अभिशासन और सुरक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है।

कॉरपोरेट अभिशासन : अनुशासन और नैतिकता का संतुलन

कॉरपोरेट अभिशासन का अर्थ है संस्था का संचालन तय नियमों, नीतियों और नैतिक मूल्यों के अनुसार किया जाना। बैंकिंग क्षेत्र में यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि यहां सार्वजनिक धन का प्रबंधन किया जाता है। प्रत्येक निर्णय- चाहे वह ऋण स्वीकृति का हो, निवेश का या नई योजना के क्रियान्वयन का- जवाबदेही और पारदर्शिता की मांग करता है।

अच्छे कॉरपोरेट अभिशासन की बुनियाद निम्नलिखित बातों पर टिकीं होती है-

- स्पष्ट और सुविचारित नीतियां।
- निर्णय प्रक्रिया में पारदर्शिता।
- आंतरिक नियंत्रण और ऑडिट की प्रभावी व्यवस्था।
- नियामकीय निर्देशों का पूर्ण अनुपालन।
- नैतिक आचरण और पेशेवर जिम्मेदारी।

पंजाब नैशनल बैंक जैसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक में कॉरपोरेट अभिशासन केवल शीर्ष स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि शाखा स्तर तक इसकी स्पष्ट झलक मिलती है। यह प्रत्येक कर्मचारी को यह अहसास कराता है कि उसका हर कार्य बैंक की प्रतिष्ठा से जुड़ा हुआ है।

डिजिटल युग में सुरक्षा की बढ़ती चुनौती

आज बैंकिंग तेजी से डिजिटल होती जा रही है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल ऐप, यूपीआई, एटीएम और ऑनलाइन भुगतान ने ग्राहकों के जीवन को आसान बनाया है, लेकिन इसके साथ-साथ जोखिम भी बढ़े हैं। साइबर अपराध, डेटा चोरी और ऑनलाइन धोखाधड़ी जैसी घटनाएं बैंकिंग सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बन गई हैं।

वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में सुरक्षा के प्रमुख आयाम हैं-

- **साइबर सुरक्षा :** डिजिटल प्लेटफॉर्म को सुरक्षित रखना।
- **सूचना सुरक्षा :** ग्राहक डेटा की गोपनीयता बनाए रखना।
- **भौतिक सुरक्षा :** शाखाओं, एटीएम और नकदी प्रबंधन की सुरक्षा।
- **परिचालन सुरक्षा :** प्रक्रियागत कमियों और धोखाधड़ी की रोकथाम।

एक मजबूत सुरक्षा प्रणाली न केवल नुकसान को रोकती है, बल्कि संकट की स्थिति में त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया भी सुनिश्चित करती है।

कॉरपोरेट अभिशासन और सुरक्षा का आपसी संबंध

कॉरपोरेट अभिशासन और सुरक्षा एक-दूसरे के पूरक हैं। मजबूत अभिशासन के बिना प्रभावी सुरक्षा संभव नहीं है और सुरक्षा के अभाव में अभिशासन की विश्वसनीयता कमजोर पड़ जाती है। स्पष्ट जिम्मेदारियां, जोखिम प्रबंधन समितियां, नियमित निरीक्षण और तकनीकी निगरानी- ये सभी दोनों को एक साथ मजबूत बनाते हैं।

जहां नीतियां स्पष्ट होती हैं और जवाबदेही तय होती है, वहां अनियमितताओं और सुरक्षा चूकों की संभावना स्वतः कम हो जाती है।

कर्मचारी : सुरक्षा और अभिशासन की पहली कड़ी

किसी भी बैंक की सबसे बड़ी ताकत उसके कर्मचारी होते हैं। चाहे कितनी ही आधुनिक तकनीक क्यों न हो, मानवीय सतर्कता के बिना सुरक्षा अधूरी है।

संदिग्ध ई-मेल से सावधानी, पासवर्ड की गोपनीयता, कार्य नियमों का पालन और किसी भी असामान्य गतिविधि की समय पर रिपोर्टिंग – ये सभी छोटे कदम बड़े जोखिमों को टाल सकते हैं।

नियमित प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम कर्मचारियों को बदलते जोखिमों के प्रति सजग बनाए रखते हैं।

भविष्य की दिशा

बदलते समय के साथ बैंकिंग में चुनौतियां भी बदल रही हैं। ऐसे में कॉरपोरेट अभिशासन और सुरक्षा को एक सतत् प्रक्रिया के रूप में अपनाना आवश्यक है। नई तकनीकों को अपनाते हुए, जोखिमों का पूर्वानुमान लगाना और कर्मचारियों को सशक्त बनाना ही भविष्य की सफलता की कुंजी है।

उपसंहार

कॉरपोरेट अभिशासन और सुरक्षा, बैंक की साख, स्थिरता और विकास के दो मजबूत स्तंभ हैं। जब ये दोनों साथ चलते हैं, तब बैंक न केवल आर्थिक रूप से मजबूत बनता है, बल्कि ग्राहकों के विश्वास पर भी पूरी तरह खरा उतरता है।

पंजाब नैशनल बैंक अपनी गौरवशाली परंपरा और मूल्यों के अनुरूप, अभिशासन और सुरक्षा को निरंतर सुदृढ़ करते हुए, राष्ट्र सेवा के अपने संकल्प को आगे बढ़ाता रहेगा।

"वो दिन बचपन के"

नेहा बाल्यान
वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)
डीबीटीडी प्रभाग, प्रधान कार्यालय

वो दिन बचपन के, कितने सुहाने,
मासूमियत भरे, सपनों के खजाने।

सुबह-सुबह बैग लिए हम जाते,
स्कूल की राह पे खुशियां गुनगुनाते।

कक्षा में बैठकर सब मुस्काते,
नई-नई बातें हम रोज सीख जाते।

टीचर जी जब "अ" लिखवाती थीं,
कितनी प्यारी आवाज में समझाती थीं।

कितना अच्छा लगता था वो उजाला,
जब खिड़की से झांकता था सूरज निराला।

दोस्तों संग हँसी ठिठोली रहती,
हर गलती पे डाँट भी मीठी लगती।

किताबों में दुनिया थी छोटी-सी,
पर खुशियां थी बड़ी-सी, मोटी-सी।

आज भी दिल बस यही दोहराता-
काश! वो बचपन फिर लौट आता।

ज्ञान का सवेरा

अर्पित श्रीवास्तव
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, वाराणसी

अज्ञान के तिमिर में, ज्ञान का सवेरा है,
कलम की स्याही से, मिटता अंधेरा है।
खिड़की से झांकती वो सुनहरी किरणें,
कहती हैं कि अब सीखने का घेरा है।
श्यामपट्ट पर अंकित वो पहला अक्षर 'अ',
सत्य की खोज में, पहला बसेरा है।
गुरु की ममता और गरिमा का आँचल,
शिष्यों के मन में विश्वास का डेरा है।
तस्वीर की खामोशी में भी एक शोर है,
सपनों की उड़ान का एक नया छोर है।
दिखता है भविष्य इन नन्हीं आँखों में,
सफलता की ओर खींचती ये डोर है।
यह तस्वीर दिल की गहराइयों को छूती है,
मुरझाई हुई सोच में भी नई जान फूँकती है।
साक्षरता ही जीवन का असली श्रृंगार है,
शिक्षक के हाथों में ही सुनहरे कल का आधार है।

बैंक को पुरस्कार

पंजाब नैशनल बैंक और इंफोसिस फिनेकल ने ट्रेजरी और कैपिटल मार्किट में प्रतिष्ठित उद्योग सम्मान प्राप्त किया। बैंक की ओर से, बैंक के मुख्य फिनेकल के साथ फिनेकल ट्रेजरी अनुप्रयोगों को लागू करने और एकीकृत करने के लिए 7वें वार्षिक IBSI ग्लोबल फिनटेक इनोवेशन अवार्ड्स 2025 में श्री संतोष कुमार, महाप्रबंधक - ट्रेजरी द्वारा पुरस्कार प्राप्त किया गया।

'आधार दिवस' के अवसर पर बैंक को भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) से हैदराबाद इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर (HICC), हैदराबाद में आयोजित कार्यक्रम "आधार संवाद" में "आधार प्रमाणिकरण में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

मैं ठहर जाता हूं

कमल किशोर झा
मुख्य प्रबंधक
मंडल कार्यालय : बिलासपुर

हर उस मोड़ पर जाने से मैं थोड़ा रुक जाता हूं
जो भटकाता है, मंजिल तक लेकर जाता नहीं।

हर उस बात को कहने से मैं थोड़ा रुक जाता हूं
जिससे दर्द बढ़ता है, दिल को आराम आता नहीं।

हर उस मंजर को याद करने से मैं थोड़ा रुक जाता हूं
जो सिर्फ घाव देता है, मुझको मरहम लगाता नहीं

हर उस किस्से को सुनाने से मैं थोड़ा रुक जाता हूं
जो बेकरारी बढ़ाता है, जिससे सुकूं के पल मैं पाता नहीं।

अपनी परवाज भरने से मैं थोड़ा रुक जाता हूं
जो आसमान तो देता है, मगर जमीं दिखलाता नहीं।

समझौता ज्ञापन

पीएनबी और केंद्रीय बिजली नियामक आयोग (सीईआरसी) के मध्य हुए समझौता ज्ञापन के दौरान हस्ताक्षर करने के उपरांत समझौता ज्ञापन का आदान प्रदान करते हुए श्री प्रवीन गोयल, अंचल प्रबंधक, दिल्ली तथा श्री हरप्रीत सिंह प्रुथी, सचिव, केंद्रीय बिजली नियामक आयोग (सीईआरसी)।

पीएनबी ने सतत् कनेक्टिविटी हेतु परेशानी मुक्त वित्त पोषण के लिए महिन्द्रा लास्ट माइल मोबिलिटी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

अमृतसर में पीएनबी और शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मध्य हुए समझौता ज्ञापन के दौरान समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान करते हुए श्री अमृताभ आनंद, अंचल प्रबंधक, अमृतसर तथा शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव, श्री प्रताप सिंह। साथ में हैं अन्य उच्चाधिकारीगण।

राजभाषा हिंदी : बैंकिंग में विश्वास और संवेदना की भाषा

राजभाषा हिंदी केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि जन-जन से जुड़ने का सशक्त सेतू है। बैंकिंग जैसे जनसेवा से जुड़े क्षेत्र में हिंदी का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यहां हर वर्ग, हर आयु और हर पृष्ठभूमि का ग्राहक अपनी आवश्यकता और अपेक्षा लेकर आता है। बैंक शाखाओं में होने वाला संवाद केवल खातों और लेन-देन तक सीमित नहीं होता। यह संवाद विश्वास, सुरक्षा और समाधान का होता है। जब यह संवाद हिंदी में होता है, तो ग्राहक स्वयं को अधिक सहज, सुरक्षित और सम्मानित अनुभव करता है। सरल, स्पष्ट और भावपूर्ण हिंदी न केवल जटिल बैंकिंग प्रक्रियाओं को समझने में सहायक होती है, बल्कि बैंक और ग्राहक के बीच आत्मीय संबंध भी स्थापित करती है।

डिजिटल बैंकिंग के इस युग में तकनीक ने कार्य को तेज और सटीक बनाया है, किंतु मानवीय संवेदना आज भी बैंकिंग की आत्मा है। जब बैंक अधिकारी हिंदी में धैर्यपूर्वक नियमों की व्याख्या करते हैं, फार्म भरने में सहयोग करते हैं या किसी समस्या का समाधान सरल भाषा में प्रस्तुत करते हैं, तब राजभाषा अपने वास्तविक उद्देश्य को सार्थक करती है। हिंदी में कार्य करना केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि सेवा-भाव का प्रतीक है। यह भाषा ग्रामीण, शहरी, शिक्षित और सामान्य सभी को समान रूप से जोड़ती है। बैंकिंग के माध्यम से जब राजभाषा का प्रयोग बढ़ता है, तो यह वित्तीय समावेशन और राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ करता है। आज आवश्यक है कि हम हिंदी को केवल औपचारिक पत्राचार तक सीमित न रखें, बल्कि इसे दैनिक कार्य, ग्राहक संवाद, प्रशिक्षण और डिजिटल माध्यमों में भी प्रभावी रूप से अपनाएं। इससे न केवल राजभाषा नीति का अनुपालन होगा, बल्कि बैंक की जनोन्मुखी छवि भी और अधिक सशक्त बनेगी।

अंततः कहा जा सकता है कि बैंकिंग में हिंदी का प्रयोग केवल भाषा का चयन नहीं, बल्कि विश्वास, संवेदना और सेवा की संस्कृति को सुदृढ़ करने का माध्यम है। यही राजभाषा हिंदी की वास्तविक सफलता और सार्थकता है।

सहज अभिव्यक्ति का साधन है हिंदी।
भारतीय संस्कृति का दर्पण है हिंदी।
हिंदी भाषा ही नहीं भावों की अभिव्यक्ति है।
हिंदी में भारत को जोड़कर रखने की शक्ति है।

किशोर चिलाना
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, लुधियाना

संसदीय समिति के दौरे

उद्योग विभाग संबंधी संसदीय स्थायी समिति का अध्ययन दौरा 30 दिसंबर 2025 को अमृतसर में किया गया। जिसका मुख्य विषय "पंजाब राज्य में प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के निष्पादन एवं प्रदर्शन की समीक्षा" था। इस बैठक में पंजाब नैशनल बैंक की ओर से श्री एम. परमशिवम, कार्यपालक निदेशक, श्री अमृताभ आनंद, अंचल प्रबंधक, अमृतसर तथा अंचल कार्यालय, अमृतसर के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) योजना के बारे में चर्चा की गई और साथ ही इस बात पर चर्चा की गई कि बैंकों में ब्याज दर कम हो ताकि अधिक से अधिक रोजगार का सृजन किया जा सके।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा अंचल कार्यालय, मुंबई का राजभाषा निरीक्षण किया गया। माननीय संसदीय समिति से "उत्कृष्ट" प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए श्री दीपक श्रीवास्तव, अंचल प्रबंधक, मुंबई एवं मुख्य महाप्रबंधक। दृष्टव्य हैं; संयोजक माननीय सांसद श्री श्रीरंग अप्पा बारणे, श्री राकेश ग्रोवर, मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री धर्मबीर, उप निदेशक, वित्तीय सेवाएं विभाग, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं श्रीमती वसुधा गोखले, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) एवं अन्य।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा नराकास चेन्नई तथा सदस्य कार्यालयों का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर आयोजित बैठक में माननीय संसदीय समिति से प्रमाण-पत्र ग्रहण करते हुए श्री पी. महेंद्र, अंचल प्रबंधक, चेन्नई तथा श्रीमती ममता वारके, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा माननीय लोकसभा सांसद श्री सतीश गौतम की अध्यक्षता में अंचल कार्यालय कोलकाता और मंडल कार्यालय उत्तर 24 परगना का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया। बैठक में बैंक की ओर से श्री विशेष कुमार श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबंधक, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, श्री रमणी रंजन मिश्र, महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रबंधक, कोलकाता, श्री पंकज कुमार, मंडल प्रमुख, उत्तर 24 परगना, मंडल कार्यालय, सुश्री अंजलि सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री दिलीप ठाकुर, प्रबंधक राजभाषा ने भाग लिया। इस मौके पर अंचल कार्यालय, कोलकाता द्वारा ग्राहकों हेतु प्रकाशित त्रिभाषी साइबर सुरक्षा हैंडबुक एवं मंडल कार्यालय, उत्तर 24 परगना द्वारा प्रकाशित 'आओ बांग्ला सीखें' तथा छमाही हिंदी पत्रिका 'मंथन' का विमोचन भी किया गया।

बैंक में सुरक्षा प्रबंधन

विकास खन्ना
प्रबंधक सुरक्षा, मंडल कार्यालय, रायबरेली

अनंतकाल से ही सुरक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। प्रगतिशील मानवीय जीवन का आधार बनकर उभरा "धन" और बैंकों को जनसाधारण से लेकर बड़े से बड़े व्यवसायियों एवं उद्योगपतियों तक ने अपने अथक श्रम और लगन से कमाये धन का संरक्षक बनाया है। समय के साथ सार्वजानिक क्षेत्र के बैंकों की सुरक्षा ने सबका ध्यानाकर्षण किया है।

तेजी से बदलती तकनीकें, सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक मूल्यों एवं बहुत तेजी से अन्धाधुन्ध पैसा कमाने के आसान चक्करों में बैंक से जुड़ी आपराधिक गतिविधियां बढ़ी हैं।

बैंकों की भौतिक सुरक्षा में उन उपायों को शामिल किया जाता है जो बैंक की संपत्तियों, कर्मचारियों और ग्राहकों को शारीरिक खतरों जैसे चोरी, तोड़फोड़, प्राकृतिक आपदाओं और आतंकवाद से सुरक्षित रखने के लिए उठाए जाते हैं। यह बैंक की समग्र सुरक्षा रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो भौतिक संपत्तियों (जैसे नकद और कीमती वस्तुएं), परिसंपत्तियों की सुरक्षा और संचालन की निरंतरता दोनों को सुनिश्चित करता है।

बैंकों की भौतिक सुरक्षा के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं:

1. **परिसर सुरक्षा:**

   - **उचित परिसर का चुनाव:** भौतिक सुरक्षा एवं अग्नि सुरक्षा की दृष्टि से उचित परिसर का चुनाव किया जाता है।
   - **मजबूत दीवारें और दरवाजे:** अवैध प्रवेश को रोकने के लिए मजबूत बाहरी दीवारें और दरवाजे।
   - **सी.सी.टी.वी./सर्विलांस कैमरे:** बैंक की बाहरी, प्रवेश बिंदुओं एवं कैश संचालन से जुड़ी जगह, लॉकर या गोल्ड लोन से जुड़ी जगहों की देख-रेख के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए जाते हैं ताकि संबंधित गतिविधियों की निगरानी की जा सके।
   - **सुरक्षा गार्ड:** बैंक सुरक्षा कर्मी संभावित खतरों या संदेहास्पद गतिविधियों पर निगरानी रखने और प्रतिक्रिया देने के लिए होते हैं। यह एक रोकथाम हेतु एवं सुरक्षा की भावना को बढ़ाने हेतु आवश्यक कड़ी है।

2. **परिसर की पहुंच नियंत्रण प्रणाली (एक्सेस कंट्रोल सिस्टम):**

   - **शटर और बैरियर:** संवेदनशील क्षेत्रों में पहुंच को नियंत्रित करने के लिए मजबूत ताले, रोलिंग शटर एवं सम्बद्ध सेंट्रल लॉक, टर्नस्टाइल गेट और बैरियर अथवा बोल्लार्ड जैसी व्यवस्थाएं। आवश्यकता, वस्तु-स्थिति एवं जमीनी हालत के आधार पर उचित प्रकार के गेट, तालों व बैरियर का इस्तेमाल किया जाता है।
   - **बायोमैट्रिक प्रमाणीकरण:** कर्मचारियों और अधिकृत व्यक्तियों के लिए फिंगरप्रिंट, रेटिना स्कैन या चेहरे की पहचान के माध्यम से संवेदनशील क्षेत्रों तक पहुंच। करेंसी चेस्ट एवं लॉकर या गोल्ड लोन संबंधी जगहों के लिए आवश्यक तौर पर इनका उपयोग किया जाता है।
   - **की-कार्ड सिस्टम:** सीमित क्षेत्रों तक पहुंच को नियंत्रित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक की कार्ड्स या प्रोक्सिमिटी कार्ड्स का उपयोग किया जाता है।

3. **अधिकारी/कर्मचारी और आगंतुक जांच:**

   - **पृष्ठभूमि जांच:** बैंक कर्मचारियों पर आंतरिक खतरों को कम करने के लिए पूरी पृष्ठभूमि जांच करती है।
   - **आगंतुक लॉग:** आगंतुकों का साइन-इन करना, स्क्रीनिंग से गुजरना और परिसर में रहने के दौरान एक कर्मचारी द्वारा उनके साथ आना आवश्यक होता है।

4. **घुसपैठ अलार्म प्रणाली व अग्नि सुरक्षा प्रणाली:**

- **पैनिक बटन:** कर्मचारियों को खतरे के मामले में कानून प्रवर्तन या सुरक्षा कर्मियों को गुप्त रूप से सूचित करने के लिए विभिन्न स्थानों पर स्थित होते हैं।
- **मोशन/वायब्रेशन सेंसर:** संवेदनशील या प्रतिबंधित क्षेत्रों में अवैध गतिविधि का पता लगाना।
- **ग्लास ब्रेक डिटेक्टर्स:** खिड़कियों या कांच के दरवाजों के टूटने की आवाज या कंपन का पता लगाना। इनके अतिरिक्त सामान्य तौर पर मैग्नेटिक सेंसर व PIR सेंसर का उपयोग होता है।
- **फायर अलार्म और स्वत:** डायलर प्रणाली एवं फायर/ऊष्मा सेंसर, स्प्रिंकलर इत्यादि का उपयोग जिससे तमाम अग्नि-दुर्घटनाओं को रोकने में सहायता मिली है।
- समुचित संख्या में और उचित प्रकार के अग्निशामक उपकरणों का प्रयोग एवं उनका नियमित रखरखाव किया जाता है ताकि हर प्रकार की अग्नि संबंधी दुर्घटना को समय रहते काबू किया जा सके।

5. **नकद प्रबंधन और स्ट्रोंग रूम/वॉल्ट सुरक्षा:**

- **कैश-इन-ट्रांजिट सुरक्षा:** बड़ी रकम के परिवहन के लिए अक्सर सशस्त्र कर्मियों या बख्तरबंद/बैंक की आवश्यकता के अनुरूप बनाये वाहनों का उपयोग किया जाता है।
- **स्ट्रोंग रूम/वॉल्ट्स:** बैंक में आरसीसी से निर्मित मजबूत स्ट्रोंग रूम वॉल्ट्स होते हैं जो पैसे और महत्वपूर्ण दस्तावेजों को सुरक्षित रखते हैं, जिनको आसानी के साथ तोड़ा या छेड़ा नहीं जा सकता है।
- **एटीएम सुरक्षा:** एटीएम सुरक्षित तरीके से संचालित हो रहे हैं या नहीं ,इसके लिए इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस / सी.सी.टी.वी. निगरानी व्यवस्था द्वारा इनकी देख रेख की जाती है और समय-समय पर उनकी सर्विसिंग की जाती है ताकि किसी प्रकार की छेड़छाड़ से बचा जा सके।

6. **सुरक्षित जमा बॉक्स/ लॉकर सुरक्षा:**

- **भारी-ड्यूटी पर सुरक्षा:** इनका उपयोग उच्च मूल्य वाली वस्तुओं और दस्तावेजों को सुरक्षित रखने के लिए किया जाता है और ये आमतौर पर सुरक्षित वॉल्ट्स में होते हैं।
- **सुरक्षित जमा बॉक्स क्षेत्रों की निगरानी:** अवैध प्रवेश को रोकने के लिए इन क्षेत्रों के आगत-निर्गत की सी.सी.टी.वी. निगरानी की जाती है।

7. **आपातकाल और आपदा संबंधी तैयारी:**

- सुरक्षा उपकरणों का नियमित रखरखाव।
- व्यवसाय सतत्ता प्रबंधन नियोजन (बी.सी.सी.पी)।
- प्रत्येक परिसर के अनुसार उचित फायर एक्शन प्लान।
- **निर्वासन मार्ग:** स्पष्ट रूप से चिह्नित निकासी बिंदु, आपातकालीन अभ्यास और आपदा या हमले के मामले में ग्राहकों और कर्मचारियों के लिए निकासी योजनाएं ।
- बैंक के आतंरिक प्रबंधन में समन्वय एवं बाहरी विभागों जैसे पुलिस, अग्निशमन विभाग, अस्पताल एवं स्थानीय प्रशासन से आवश्यक संपर्क एवं सम्प्रेषण।
- उच्च गगनचुम्बी इमारतों में अग्नि सुरक्षा संबंधी फायर हाईड्रेंट सिस्टम।
- नियमित अंतराल पर परिसर में अग्नि सुरक्षा एवं निकासी (evacuation drill) का आयोजन जिससे स्टाफ व ग्राहक जागरूक एवं प्रशिक्षित रहें।

8. **भौतिक सुरक्षा लेखा परीक्षा (ऑडिट) और प्रशिक्षण:**

- **नियमित ऑडिट:** सुरक्षा प्रणालियों और प्रोटोकॉल का मूल्यांकन करने के लिए नियमित जांच। भारतीय रिज़र्व बैंक के पदाधिकारी एवं बैंक के अधिकारियों द्वारा नियमित जांच द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि सार्वजनिक धन की सुरक्षा पूरी निष्ठा, पारदर्शिता एवं जवाबदेही के साथ की जा सके।

- **कर्मचारी प्रशिक्षण:** कर्मचारियों एवं बैंक के सशस्त्र रक्षक (आर्म्ड गार्ड्स) को आपातकालीन प्रक्रियाओं, संदेहास्पद व्यवहार को पहचानने और सुरक्षा उल्लंघनों को संभालने एवं अग्नि संबंधी सावधानियों एवं प्रतिक्रियाओं के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

एक मजबूत एवं सशक्त भौतिक सुरक्षा रणनीति को लागू करना सुरक्षा संबंधी खतरों को कम करने और बैंक के संचालन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। सुरक्षा एक संयुक्त जिम्मेदारी है और प्रत्येक बैंकर का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह नियमित तौर पर बैंक की सुरक्षा के प्रति सतर्क, सजग एवं जागरूक रहें।

काला फर्श

अश्वनी कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, शाखा बुध बाजार
मंडल कार्यालय मुरादाबाद, मेरठ अंचल

पुरानी चीजें जो उतर जाती हैं
हृदय धरातल पर, उनका स्थान
नहीं ले पाती कोई आधुनिक चीज़

जैसे ये चिकने पत्थर का फर्श
नहीं ले सकता जगह उस फर्श की
जिस टूटे काले सीमेंट के फर्श पर
मैं खेलता था अपने बचपन में

मुझे खलती है कमी
चिकने पत्थर को देखकर,
कि मैं ना तो कुरेद सकता हूं
इसमें से मिट्टी ना ही
सफेद चौक से बना सकता हूं
कोई आ से आम का चित्र
जितना गाहड़ा व सफेद
गढ़ सकता था
उस खुरदरे काले फर्श पर,

ये चिकना फर्श कोई निशानियां
नहीं छोड़ पाता मेरे जीवन में,
जैसे आज भी मेरे दोनों पाँव
के घुटनों की कटोरी पर हैं
काले खरोच के निशान,
मानो काले फर्श ने छोड़ा हो
अपना प्रतिबिंब काले ही रंग से,

वो काला फर्श खास था
या यह संयोग मात्र है
या मेरा लगाव मात्र,
क्योंकि यह भी संभव है
कि मेरा पाँच वर्ष का बेटा
लिखे यही कविता
चिकने पत्थर के फर्श के लिए
तीन वर्ष बाद।

तुझे देखता हूं।

दीपक राम चंद्रवंशी
वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा)
मंडल कार्यालय, बोकारो

संध्या के उच्छवास में तुझे देखता हूं।
अमन की अटूट तलाश में तुझे देखता हूं।
मिट गई अतीत की व्यथा मन में
पल्लव के विकास में तुझे देखता हूं।

तन के बोध से परे मन के उपवन में
फागुन के उल्लास में तुझे देखता हूं।
काली घटाओं के दरम्यान में झंझा संभाले
तेरे देह के सुवास में तुझे देखता हूं।

रात के दामन में हौंसले का दीप जलाए
चांदनी के उजास में तुझे देखता हूं।
सामने तू भले ही न दिखे अपलक
मन के अंनत आकाश में तुझे देखता हूं।

व्यस्त क्षणों के प्रकट अंतराल में
कुछ गिनती के अवकाश में तुझे देखता हूं।
बुझ गई है वर्षों की विकलता इस तरह
एक अमिट प्यास में तुझे देखता हूं।
पल्लव के विकास में तुझे देखता हूं।

हमें गर्व है

प्रधान कार्यालय में कार्यरत श्री संदीप सिंह नेगी, वरिष्ठ प्रबंधक ने 19 से 23 दिसंबर 2025 तक राजस्थान के श्री गंगानगर में आयोजित 14वीं राष्ट्रीय पैरा जूडो चैंपियनशिप 2025 में रजत पदक जीता।

मंडल कार्यालय, हल्द्वानी में कार्यरत श्री मुकर्रम अली, मुख्य प्रबंधक ने पर्यटन विभाग, उत्तराखंड सरकार द्वारा आयोजित प्रथम उच्च ऊंचाई अल्ट्रा मैराथन आदि कैलाश परिक्रमा के अंतर्गत 60 कि.मी. आयु वर्ग समूह में 27 प्रतिभागियों के मध्य सांतवा स्थान प्राप्त किया।

इस उपलब्धि पर पीएनबी परिवार को गर्व है और पीएनबी परिवार का संपादक मंडल आपकी इस उपलब्धि पर आपको हार्दिक बधाई देता है और आपके सुखद और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

लघुकथा

लक्ष्मी की कृपा

नरेंद्र सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (सेवानिवृत)
मोहनपुर, अतरी, गया

दीपावली का पर्व आने वाला है। सुधा घर की साफ- सफाई में लगी थी और मन ही मन सोच रही थी कि आखिर ये पर्व कैसे पार लगेगा। हाथ में एक दमड़ी नहीं है। लैलून और लाली के पास न नए कपड़े हैं, न मेरे पास ढंग की कोई साड़ी। वो भी तो पुराने कुर्ता-पैजामा लटकाए ही कचहरी का चक्कर लगा रहे हैं। मिठाई, दीया बाती और पटाखे के लिए भी जुगाड़ नहीं है।

नौकरी से रिटायर हुए 5 वर्ष हो गए, जब एक झूठे आरोप के चलते सेवानिवृत्ति के वक्त इन्हें खाली हाथ चलता कर दिया गया था। इन 5 वर्षों में केस लड़ते-लड़ते मेरे गहने तक भी बिक गए। अब तो लोग उधार-पैंचा भी देना बंद कर दिए हैं। कहने को तो रमन चचा उनके सगे चाचा हैं, पर दलान पर रोज दहाड़ते रहते हैं कि प्रद्युम्न केस हार जाएगा, एक रुपया भी नहीं मिलेगा उसे और लोगों को मदद न करने को उकसाते भी रहते हैं। ताकि उनके पास हम खेत बेच दें। पता नहीं दीपोत्सव कैसे मनेगा। न जाने लक्ष्मी माता इस घर से कब तक नाराज रहेगी।

इतना मन ही मन सोच ही रही थी कि अचानक एक टेम्पो घर के सामने रुका। उसने झांक कर देखा तो उससे लैलून के पापा बहुत-सा कपड़े के बैग और झोला लेकर उतर रहे हैं। "किधर गई लाली की माय आज केस जीत गए और रिटायरमेन्ट के 25 लाख की राशि आज खाते में आ गई। कहते थे न कि सत्य हैरान होता है पराजित नहीं।" प्रद्युम्न धड़ाम से सभी बैग आंगन में रखकर, चहकते हुए बोले।

प्रभावी निगमित शासन

अजय सक्सेना
वरिष्ठ प्रबंधक-राजभाषा
अंचल कार्यालय, जयपुर

इन दिनों 'कॉरपोरेट गवर्नेंस' यह शब्दावली कुछ अधिक प्रचलन में है। कॉरपोरेट गवर्नेंस का हिंदी पर्याय है 'निगमित शासन', इसके बारे में अधिक जानने से पूर्व बेहतर होगा कि हम यह जानें कि इसकी आवश्यकता क्यों अनुभव की जाने लगी है।

पृष्ठभूमि: अमेरिका, यूरोप से लेकर एशिया महाद्वीप तक में बड़े-बड़े व्यावसायिक घराने अपने व्यापार को वैश्विक स्तर पर ले जाने के लिए पूंजी बाजार में उतरकर शेयर, डिबेंचर, म्युचुअल फंड इत्यादि के माध्यम से आम भोली-भाली जनता से भारी निवेश जुटा कर अपनी मनमर्जी से स्वयं के हित में निर्णय लेकर अधिकतम वेतन, सुविधाएं व लाभ कमाते थे। वे कंपनी की वित्तीय स्थिति के बारे में भी सही जानकारी प्रकट नहीं करते थे जिससे निवेशक ठगे जाते थे। संस्थान में कार्यरत कार्मिकों के लिए भी सम्मानजनक वेतन व कोई ठोस कल्याणकारी नीति की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था। विभिन्न पृष्ठभूमि और भौगोलिक क्षेत्र से आने वाले कार्मिकों के लिए अनुकूल वातावरण ना होना, उनसे भेदभाव, और असम्मानजनक व्यवहार इत्यादि के कारण भी कार्मिक अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग कर समूह की वृद्धि में अपनी पर्याप्त भूमिका निभाने में संकोच करता था। प्राय: कंपनियों द्वारा लेनदेन को बैलेंसशीट में सही ढंग से प्रस्तुत नहीं किया जाता जबकि पारदर्शिता और गुणवत्ता रिपोर्टिंग व्यावसायिक साझेदारों के साथ संबंधों की रीढ़ होती है। कुछ ऐसी कंपनियां जिनमें एक ही परिवार का वर्चस्व होता था, में निदेशकों से लेकर कर्मचारियों तक सभी प्रमुख पदों पर परिवार के सदस्य ही नियुक्त होते हैं, अर्थात् संगठन में एकाधिकार की प्रवृति देखने को मिलती थी। खराब कॉरपोरेट प्रशासन के कारण इनमें भ्रष्टाचार, लापरवाही, धोखाधड़ी और जवाबदेही की अनुपस्थिति जैसी समस्याएं दिनोंदिन बढ़ती जा रही हैं। कहीं-कहीं कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की घटनाएं, निदेशक मंडल हेतु आचरण संहिता का अभाव इत्यादि कमियां स्पष्टत: दृष्टिगोचर होती रही हैं।

आवश्यकता: उपर्युक्त परिस्थितियों में निगमित शासन के माध्यम से ही किसी कंपनी के लीडर द्वारा प्रभावी वित्त प्रबंधन, पारदर्शी नीतियों द्वारा सभी हितधारक (स्टेक होल्डर) के हित में कार्य किए जाने की आवश्यकता अनुभव की गयी। पिछले कुछ समय में बड़ी कंपनियों के दिवालिया होने के बाद, न केवल भारतीय परिदृश्य में बल्कि वैश्विक स्तर पर कॉरपोरेट शासन की जरूरत पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा महसूस की जाने लगी।

निगमित शासन का अर्थ है ऐसी प्रणाली, नियम और प्रक्रियाएं जिनके द्वारा किसी कंपनी को निर्देशित, नियंत्रित और जवाबदेह बनाया जा सके ताकि वह अपने सभी हितधारकों (शेयरधारकों, कार्मिकों, ग्राहकों, समाज व राष्ट्र के हितों को ध्यान में रखते हुए पूर्ण नैतिकता, स्थायी नीति, पारदर्शिता व निष्पक्षता से कार्य कर सके, प्रभावी अनुपालन हो जिससे कंपनी की दीर्घकालिक सफलता और स्थिरता सुनिश्चित हो सके।

निगमित शासन का महत्व:

- कंपनी में स्वतंत्र निदेशकों की उपस्थिति और उनकी सक्रियता बाजार में कंपनी की अच्छी छवि प्रदर्शित करती है।
- कंपनी में विदेशी संस्थागत निवेश के समय भी निवेशक कंपनी के कॉरपोरेट गवर्नेंस पर विशेष ध्यान देते हैं।
- जिन कंपनियों में कॉरपोरेट शासन का पूर्ण अनुसरण किया जाता है ऐसी कंपनियों पर लोगों का विश्वास बना रहता है व उसके कार्मिक भी संस्थान में पूर्ण मनोयोग से कार्य करना पसंद करते हैं। इस श्रेणी में टाटा समूह का उदाहरण दिया जा सकता है।
- सबसे महत्वपूर्ण बात कॉरपोरेट गवर्नेंस कंपनी के शेयरों की कीमत पर भी प्रभाव डालता है। यदि किसी कंपनी का कॉरपोरेट गवर्नेंस बेहतर होता है तो ऐसी कंपनी को बाजार

से रकम जुटाने में आसानी होती है। साथ ही वैश्विक स्तर पर कंपनी व देश की प्रतिष्ठा स्थापित होती है।

- ग्लोबल वार्मिंग व कार्बन क्रेडिट जैसी वैश्विक चुनौतियों के चलते प्राकृतिक संतुलन व पर्यावरण संरक्षण भी कॉरपोरेट शासन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी ऐसा देखा गया है कि कॉरपोरेट गवर्नेंस के मानकों का सही ढंग से पालन नहीं किया जाता तथा नैतिकता का मुद्दा बार-बार सामने आता है, चाहे वर्ष 1984 का भोपाल गैस कांड हो या फिर वर्ष 2009 का सत्यम कंप्यूटर केस, शेयर घोटाले इत्यादि। इन्हीं सब के दृष्टिगत सरकार द्वारा कॉरपोरेट गवर्नेंस में सुधार हेतु समय-समय पर कुछ दिशा-निर्देश जारी किये गए जो इस प्रकार हैं -

- भारत में कॉरपोरेट गवर्नेंस के क्षेत्र में पहला सुधारात्मक प्रयास वर्ष 1988 में सेबी की स्थापना के साथ किया गया। इसके द्वारा शेयर धारकों/ जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए कुछ मानक निर्धारित किये गए। इन मानकों को अपनाने के बाद ही अब कोई निजी या सार्वजनिक कंपनी पब्लिक इश्यूज जारी कर सकती है।

- वर्ष 1992 के हर्षद मेहता कांड के बाद सेबी को वैधानिक दर्जा प्रदान किया गया तथा सेबी को कुछ दंडात्मक एवं बाध्यकारी अधिकार भी दिए गए।

- सेबी एक्ट 1992 में सुधार हेतु सुझाव देने के लिये वर्ष 2003 में नारायण मूर्ति समिति का गठन किया गया। इसने कॉरपोरेट शासन को बेहतर बनाने के लिये कुछ सुझाव प्रस्तुत किये जो इस प्रकार हैं : -

    ❖ किसी भी संगठन में स्वतंत्र निदेशकों की एक निश्चित संख्या, उनकी उपस्थिति में नियमित बैठकें इत्यादि।

    ❖ इससे संगठन में पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व को बढ़ावा मिलेगा।

    ❖ कोई भी ऐसा कंपनी/संगठन जो शेयर बाजार में व्यापार करता है उसके लेखा की जांच सिर्फ निजी लेखा परीक्षकों द्वारा नहीं बल्कि एक ऑडिट बोर्ड के माध्यम से की जानी चाहिये जिसमें भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा सेवा के अधिकारी भी शामिल हों।

    ❖ व्हिसल ब्लोअर नीति को भी अपनाया जाए।

उत्कृष्ट निगमित शासन के लिए जिम्मेदार और नैतिक निर्णय लेने को बढ़ावा देना, वित्तीय रिपोर्टिंग में सत्यनिष्ठा की सुरक्षा करना, समय पर और संतुलित प्रकटीकरण तैयार करना, शेयरधारकों के अधिकारों का सम्मान करना, जोखिम का निर्धारण एवं प्रबंधन, कार्य-निष्पादन में वृद्धि को प्रोत्साहित करना, उचित एवं जिम्मेदारीपूर्वक पारिश्रमिक भुगतान, हितधारकों के वैध हितों को मान्यता देना प्रमुख है।

उत्कृष्ट निगमित शासन के द्वारा निवेशक को संस्थान की स्पष्ट तस्वीर प्राप्त करने में मदद मिलती है, जिससे पूंजी तक पहुंच बढ़ेगी, नए निवेशक आकर्षित होंगे, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक विकास होगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। अच्छे कॉरपोरेट प्रशासन के बिना, संपत्ति के नुकसान का जोखिम बढ़ जाता है और इससे न केवल निगम, बल्कि समाज और वैश्विक स्तर पर भ्रष्टाचार और छवि में वृद्धि हो सकती है। कॉरपोरेट प्रबंधन को कॉरपोरेट घोटालों को सीमित करने के लिए प्रशिक्षण एवं अनुपालन (Training & Compliance) पर बल देते हुए भी डिजाइन किया गया है। समाज की कॉरपोरेट क्षेत्र से अपेक्षाएं बहुत ज्यादा होती हैं। खराब कॉरपोरेट प्रशासन शेयरधारकों के बीच हितों का टकराव पैदा कर सकता है। इससे जनता के विश्वास में गिरावट आती है।

निष्कर्ष:

हालांकि कॉरपोरेट शासन प्रणाली अर्थव्यवस्था के लिये तथा शेयर धारकों के हित को सुरक्षित रखने में प्रभावशाली साबित हो रही है, फिर भी भारतीय परिप्रेक्ष्य में हमें अभी और कुशल निगरानी, पारदर्शी आंतरिक लेखा परीक्षा प्रणाली, कुशल बोर्ड और प्रबंधन हेतु एक प्रभावी नीति की आवश्यकता है जो एक प्रभावी कॉरपोरेट प्रशासन को नेतृत्व प्रदान कर सके। साथ ही उभरती नई कंपनियों के रणनीतिक प्रबंधन को बढ़ावा देने तथा बाजार को स्थिरता प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो सके। तभी हमारे निगम, संस्थान वैश्विक स्तर पर अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर पाएंगे एवं हम 'स्वदेशी', 'आत्मनिर्भर भारत', 'विकसित भारत 2047' की परिकल्पना को साकार कर सकेंगे।

राजभाषा गतिविधियां

श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी की अध्यक्षता में अक्टूबर-दिसंबर 2025 तिमाही हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन प्रधान कार्यालय में किया गया। इस अवसर पर दृष्टव्य हैं कार्यपालक निदेशकगण, श्री बी. पी. महापात्र, श्री अमित कुमार श्रीवास्तव, श्री राकेश ग्रोवर, मुख्य महाप्रबंधक, श्री विशेष कुमार श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबंधक, श्री आशीष करमकर, महाप्रबंधक, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

दिल्ली बैंक नराकास की 63वीं छमाही बैठक में गृह पत्रिका 'बैंक भारती' के नवीन अंक का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि, श्री रोहित पी. दास, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक, दिल्ली, विशिष्ट अतिथि, श्री के. पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक, क्षे. का. कार्यालय, दिल्ली-1, राजभाषा विभाग, श्री आर. विश्वेशरण, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक, श्री प्रवीन गोयल, मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रबंधक, दिल्ली तथा श्रीमती मनीषा शर्मा, सदस्य सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (शिमला-2) द्वारा वर्ष : 2025 हेतु मंडल कार्यालय, शिमला को प्रदत्त प्रथम पुरस्कार एसजेवीएन के कार्यकारी निदेशक, श्री चंद्रशेखर यादव तथा उत्तरी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमारपाल शर्मा के कर-कमलों से ग्रहण करते हुए श्रीमती शिखा अनेजा, मंडल प्रमुख, शिमला तथा अन्य उच्चाधिकारीगण।

नराकास चेन्नई की वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक तथा राजभाषा शील्ड पुरस्कार समारोह में नराकास चेन्नई (संयोजक बैंक : इंडियन बैंक) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री बिनोद कुमार के कर-कमलों से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री पी महेन्द्र, अंचल प्रबंधक, चेन्नई एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) वाराणसी की 28वीं बैठक में बैंक को प्रदत्त पुरस्कार श्री मिथिलेश कुमार, महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा एवं अध्यक्ष नराकास, मुख्य अतिथि डॉ छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक (कार्यान्वयन), भारत सरकार से ग्रहण करते हुए श्री बृज लाल गुप्ता, उप मंडल प्रमुख, श्री संतोष कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) एवं डॉ. सुशांत कुमार शर्मा, राजभाषा अधिकारी।

राजभाषा गतिविधियां

नराकास अलीबाग की छमाही बैठक में अलीबाग शाखा को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए प्रदत्त प्रथम पुरस्कार (शील्ड) श्री नितिन हिरडे, कार्यपालक निदेशक, राष्ट्रीय केमिकल एवं फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, थल इकाई, अलीबाग (संयोजक संस्था) से ग्रहण करते हुए श्रीमती इंदुमति झा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) तथा शाखा प्रबंधक।

नराकास दुर्गापुर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन 2025 के अवसर पर अंचल कार्यालय, दुर्गापुर को प्रदत्त द्वितीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए, श्री संजीव कुमार अंचल प्रमुख, दुर्गापुर एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), श्री आनंद बिहारी साव।

सीएसआर गतिविधियां

अंचल कार्यालय, आगरा द्वारा आयोजित सीएसआर गतिविधि के अंतर्गत रुनकुट्टा स्थित सुर कुटीर में रूम हीटर एवं डिनर प्लेट्स वितरित करते हुए श्री देवार्चन साहू, अंचल प्रबंधक, आगरा। दृष्टव्य हैं श्री कृष्ण कुमार, उप अंचल प्रबंधक, आगरा एवं अन्य अधिकारीगण।

अंचल कार्यालय, आगरा द्वारा विजय नगर स्थित कंपोजिट विद्यालय में आयोजित सीएसआर गतिविधि के अंतर्गत विद्यालय सौंदर्यीकरण कार्यक्रम के दौरान वृक्षारोपण करते हुए श्री कृष्ण कुमार, उप अंचल प्रबंधक, आगरा। दृष्टव्य हैं अन्य अधिकारीगण।

श्री संजीव कुमार मक्कड़, उप अंचल प्रबंधक, लुधियाना सतर्कता जागरुकता सप्ताह 2025 के दौरान आयोजित सीएसआर गतिविधि के अंतर्गत गवर्नमेंट आयुर्वेदिक हॉस्पिटल, मॉडल ग्राम, लुधियाना को बैटरी एवं इन्वर्टर सेट प्रदान करते हुए। साथ में हैं: श्री आशीष पाल सिंह, सतर्कता अधिकारी, पंजाब नैशनल बैंक।

भारतीय बैंकिंग व्यवस्था में कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं सुरक्षा का महत्व

नवीन कुमार खांडल
मुख्य संकाय
एसटीसी, जयपुर

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र देश की आर्थिक संरचना की नींव है। बैंक न केवल आम जनता की बचत को सुरक्षित रखते हैं, बल्कि उन्हें उत्पादक क्षेत्रों में प्रवाहित कर आर्थिक गतिविधियों को गति भी देते हैं। ऐसे में बैंकिंग सेक्टर में कॉरपोरेट गवर्नेंस और सुरक्षा का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है। यह दोनों ही बैंकिंग संस्थानों की विश्वसनीयता, पारदर्शिता और स्थिरता के लिए आवश्यक स्तंभ हैं।

आज जब डिजिटल लेन-देन, साइबर जोखिम, वैश्विक नियामकीय मानक और बढ़ती प्रतिस्पर्धा बैंकिंग सेक्टर को प्रभावित कर रहे हैं, तब उत्तम कॉरपोरेट गवर्नेंस तथा मजबूत सुरक्षा व्यवस्था भारतीय बैंकों की स्थिरता और विकास के लिए अनिवार्य हो चुकी है।

क्या है कॉरपोरेट गवर्नेंस?

कॉरपोरेट गवर्नेंस का अर्थ है-प्रबंधन, निदेशक मंडल, शेयरधारकों और अन्य हितधारकों के बीच पारदर्शी, जिम्मेदार और नैतिक तरीके से कार्य करने की प्रणाली। बैंकिंग के संदर्भ में कॉरपोरेट गवर्नेंस यह सुनिश्चित करता है कि-

- निर्णय पारदर्शी हों
- जोखिम का आकलन सही हो
- जिम्मेदारियां स्पष्ट हों
- ग्राहक एवं समाज के हितों की रक्षा हो
- वित्तीय अनुशासन बना रहे

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में कॉरपोरेट गवर्नेंस का ढांचा RBI, SEBI, वित्त मंत्रालय तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों (जैसे Basel Committee) के निर्देशों पर आधारित होता है।

1. भारतीय बैंकिंग में कॉरपोरेट गवर्नेंस की आवश्यकता

- **बढ़ते जोखिम और NPA की चुनौतियां**- वर्षों से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में बढ़ते Non-Performing Assets (NPA) ने भारतीय बैंकिंग की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगाया है इसके समाधान के लिए मजबूत गवर्नेंस आवश्यक है।
- **डिजिटल बैंकिंग का तीव्र विस्तार**- UPI, नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल लोन प्लेटफॉर्म ने बैंकों की जिम्मेदारियों को बढ़ाया है। पारदर्शिता और सुरक्षा दोनों अनिवार्य हो गए हैं।
- **ग्राहक संरक्षण और विश्वास बनाए रखना**- बैंकिंग का मूल आधार भरोसा है। जब गवर्नेंस मजबूत होती है, तब ग्राहक निश्चिंत होकर बैंक पर विश्वास करते हैं।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धा और अंतरराष्ट्रीय मानक**- भारतीय बैंकिंग को विदेशी निवेश, रेटिंग एजेंसी और वैश्विक वित्तीय संस्थाओं की अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करना होता है।
- **धोखाधड़ी के मामलों में वृद्धि**- हाल के वर्षों में बैंक धोखाधड़ी (Bank Frauds) में वृद्धि ने गवर्नेंस की मजबूती को और आवश्यक बना दिया है।

2. बैंकिंग में कॉरपोरेट गवर्नेंस के मुख्य घटक

2.1. बोर्ड की संरचना और स्वतंत्रता

योग्य, अनुभवी और विविध पृष्ठभूमि वाले निदेशक, स्वतंत्र निदेशकों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व, स्पष्ट भूमिकाएं और जिम्मेदारियां

2.2. जोखिम प्रबंधन ढांचा (Risk Management Framework)

क्रेडिट जोखिम, मार्केट जोखिम, ऑपरेशनल जोखिम, साइबर जोखिम भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) जोखिम प्रबंधन समितियों की स्थापना अनिवार्य करता है जिससे बैंक हर तरह के जोखिम का समय पर आकलन कर सकें।

2.3. पारदर्शिता एवं प्रकटीकरण (Transparency & Disclosure)

वित्तीय रिपोर्टिंग में ईमानदारी, बड़े ऋण (Large Exposure) का खुलासा, ऑडिट रिपोर्टों का समय पर प्रकाशन,

बैलेंस शीट की शुद्धता।

2.4. आंतरिक नियंत्रण एवं ऑडिट (Internal Control & Audit)

आंतरिक ऑडिट (Internal audit), वैधानिक ऑडिट (Legal audit), अनुपालन तंत्र (Compliance audit), व्हिसटल ब्लोअर तंत्र (Whistle Blower Mechanism)

2.5. ग्राहक और हितधारक संरक्षण

शिकायत निवारण तंत्र मजबूत, ग्राहक पारदर्शिता में वृद्धि, डेटा सुरक्षा और गोपनीयता, बैंकिंग सुरक्षा (Security in Banking)

सुरक्षा दो स्तरों पर काम करती है-

- **भौतिक सुरक्षा (Physical security)**

शाखा, ATM, ट्रेजरी, नकद प्रबंधन, शाखा में सुरक्षा कर्मी, CCTV

- **डिजिटल और साइबर सुरक्षा**

आज बैंकिंग सुरक्षा का बड़ा हिस्सा डिजिटल माध्यमों पर निर्भर है:-

मुख्य साइबर सुरक्षा तत्व

1. **डेटा सुरक्षा (Data Security)**

ग्राहकों के वित्तीय डेटा की रक्षा करना साथ ही गोपनीयता बनाए रखना।

2. **नेटवर्क सुरक्षा**

फायरवॉल, IDS/IPS सिस्टम, सुरक्षित सर्वर, एन्क्रिप्शन टेक्नोलॉजी।

3. **डिजिटल लेनदेन की सुरक्षा**

दो-स्तरीय प्रमाणीकरण (2FA-two factor authentication), ओटीपी आधारित सिस्टम, बायोमेट्रिक और UPI PIN ।

4. **एंटी-फ्रॉड टेक्नोलॉजी**

एआई (AI) आधारित फ्रॉड मॉनिटरिंग, पैटर्न एनालिसिस, रीयल-टाइम अलर्ट।

5. **कर्मचारी जागरूकता**

- साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण, फिशिंग पहचान, code of conduct की अनुपालन, SOP का पालन।

3. **कॉरपोरेट गवर्नेंस और सुरक्षा से मिलने वाले लाभ**

1. **बैंक की विश्वसनीयता बढ़ती है।**
   - अच्छे गवर्नेंस और सुरक्षा वाले बैंकों में NPAs कम होते हैं और ग्राहक संतुष्टि अधिक।
2. **वित्तीय पारदर्शिता**
   - निवेशक और नियामक बैंक की वास्तविक स्थिति समझ पाते हैं।
3. **तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहन**
   - सुरक्षा मजबूत होने पर डिजिटल प्लेटफॉर्म का विस्तार अधिक तेजी से होता है।
4. **वैश्विक स्तर पर स्वीकार्यता**
   - अंतरराष्ट्रीय निवेशकों का भरोसा बढ़ता है जिससे पूंजी प्रवाह तेज होता है।
5. **परिचालन (operation) कार्यकुशलता**
   - अनुशासित, पारदर्शी और सुरक्षित प्रक्रियाएं लागत कम करती हैं और उत्पादकता बढ़ाती हैं।
6. **दीर्घकालिक (long term) लाभदायक वृद्धि**
   - गवर्नेंस और सुरक्षा सतत् विकास (Sustainable Growth) का आधार बनते हैं।

4. **भारतीय बैंकिंग में कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियां**

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में निर्णय लेने की धीमी प्रक्रिया, राजनीतिक हस्तक्षेप (Loan Sanctioning आदि में), NPA का इतिहास, डिजिटल फ्रॉड में वृद्धि, कर्मचारी प्रशिक्षण का अभाव, Legacy of IT Systems in government banks, बड़े कॉरपोरेट ग्राहकों में जोखिम का केंद्रीकरण

इन चुनौतियों का समाधान ही बैंकिंग क्षेत्र के भविष्य को सुरक्षित कर सकता है।

5. **कॉरपोरेट गवर्नेंस और बैंकिंग सुरक्षा का भविष्य**

1. **एआई (AI) आधारित कॉरपोरेट गवर्नेंस मॉनिटरिंग**
   - कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ऑडिट, अनुपालन, धोखाधड़ी की निगरानी में बड़ा योगदान देगी।
2. **ब्लॉकचेन आधारित डेटा सुरक्षा**
   - UPI और डिजिटल लेनदेन में ब्लॉकचेन सुरक्षा का उपयोग बढ़ेगा।

3. **जोखिम आधारित पर्यवेक्षण Risk-Based Supervision (RBS) का विस्तार**
   - भारतीय रिज़र्व बैंक RBI पहले ही इसे लागू कर चुका है, भविष्य में इसकी मॉनिटरिंग और कड़ी होगी।
4. **साइबर सिक्योरिटी का मजबूत ढांचा**
   - बैंक Cyber Drills, Threat Intelligence Systems और Zero Trust Architecture अपनाएंगे।
5. **ग्राहक केंद्रित सुरक्षा मॉडल**

Behavioral Biometrics, स्वर प्रमाणीकरण (Voice Authentication), एआई (AI) आधारित धोखाघड़ी की पहचान Fraud Detection

6. **निदेशक मंडल का प्रोफेशनलाइजेशन**
   - भविष्य में बोर्ड सदस्य तकनीकी, कानूनी और जोखिम प्रबंधन में विशेषज्ञ होंगे।
7. **डिजिटल बैंक और नियो-बैंकिंग का उभार**
   - इन संस्थानों में सुरक्षा और गवर्नेंस के नए मानदंड स्थापित होंगे।

निष्कर्ष

भारतीय बैंकिंग प्रणाली तेज गति से बदल रही है। डिजिटल युग, ग्लोबल प्रतिस्पर्धा और तकनीकी विकास ने बैंकिंग के सामने नए अवसरों के साथ नई चुनौतियां भी रखी हैं। ऐसे दौर में कॉरपोरेट गवर्नेंस और सुरक्षा किसी विकल्प की तरह नहीं, बल्कि बैंकिंग की जीवनरेखा बन चुके हैं।

उत्तम गवर्नेंस बैंक को पारदर्शिता, जिम्मेदारी और नैतिकता सुनिश्चित करता है, जबकि मजबूत सुरक्षा बैंकिंग लेन-देन को सुरक्षित और विश्वसनीय बनाती है। दोनों ही मिलकर भारत की वित्तीय प्रणाली की मजबूती, स्थिरता और भविष्य की प्रगति को सुनिश्चित करते हैं।

भारतीय बैंकिंग का भविष्य तभी सुरक्षित और उज्ज्वल होगा, जब कॉरपोरेट गवर्नेंस और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी।

व्यूह-रचना

मोहित कुमार गर्ग
वरिष्ठ प्रबंधक
मंडल कार्यालय, राजकोट

चंद्रतनय ने जन्म लेकर, पांडव कुल विस्तार किया।
शौर्य साहस से कुल रक्षा हेतु, चक्रव्यूह को सरोकार किया।।

अर्जुन कृष्ण अनुपस्थिति में, पाण्डवों पर उपकार किया।
जब द्रोण ने व्यूह रचनाकर, रणभूमि में हाहाकार किया।

धर्मराज हो व्याकुल व्यलित, माधव का मन विचार किया।
संकल्प ले माधवशिष्य ने, अपने कुल पर उपकार किया।।

पितृ गौरव को गरिमामय करे पुत्र, इस हेतु व्यवहार किया।
धर्म ध्वजा की रक्षा हेतु, एक षोडस ने रणहुंकार किया।।

चढ़ा प्रत्यंचा, घोर गर्जनकर, अरिदल में जाना स्वीकार किया।
केशवप्रिय उस पार्थतनय ने, प्रियजनों को अंतिम नमस्कार किया।।

शंख नाद कर सिंह जैसे, सकट सेना का संहार किया।
वायु से वेग सावन के मेघ, पापाग्नियों पर मूसलाधार किया।।

छः द्वार भेद सकल विशेष ने, महारथियों पर प्रहार किया।
हुए पराजित सब सूर वीर, रक्त घुमिल जब अहंकार हुआ।।

सिंह शावक ने जब कुकरों का कौशल दुशवार किया।
छल कपट मर्यादा मर्दन कर पृष्ठ स्थल पर वार किया।।

रथविहीन उस महारथी ने, रथ के पहिये को शिरोधार किया।
कुरुक्षेत्र ने नतमस्तक हो, अभिमन्यु-प्राणाहुति को स्वीकार किया।।

कॉरपोरेट गवर्नेंस प्राथमिकताएं : एक संक्षिप्त अवलोकन

जय मावर
सहायक महाप्रबंधक
बोर्ड एवं समन्वय प्रभाग, प्रधान कार्यालय

प्रभावी कॉरपोरेट गवर्नेंस संगठनात्मक अखंडता की रक्षा करने तथा दीर्घकालिक मूल्य को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। निदेशक मंडल को हितों के टकराव की पहचान करने और उनके प्रभावी प्रबंधन के प्रति सदैव सतर्क रहना चाहिए, ताकि निर्णय-प्रक्रिया निष्पक्ष और विश्वसनीय बनी रहे। इसके साथ-साथ सूचना असमानता को कम करना भी अत्यंत आवश्यक है- अर्थात वह स्थिति जब कुछ हितधारकों के पास दूसरों की तुलना में अधिक या बेहतर जानकारी होती है- क्योंकि इससे निर्णय-क्षमता प्रभावित होती है और गवर्नेंस प्रणाली में विश्वास कम कर सकती है।

स्वामित्व और प्रबंधन के बीच स्पष्ट विभाजन आज भी अनिवार्य है। एक बार जब दायित्व सौंप दिए जाते हैं, तो स्वामियों को दैनिक परिचालन में अनावश्यक हस्तक्षेप से बचना चाहिए, जिससे प्रबंधन रणनीति के प्रभावी क्रियान्वयन पर ध्यान केंद्रित कर सके और साथ ही बोर्ड के प्रति उत्तरदायी बना रहे। बोर्ड स्तर पर स्वतंत्रता अत्यंत महत्वपूर्ण है; निदेशकों को निष्पक्ष विवेक का प्रयोग करना चाहिए और प्रबंधन के निर्णयों पर मात्र मुहर लगाने वाली संस्था नहीं बनना चाहिए। संगठन के आकार और जटिलता के अनुरूप सशक्त जांच-पड़ताल एवं संतुलन की व्यवस्थाएं अनुशासित निगरानी सुनिश्चित करती हैं।

नियामकीय अनुपालन और पारदर्शी प्रकटीकरण प्रथाएं मूलभूत अपेक्षाएं हैं, जो संगठन को विधिक, वित्तीय तथा प्रतिष्ठात्मक जोखिमों से सुरक्षित रखती हैं। अल्पसंख्यक शेयरधारकों के हितों की रक्षा करना तथा सभी हितधारकों के साथ समान और न्यायसंगत व्यवहार सुनिश्चित करना, कंपनी की विश्वसनीयता और स्थिरता को और सुदृढ़ करता है। इन सिद्धांतों को स्पष्ट जवाबदेही ढांचे और नैतिक मूल्यों पर आधारित संगठनात्मक संस्कृति का समर्थन प्राप्त होना चाहिए, क्योंकि कॉरपोरेट आचरण का दीर्घकालिक स्थिरता पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

रणनीतिक दृष्टि से, बोर्ड को नेतृत्व उत्तराधिकार की प्राथमिकता निर्धारित करनी चाहिए, ताकि नियोजित अथवा आकस्मिक परिवर्तन की स्थिति में निरंतरता बनी रहे। उभरते जोखिमों और बदलते व्यावसायिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए दूरदर्शी जोखिम प्रबंधन दृष्टिकोण अब और अधिक आवश्यक हो गया है। मानव संसाधन पर निगरानी- जिसमें प्रतिभा प्रतिधारण, कर्मचारी सहभागिता और न्यायसंगत पारिश्रमिक शामिल हैं—प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त का महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है। इसी प्रकार, सुव्यवस्थित कार्यकारी पारिश्रमिक ढांचे नेतृत्व के प्रोत्साहनों को संगठनात्मक प्रदर्शन और हितधारकों की अपेक्षाओं के साथ संरेखित करने में सहायक होते हैं।

अंततः, बोर्ड को कॉरपोरेट नागरिकता और ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और गवर्नेंस) उत्तरदायित्वों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सांविधिक अनुपालन से परे, पर्यावरणीय और सामाजिक प्राथमिकताओं को रणनीति में एकीकृत करना संगठन की प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करता है और उत्तरदायी कॉरपोरेट नेतृत्व की आधुनिक अपेक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है।

काव्य सरिता

कदम जो बढ़े विश्वास के साथ
(पहला दिन : एक नया अध्याय)

शुभम कुमार
विधि अधिकारी
मंडल कार्यालय, नगांव

जब स्वप्नों ने संकल्प का हाथ थामा,
तब सफलता ने खुद आगे बढ़कर सलाम किया।
आज उस राह पर पहला कदम रखा है,
जहां कर्तव्य है, जिम्मेदारी है – और गर्व भी बेहिसाब किया।

पंजाब नैशनल बैंक
एक संस्था नहीं, एक परंपरा है।
एक नाम नहीं, एक भरोसा है।
एक काम नहीं, एक सेवा है।

मैं आया हूं यहां कानून की लौ लेकर,
हर अनुबंध, हर सलाह में पारदर्शिता लेकर।
जहां न्याय और नीति चले साथ-साथ,
और हर फैसले में हो जनहित की बात।

मैं सिर्फ एक विधि अधिकारी नहीं,
मैं उस दीवार की ईंट हूं जो भरोसे से जड़ी है।
जहां ग्राहक, संस्थान और कानून–
तीनों का संतुलन ही असली जीत की घड़ी है।

चल पड़ा हूं एक लम्बे सफर पर,
जहां हर दिन एक नई सीख होगी।
पीएनबी की सेवा में खुद को ढालते हुए,
हर चुनौती में एक नई जीत होगी।

नमन है उस पहले दिन को,
जहां मैं एक नाम से बढ़कर – एक जिम्मेदारी बन गया।
पीएनबी का हिस्सा बनकर,
मैं एक बदलाव की कहानी बन गया।

जिस नाम से पुकारो, उस नाम में वो

दुर्गेश श्रीवास्तव
मुख्य संकाय
उन्नत अध्ययन संस्थान, दिल्ली

लल्ला हैं बाबा-मैया के
हैं सखाओं के कृष्णा वो,
राधा-रानी के कान्हा हैं,
मीरा के घनश्याम हैं वो
गोपीनाथ गोपियों के
रंगरूप से श्याम है वो
गोवर्धन उठा बने गिरधारी
गौ सेवक गोपाल हैं वो
मुरलीधर-मनमोहन हैं,
यमुना जी के तट पर वो
वो दुर्योधन के छलिया हैं,
केशव-माधव हैं पार्थ के वो
प्रभु परशुराम ने दिया सुदर्शन
चक्रधारी भगवान हैं वो
मस्तक शिशुपाल का काटा
अहंकारियों का काल हैं वो
आश्रय हैं, निर्बल-दुखियों के
इस कारण नारायण हैं वो
चक्षु से वो कमलनयन हैं
पीले वस्त्र से पीताम्बर वो
गोकुल में बस इक ग्वाला हैं
जगदीश्वर-जगन्नाथ हैं वो
मधु और असुर मुर का वध करके
मधुसूदन और मुरारी वो
समर हुआ जब जरासंध से
विजयी हुआ जो हर बार हैं वो
स्वधरा से मिटाने रक्तपात
अपयश ले रण-छोड़-दास हैं वो
नवनगर किया निर्माण सुदूर
अपराजित-द्वारिकाधीश हैं वो
नाम अनंत हैं प्रभु के, पर
जिस नाम से पुकारो, उस नाम में वो।

काव्य सरिता

संवाद है मेरा नियति से

आशुतोष त्रिपाठी
मुख्य संकाय
उन्नत अध्ययन संस्थान, दिल्ली

यूं ही मैं बैठा एक दिवस और पास में हलचल होती है।
मुड़ के देखा तो नियति है जो मुझमें खोई होती है।।
मैंने पूछा आज यहां क्यों, बोली तुमसे मिलने आई हूं।
आओ हम संवाद करें कुछ-कुछ ऐसी इच्छा होती है।।

मैं बोला अहा कहो नियति जो कुछ भी कहने आई हो।
अवसर पर साधुवाद तुम्हें हर शब्द तुम्हारा मोती है।।
उपहास की मुद्रा उसने ली बोली हठ क्यूं नहीं तजते तुम।
अकारण संघर्ष को त्यागो तुम किस्मत तुम्हारी खोटी है।।

विचारमग्न अचरज में था मैं क्या ऐसा भी होता है!
जो नियति असाध्य लगे वो सामने खड़ी होती है।।
संकल्प किया उसी क्षण उसकी बातों में नहीं आना है।
संघर्ष का साथ न छोड़ूं कि सुगम विजय कहां होती है।।

बोला मैं नियति जाने दो तुम प्रयास तो धर्म हमारा है।
कर्तव्य मेरा अटल है, सोने दो जो किस्मत सोती है।।
ये जानो, सतत निष्काम कर्म ही पथिक का मार्ग बनाते हैं।
और जितने दुर्गम हों पथ उतनी सुंदर स्मृतियां होती है।।

मैं तो गीता का साधक हूं, कर्मविमुख कहां हूंगा।
योगेश्वर मेरे सारथी हैं, बस सब उनकी महिमा होती है।।
कर्मफल का सिद्धांत स्वयं श्रीकृष्ण ने समझाया है।
बिन कर्म किए धर्मध्वज की जयकार कहां ही होती है।।

कहा नियति ने अच्छा मैं तो बस चिंतित होकर आई थी।
तुम जैसे थे रहो वही बस ऐसी मेरी विनती है।।
मैं बोला संदेह न रखना तुम मुझको ऐसे ही पाओगी।
तुम पल-पल परखो मुझको चाहे जितनी कठिन चुनौती है।।

हिमालय ईश्वर का वरदान

आशुतोष श्रीवास्तव
उप प्रबंधक
मंडल कार्यालय, गोरखपुर

खड़ा हिमालय, मौन मगर वाणी है उसकी गूढ़,
अडिग रहा सहस्र शताब्दियों से, समय जहां तक दृढ़।
धरती का मस्तक, आकाश का मान,
उसकी ऊंचाई में बसता है भगवान।

श्वेत शिखरों पर झिलमिल प्रकाश,
जैसे तप की अग्नि में स्नान हो विशेष।
ना डोला युगों से, ना टूटा प्रहारों से,
स्थिर खड़ा है सत्य अपने आधारों से।

उसकी गोद से नदियां झरती जीवन बन,
गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र - करतीं जग पावन।
ये ही हैं धरती का श्वास, अमृत का स्रोत,
जो सींचें जीवन, जो भरें प्राणों में जोत।

उसकी घाटियों में जड़ी-बूटियों का धन,
हर कण में छिपा औषधि का जीवन।
वनस्पति और जीव-जगत पावन छांव में पलें,
मानव के कल्याण हेतु वरदान रूपी बन मिलें।

हिमालय - तू केवल शिखर नहीं प्रताप,
तू है ईश्वर का दिया अद्भुत अनुपम आप।
तेरी निस्तब्धता में योग का संगीत,
तेरे चरणों में साधना की प्रीत।

हम शीश झुकाते हैं मां प्रकृति के द्वार,
तेरे वरदान से ही है जग साकार।
तू जोड़ता मानव को आत्मा के भाव से,
हे हिमालय, नमन् तुझे - हर श्वास, हर छांव से।

कॉरपोरेट गवर्नेंस के लाभ

गुंजन गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
बोर्ड एवं समन्वय प्रभाग, प्रधान कार्यालय

कॉरपोरेट गवर्नेंस निवेशकों का विश्वास सुदृढ़ करने तथा शेयरधारक मूल्य में वृद्धि के लिए एक मूलभूत स्तंभ के रूप में कार्य करता है। एक सुव्यवस्थित ढांचे के रूप में यह प्रबंधन, निदेशक मंडल, शेयरधारकों एवं अन्य हितधारकों के बीच संबंधों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है, जिससे संगठन के प्रभावी संचालन को समर्थन मिलता है।

यद्यपि सुदृढ़ कॉरपोरेट गवर्नेंस की अवधारणा प्रायः सूचीबद्ध कंपनियों से जुड़ी मानी जाती है, किंतु गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं के लिए इसके लाभों पर अपेक्षाकृत कम चर्चा होती है। अनेक देशों में राष्ट्रीय कॉरपोरेट गवर्नेंस संहिताएं ऐसी प्रथाओं का उल्लेख करती हैं, जो भले ही निजी कंपनियों के लिए अनिवार्य न हों, फिर भी वांछनीय मानी जाती हैं। चूँकि गैर-सूचीबद्ध कंपनियां अधिकांश राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं, इसलिए शेयरधारक एवं निवेशक मूल्य में सुदृढ़ गवर्नेंस के योगदान को अधिक व्यापक मान्यता दिए जाने की आवश्यकता है।

प्रभावी कॉरपोरेट गवर्नेंस निवेशकों के बीच विश्वास, स्थिरता एवं भरोसे को बढ़ावा देता है। निम्नलिखित आठ कारक यह स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार गवर्नेंस किसी कंपनी के समग्र मूल्य को बढ़ा सकता है:

1. पूंजी प्रवाह में वृद्धि

सुदृढ़ वित्तीय प्रबंधन एवं रिपोर्टिंग प्रणाली निवेशकों और वित्तीय संस्थानों का विश्वास बढ़ाती है, जिससे पूंजी तक बेहतर पहुंच तथा वित्तपोषण की लागत में कमी आती है। पारदर्शी एवं उपयुक्त पूंजी संरचनाएं जोखिम की धारणा को कम कर पूंजी के अनुकूलन में सहायक होती हैं।

2. जोखिम न्यूनीकरण

एक व्यापक गवर्नेंस ढांचा जोखिम प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाता है। गैर-सूचीबद्ध कंपनियों के शेयरधारकों के लिए—जहां निकास के विकल्प सीमित हो सकते हैं—यह ढांचा उनके हितों की समुचित सुरक्षा का आश्वासन देता है। साथ ही, यह निकास रणनीतियों पर विचार को प्रोत्साहित करता है, जो संभावित निवेशकों के लिए निर्णायक कारक हो सकता है।

3. सुदृढ़ प्रतिष्ठा

पारदर्शी नीतियां एवं सुव्यवस्थित आंतरिक नियंत्रण कॉरपोरेट विश्वसनीयता को बढ़ाते हैं और ब्रांड प्रतिष्ठा को सशक्त बनाते हैं।

4. अधिक प्रभावी निर्णय-निर्माण

स्वामित्व और प्रबंधन के बीच दायित्वों का स्पष्ट विभाजन समयबद्ध एवं प्रभावी निर्णय लेने में सहायक होता है, जिससे संगठन की प्रतिक्रियाशीलता में सुधार होता है।

5. बेहतर रिपोर्टिंग एवं प्रदर्शन अंतर्दृष्टि

सटीक और प्रमाण-आधारित रिपोर्टिंग निर्णय प्रक्रिया को अधिक सूचित बनाती है, परिचालन अक्षमताओं को कम करती है तथा लाभ मार्जिन में सुधार ला सकती है।

6. सशक्त अनुपालन व्यवस्था

उचित गवर्नेंस यह सुनिश्चित करता है कि लागू कानूनों और विनियमों का पालन किया जाए। अनुपालन और जोखिम प्रबंधन कार्यों के बीच सामंजस्य यह आश्वासन प्रदान करता है कि पर्याप्त आंतरिक नियंत्रण स्थापित हैं और संगठन जनशक्ति, प्रक्रियाओं, प्रौद्योगिकी तथा सूचना के स्तर पर कुशलतापूर्वक संचालित होता है।

7. कर्मचारियों का बेहतर प्रतिधारण

स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त संगठनात्मक दृष्टि कर्मचारियों की प्रेरणा एवं प्रतिधारण को सुदृढ़ करती है। यह विशेष रूप से उन श्रम बाजारों में महत्वपूर्ण है जहां मिलेनियल्स—जो उत्तरदायी व्यावसायिक प्रथाओं को उच्च महत्व देते हैं—कार्यबल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

8. विघटनकारी व्यवहार एवं हितों के टकराव में कमी

औपचारिक नियम एवं पर्यवेक्षण तंत्र धोखाधड़ी, कदाचार

तथा हितों के टकराव के जोखिम को न्यूनतम करते हैं। स्वतंत्र निदेशकों की भागीदारी अल्पांश शेयरधारकों के लिए अतिरिक्त संरक्षण प्रदान करती है।

कॉरपोरेट गवर्नेंस का बढ़ता महत्व

कॉरपोरेट गवर्नेंस और बाजार प्रदर्शन के बीच संबंध अब और अधिक स्पष्ट होता जा रहा है। निवेशक निवेश निर्णय लेने से पूर्व गवर्नेंस प्रथाओं की गहन समीक्षा करते हैं, और निजी इक्विटी फर्में भी उन कंपनियों को प्राथमिकता देती हैं जिनके गवर्नेंस मानक सुदृढ़ होते हैं।

आज, सुदृढ़ गवर्नेंस के सिद्धांत शेयरधारकों का विश्वास अर्जित करने और दीर्घकालिक मूल्य को अधिकतम करने के लिए अपरिहार्य हैं। इसके अतिरिक्त, मजबूत गवर्नेंस ढांचे वाली कंपनियां आर्थिक अस्थिरता का सामना अधिक लचीलापन और तत्परता के साथ करने में सक्षम होती हैं। अतः कॉरपोरेट रणनीति के एक अभिन्न अंग के रूप में कॉरपोरेट गवर्नेंस को प्राथमिकता देना आज के परिदृश्य में अत्यावश्यक बन चुका है।

पुस्तक समीक्षा-तुम्हारी औकात क्या है- पीयूष मिश्रा

हाल ही में मैंने एक ऐसी किताब पढ़ी जिसने मुझे गहराई से प्रभावित किया। यह किताब है "तुम्हारी औकात क्या है- पीयूष मिश्रा" जिसे मशहूर कलाकार पीयूष मिश्रा ने लिखा है। यह पुस्तक एक बहुत ही अनूठी शैली में लिखी गई है। यह पीयूष मिश्रा के जीवन से संबंधित है, लेकिन उपन्यास के रूप में लिखी गई है।

पीयूष मिश्रा एक बहु-प्रतिभाशाली कलाकार हैं- वे अभिनेता, गायक, लेखक और कवि सब कुछ हैं। इस किताब में उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को बहुत ही ईमानदारी और खुलेपन से साझा किया है। इसे पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे हम सिर्फ उनकी बाहरी जिंदगी ही नहीं, बल्कि उनके मन के अंदर झांक रहे हों।

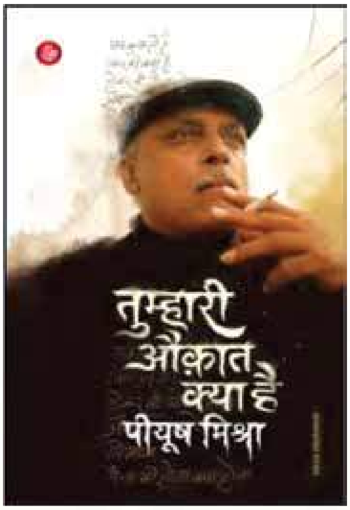

किताब में उन्होंने अपने संघर्ष, डर, असमंजस, असफलता और सफलता की कहानियां लिखी हैं। उन्होंने यह भी दिखाया है कि कैसे एक कलाकार का जीवन सिर्फ चमक-दमक से भरा नहीं होता, बल्कि उसके पीछे बहुत सारे सवाल, द्वंद्व और दर्द छिपे होते हैं।

इस किताब की सबसे खास बात इसकी सच्चाई और सरल भाषा है। इसे पढ़ते हुए लगता है कि लेखक सीधे आपसे बात कर रहे हैं। कभी-कभी इसका लहजा तीखा और टकराव भरा हो सकता है, लेकिन यही इसकी असली ताकत है।

यह किताब हमें सोचने पर मजबूर करती है-

- कि समाज लोगों को किस तरह जज करता है,
- कि हमें अपनी असली पहचान और आत्म-सम्मान को कैसे समझना चाहिए।
- और कि ईमानदारी से जीना क्यों जरूरी है।

अगर आप ऐसे साहित्य पढ़ना पसंद करते हैं जो गहरी सोच को जन्म देता है, आत्म-सम्मान, पहचान और निष्पक्षता जैसे मुद्दों पर बात करता है, तो यह किताब आपके लिए बिल्कुल सही है।

संक्षेप में, "तुम्हारी औकात क्या है- पीयूष मिश्रा" सिर्फ एक आत्मकथा नहीं है, बल्कि यह हमें अपनी जिंदगी और समाज को नए नजरिए से देखने के लिए प्रेरित करती है।

सुरेन्द्र बिश्नोई
मुख्य संकाय
स्टॉफ ट्रेनिंग सेंटर, लुधियाना

यात्रा वृतांत

अरुणाचल प्रदेश - बादलों, झीलों और शांति की धरती

टुम्पा पात्रा
प्रबंधक
नागेर बाजार, मंडल कार्यालय-कोलकता (उत्तर)

कभी-कभी जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब आत्मा को शहरों की भागदौड़ से विराम चाहिए होता है - कुछ पल अपने भीतर झांकने के, कुछ पल प्रकृति के संग बिताने के। मेरे लिए अरुणाचल प्रदेश की यह यात्रा ऐसा ही अनुभव थी - एक ऐसी भूमि जहां हर मोड़ पर सौंदर्य झरनों की तरह छलकता है, और हर हवा का झोंका दिल को छू जाता है।

यात्रा की शुरुआत - भालुकपोंग का हरियाला स्वागत:-

मेरी यात्रा की शुरुआत असम से हुई। जैसे-जैसे गाड़ी भालुकपोंग की ओर बढ़ी, वैसे-वैसे धरती का रंग बदलने लगा। पहाड़ों की हल्की ढलानें, घने जंगल और बीच से बहती कामेंग नदी - सबने मिलकर स्वागत किया।

भालुकपोंग की हवा में एक ताजगी थी। शाम के समय जब सूरज ढलने लगा, तो नदी पर सुनहरे रंग की परतें तैरने लगीं। दूर बच्चों की हंसी और पक्षियों की पुकार के बीच वह दृश्य जैसे किसी चित्रकार की कैनवास पर जीवंत हो उठा।

तवांग की राह - बादलों के बीच सफर:-

अगली सुबह मैं तवांग के लिए निकली। रास्ते में हर मोड़ जैसे किसी नए रहस्य को उजागर करता था। कभी धुंध में लिपटे देवदार के जंगल, कभी अचानक प्रकट होते झरने, और कभी ऊपर उड़ते सफेद बादल - सबने यात्रा को जादुई बना दिया।

तवांग पहुंचते ही सबसे पहले दर्शन किए तवांग मठ के - जो एशिया का दूसरा सबसे बड़ा मठ है। यहां की शांति अद्भुत थी। भिक्षुओं की मंत्रध्वनि, जलते दीपकों की मंद रोशनी और अगरबत्ती की सुगंध ने मन को भीतर तक शांत कर दिया। ऐसा लगा जैसे यहां हर सांस में आस्था और सुकून घुला हुआ है।

बुमला पास - देश की सीमा पर देशभक्ति का एहसास:-

अगले दिन मैंने अरुणाचल की सबसे ऊंची और रोमांचक जगहों में से एक - बुमला पास - का सफर किया। यह भारत-चीन सीमा पर स्थित है, समुद्र तल से लगभग 15,200 फीट की ऊंचाई पर।

रास्ता कठिन था, पर हर दृश्य अनुपम। पहाड़ों पर जमीं बर्फ, आसमान को छूती चोटियां और गूंजती ठंडी हवाएं - यह सब किसी स्वप्न जैसा लग रहा था।

जब वहां भारतीय सेना के जवानों को तिरंगे के साथ मुस्तैदी से खड़ा देखा, तो दिल गर्व से भर गया। इतनी ऊंचाई, इतनी ठंड, पर उनके चेहरे पर मुस्कान और समर्पण झलकता था। उस पल समझ आया कि यह धरती केवल सुंदर नहीं, बल्कि पवित्र भी है।

माधुरी झील - एक स्वप्निल दर्पण सी झील:-

बुमला से लौटते हुए रास्ते में मैंने देखा संगेत्सर झील, जिसे लोग माधुरी लेक के नाम से जानते हैं - क्योंकि फिल्म "कोयला" की शूटिंग यहां हुई थी।

यह झील मानो स्वर्ग का टुकड़ा हो। चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ और बीच में शांत जलराशि, जिसमें आसमान का प्रतिबिंब झिलमिला रहा था। पानी इतना निर्मल था कि झील में खड़े सूखे पेड़ों की छाया साफ दिखाई देती थीं।

मैंने वहां कुछ देर बस चुपचाप बैठकर उस सौंदर्य को महसूस किया - हवा में ठंडक थी, पर मन में अजीब-सी गर्माहट थी। ऐसा लगा जैसे प्रकृति खुद कोई कहानी सुना रही हो - मौन भाषा में, भावों के माध्यम से।

लोग, संस्कृति और स्वाद:-

अरुणाचल के लोग बेहद सरल, सच्चे और आत्मीय हैं। छोटी-छोटी दुकानों पर बैठकर जब मैंने स्थानीय थुकपा, मोमोज

और गर्म बटर टी का स्वाद लिया, तो लगा मानो यही जीवन का असली स्वाद है – सादगी, प्रेम और संतोष का।

उनकी मुस्कान, उनकी पारंपरिक पोशाक और उनकी भाषा की मधुरता ने इस यात्रा को और भी खास बना दिया।

वापसी – यादों से भरा हृदय:-

जब वापसी का समय आया, तो दिल भारी था। पहाड़ों की हवा, झील की शांति, और बुमला की गर्वभरी ठंडक – सब कुछ मन में बस गया था।

यह यात्रा मेरे लिए केवल एक भ्रमण नहीं थी, बल्कि आत्मा की एक यात्रा थी – जिसने सिखाया कि शांति कहीं बाहर नहीं, बल्कि प्रकृति के बीच और अपने भीतर मिलती है।

"अरुणाचल केवल देखने की जगह नहीं, महसूस करने की जगह है। वहां हर पत्थर, हर बादल, हर हवा में कविता बसती है।"

आदर्श अभिशासन

नितिका गुप्ता
प्रबंधक
शेयर विभाग, प्रधान कार्यालय

हरेक अभिशासन में प्रत्येक प्रयास को विश्वास का अधिकार हो।
पल-पल नैतिकता और पारदर्शिता जिसके मार्गदर्शक आधार हो।।

जवाबदेही अभिशासन के विकास की पोषक और पालनहार हो।
न्याय और अखंडता जिसके विजन के सिद्धांत और विचार हो।।

हितधारकों की बात सुनी जाए और उनको मताधिकार हो।
अभिशासन के हर निर्णय में उनकी भागीदारी हर बार हो।।

लाभ से परे हर काम में विश्वास से भरा हुआ सदाचार हो।
भरोसे संग प्रगति का सपना हर संगठन का साकार हो।।

अभिशासन को ऐसी नीति और प्रक्रियाओं से दिया गया आकार हो।
जिसमें केवल नैतिकता हो ना कभी भ्रष्टाचार और ना कदाचार हो।।

निष्पक्षता और समानता का ही जिसमें बस होता व्यवहार हो।
प्रबंधन और कर्मचारियों के हितों के बीच न कोई तकरार हो।।

वादे और संकल्प सदा पूरे हों, गर्म न अफवाहों का बाजार हो।
सार्थक अभिशासन के दम पर सुखी हमारा संगठन एवं पीएनबी परिवार हो।।

मित्रता का कर्ज

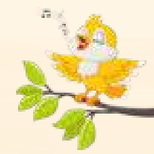

तमिल नाथ उपाध्याय
वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा)
मंडल कार्यालय, गोरखपुर

मुझ पर दोस्तों का प्यार, यूं ही उधार रहने दो।
बड़ा हसीन है, ये कर्ज, मुझे कर्जदार रहने दो।।

वो आंखें जो छलकती हैं, गम में, खुशी में, मेरे लिए।
उन सभी आंखों में सदा, प्यार बेशुमार रहने दो ।।

मौसम लाख बदलते रहें, आएं भले बसंत-पतझड़।
मेरे यारों को जीवन भर, यूं ही सदाबहार रहने दो।।

महज दोस्ती नहीं ये, बगिया है विश्वास की।
प्यार, स्नेह के फूलों से, इसे गुलजार रहने दो।।

वो मस्ती, वो शरारतें, न तुम भूलो, न हम भूलें।
उम्र बढ़ती है.. खूब बढ़े, जवां ये किरदार रहने दो।।

सुदृढ़ बैंकिंग सुरक्षा – ग्राहकों की प्राथमिकता

शशि सग्गड़
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, लुधियाना

सुरक्षा का अर्थ है सुनियोजित तरीके से रखरखाव एवं क्षमताओं का आकलन करते रहना। यह आकलन घर का, सड़क का, या फिर हमारे बैंक का हो सकता है। अपना बैंक भी हमें अपने घर जैसा ही प्यारा होना चाहिए क्योंकि हम दिन का अधिकतर समय यहीं बिताते हैं। जिस तरह घर को साफ और सुरक्षित रखने के लिए हम समय-समय पर तरह-तरह के काम करते रहते हैं, वो चाहे बिजली के उपकरण बदलना हो, गैस या चूल्हे की सफाई करना हो या फिर अस्त-व्यस्त पड़े कबाड़ का निपटान करना हो, उसी तरह बैंक को स्वच्छ और सुरक्षित रखने के लिए भी हमें वह हर संभव प्रयास करना चाहिए जो हम अपने घर के लिए करते हैं। इससे हम खुद के लिए तो सुरक्षित जगह बनाते ही हैं, अपने सहकर्मियों एवं अपने ग्राहकों की सुरक्षा और भरोसा बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाते हैं जिससे उन्हें एक सुखद और सुरक्षित वातावरण मिलता है तथा बैंक का लाभ और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। इस कार्य में हमारा सुरक्षा विभाग महत्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय भूमिका निभाता है।

बैंक बड़ी मात्रा में नकदी का लेन-देन और वित्तीय गतिविधियों का प्रबंधन करते हैं, जिससे वे अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों के लिए आकर्षक लक्ष्य बन जाते हैं। सुरक्षा विभाग ऐसे अनेक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष खतरों के विरुद्ध पहली सुरक्षा पंक्ति के रूप में कार्य करता है और डकैती, धोखाधड़ी तथा अन्य गैरकानूनी गतिविधियों को ससमय रोकने का प्रयास करता है जिससे ग्राहकों और कर्मचारियों की सुरक्षा तो सुनिश्चित होती ही है, बैंकिंग का माहौल भी भरोसेमंद बनता है।

किसी भी आपात स्थिति या प्राकृतिक आपदा जैसी घटनाओं के प्रभाव को कम करने के लिए सुरक्षा विभाग को सशक्त करना अत्यंत आवश्यक है। आपदाओं से निपटने के लिए सुरक्षा विभाग सुरक्षा गार्ड तैनात करता है और घटना के समय तुरंत प्रतिक्रिया करने के लिए उनको प्रशिक्षित करता है। आकस्मिक परिस्थितियों के दौरान सुरक्षा गार्ड सामान्यजन की व्यवस्थित निकासी का प्रबंधन करते हैं तथा भीड़ नियंत्रण के साथ-साथ सभी लोगों की सुरक्षा भी सुनिश्चित करते हैं।

बैंक की क्लोज्ड सर्किट टेलीविजन (सीसीटीवी) प्रणाली की निगरानी करना और संदिग्ध गतिविधियों का पता लगाना भी सुरक्षा विभाग की ही जिम्मेदारी होती है। सुरक्षा विभाग के कर्मी सीसीटीवी फुटेज का रियल-टाइम में विश्लेषण करके गार्डों को उचित निर्देश देते रहते हैं। सुरक्षा गार्ड बैंक परिसर के अंदर विभिन्न ग्राहकों के व्यवहार पर नजर रखते हैं तथा उन लोगों की पहचान करते हैं जो अनियमित या संदिग्ध व्यवहार के कारण सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं। इन संभावित खतरों से निपटने में सुरक्षा विभाग और गार्डों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

किसी भी संगठन के भीतर विभिन्न प्रक्रियाओं के सुचारू संचालन के लिए सुरक्षा विभाग का मजबूत होना अत्यंत आवश्यक होता है। सुरक्षा गार्डों की बहुमुखी जिम्मेदारियों और योगदानों को ध्यान में रखते हुए एवं वित्तीय संस्थानों की अखंडता बनाए रखने में उनकी प्रतिबद्धता को देखते हुए, सुरक्षा विभाग का सक्षम होना अनिवार्य हो जाता है।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अंचल कार्यालय, लुधियाना में उच्चाधिकारियों द्वारा सुरक्षाकर्मियों के समर्पण को सम्मानित किया गया।

सुरक्षा प्रोटोकॉल और प्रक्रियाओं को लागू करना एवं यह सुनिश्चित करना कि कर्मचारी और आगंतुक स्थापित दिशानिर्देशों का पालन कर रहे हैं, सुरक्षा विभाग की जिम्मेदारियों में शामिल होता है।

सुरक्षा विभाग बैंक के गुमनाम नायकों की गौरवमयी टीम है। ये लोग एक रक्षक, निवारक, प्रतिक्रियाकर्ता और विश्वास के दूत के रूप में बहुआयामी भूमिका निभाते हैं और बैंकों के सुचारू संचालन में महती सहायता प्रदान करते हैं। बैंकों में वित्तीय सुरक्षा और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए सुरक्षा विभाग का सुदृढ़ होना अति आवश्यक है। जिस तरह सीमा पर तैनात सुरक्षा कर्मियों के कारण आम जनता अपने घरों में सुरक्षित महसूस करती है, उसी तरह सुरक्षा विभाग भी हमारे ग्राहकों को बैंक परिसर में सुरक्षित होने का अनुभव कराता है।

बैंकों का बड़े जोखिम लेते हुए कारोबारी वृद्धि प्राप्त करने में, कर्मचारियों को सुरक्षित महसूस कराते हुए उन पर आने वाली हर विपत्ति का निवारण करने में, ग्राहकों का बैंकों पर विश्वास बढ़ाने में, सूझबूझ के साथ बड़ी से बड़ी चुनौतियों एवं समस्याओं का सामना करने में, सुरक्षा विभाग का महत्व और भी बढ़ जाता है।

अंत में, हमारे सुरक्षा विभाग और गार्डों के समर्पण एवं प्रतिबद्धता को सलाम करते हुए और अपने ग्राहकों की मनोदशा का वर्णन करते हुए मैं यही कहूंगी कि...

उस बैंक में या इस बैंक में, उलझन बड़ी है कि खोलूं मैं खाता किस बैंक में,
कोई कहे ये तो कोई कहे वो, पर खोलूं मैं खाता जहां सुरक्षा हो अव्वल रैंक में।

तू इतना ना डर

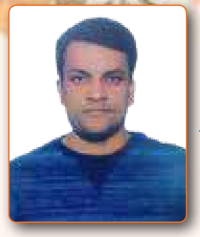

सुमित चौधरी
मुख्य प्रबंधक
शेयर विभाग, प्रधान कार्यालय

दुनिया की नजरों और बातों से, तू इतना ना डर ।
उसके तानों से अपने दिल को, तू यूं मायूस ना कर
हौंसला रख और दुनिया जहान का तू सामना कर ।
खुद पर कर भरोसा और रख थोड़ा सा तू सबर
खामोशी के साथ तू, अपना काम दिन-रात कर ।
एक दिन तुझे दिखने लगेगा अपने भीतर इसका असर
कल के चक्कर में तू अपना आज ना बर्बाद कर ।
मिलेगी मंजिल तुझे बस तू एक और प्रयास कर
राह में अगर जो गड्ढे आएं तो तू ऊंचे-लंबे डग भर ।
तूफानों से आंख मिला सैलाबों पर तू वार कर
ना आ दुनिया की बातों में, खुद तैर दरिया पार कर ।
मेहनत, हौसलों के परों से तू इतनी ऊंची परवाज भर
नभ से धरती तक तेरा नाम हो, नजरें दौड़ाए तू जिधर ।
घबराना ना तू राहों में, छाए जो गहरे अंधेरे अगर
थकना मना है राहों में, चल तू दिन-रात और शामों-सहर ।।
अभ्यास से तू खुद को बना हर काम में इतना प्रखर ।
खुद को सोने सा इतना तपा, बने कुन्दन तू ऐसे निखर
बातों का ना तुझपे कोई असर हो, कर मजबूत इतना जिगर ।
अपने सदकर्म से इतना तू मशहूर हो चाहे गांव हो या शहर ।।

प्रादेशिक भाषा की रचना

श्री उमाशंकर जोशी गुजराती भाषा के एक अत्यंत प्रतिष्ठित और प्रभावशाली कवि, लेखक और शिक्षाविद थे। उन्हें 1967 में उनके काव्य संग्रह **'निशीथ' (Nishith)** के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। ज्ञानपीठ के अलावा, उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार और अन्य कई सम्मान मिले।

उनकी कविताओं में मानवता, प्रकृति, स्वतंत्रता, दर्शन और गहन मानवीय संवेदनाओं का सुंदर मिश्रण मिलता है, जो उन्हें आधुनिक गुजराती साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनाता है। उनकी लेखन शैली में भावना (भाव पक्ष) और कला (कला पक्ष) का अद्‌भुत समन्वय था, जो पाठकों को गहराई से प्रभावित करता था। उन्होंने कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास और आलोचना सहित साहित्य के कई रूपों में अपना योगदान दिया। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'विश्वशांति', 'गंगोत्री', और 'निशीथ' उनके महत्वपूर्ण काव्य संग्रह हैं। संक्षेप में, उमाशंकर जोशी गुजराती साहित्य के एक नक्षत्र थे, जिनकी रचनाएं आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं।

यहाँ उनकी एक प्रसिद्ध कविता "निशीथ" का अंश प्रस्तुत है-साथ में सरल हिंदी अनुवाद भी।

गुजराती कविता: निशीथ (निशीथ)

શાંત રાતે ચાંદની વરસે,
નભના તારાં મૌન રહે;
હૃદયમાં કોઇ અજાણી વાણી,
મને મૌનમાં બોલાવે છે.
વિશ્વ વિશાળ છે, હું નાનકડો,
પણ મન મારે અનંત જાય;
અંધકારમાં દીવો બનીને,
આશાનો પ્રકાશ ઝળહળાય.

हिंदी भावार्थ

शांत रात में चाँदनी बरस रही है,
आकाश के तारे मौन हैं;
हृदय में कोई अनजानी वाणी
मुझे मौन के भीतर बुला रही है।
संसार विशाल है, मैं छोटा सा हूँ,
पर मेरा मन अनंत की ओर जाता है;
अंधकार में दीपक बनकर
आशा का प्रकाश चमक उठता है।

हर तस्वीर कुछ कहती है

कहते हैं कि कैमरा और तस्वीर झूठ नहीं बोलते हैं और वाकई में हर तस्वीर कुछ कहती है जो हमारे दिलो-दिमाग और अंतरात्मा को छू जाती है और हमें सोचने और उस पर कुछ लिखने के लिए प्रेरित करती है। क्या यह तस्वीर आपको लिखने के लिए प्रेरित नहीं कर रही है? तो उठाइए कलम और इस तस्वीर पर अपने मौलिक विचार (गद्य/पद्य) केवल 10 से 15 पंक्तियों में हिंदी यूनिकोड में टाइप कर हमें 28 फरवरी 2026 तक ईमेल पते pnbstaffjournal@mail.bank.in या राजभाषा विभाग की rajbhashavibhag@pnb.bank.in पर भेज दीजिये। कृपया प्रविष्टि में फोटो सहित अपना पूर्ण विवरण अवश्य लिखें। हस्तलिखित/रोमन लिपि में टंकित प्रविष्टियां स्वीकार नहीं की जाएंगी। केवल पीएनबी बैंक के स्टाफ सदस्य ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। प्रत्येक स्टाफ सदस्य की केवल एक प्रविष्टि पर विचार किया जाएगा। चुनी गई सर्वश्रेष्ठ प्रतिक्रियाओं को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा की थाती - हरियाणा के गुरुकुल

अर्चना कोचर
प्रबंधक सेवानिवृत्त, एलडीएम ऑफिस रोहतक

गुरुकुल में दी जाने वाली शिक्षा गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित थी, जो भारत की सबसे प्राचीन और गौरवशाली शिक्षा पद्धति थी। जिसमें शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न होकर जीवन के हर पक्ष को छूती थी। गुरुकुलों में वेद, संस्कृत, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन के साथ-साथ विज्ञान, गणित, तकनीकी विषय और खेल-कूद पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाता था।

अंग्रेजी माध्यम निजी स्कूलों और कॉन्वेंट की परंपरा ने शिक्षा को व्यावसायिक रंग में रंगना शुरू कर दिया है। आधुनिकता के नाम पर ये चमचमाते संस्थान छात्रों और अभिभावकों को अपनी चकाचौंध से आकर्षित करने में काफी हद तक कामयाब रहे हैं। केवल किताबी ज्ञान प्रदान करके इन्होंने शिक्षा प्रणाली को केवल डिग्री और नौकरी तक सीमित कर दिया है।

परिणामस्वरूप, इस शिक्षा पद्धति से विद्यार्थी अपनी बहुमूल्य धरोहर वेद-पुराण, ध्यान, योग, अनुशासन और संस्कार से वंचित रह जाते हैं। इन स्कूलों से निकले विद्यार्थी डॉक्टर या इंजीनियर तो बन जाते हैं, लेकिन एकलव्य जैसी समर्पित भावना विकसित नहीं हो पाती है।

आज जब शिक्षा व्यवसायिक रूप ले चुकी है और इसकी मूल भावनाओं पर आघात हो रहा है, तब हरियाणा के गुरुकुल भारतीय परंपरा और आधुनिकता का अद्वितीय संतुलन बनाए हुए हैं। ये इस परंपरा को आधुनिक समय में भी जीवित रखे हुए हैं।

हरियाणा में कई प्रमुख गुरुकुल जैसे गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल करनाल, गुरुकुल नीलोखेड़ी,गुरुकुल मोर मजीरा (हिसार), गुरुकुल फर्रुखनगर, गुरुकुल विश्वभारती रोहतक, गुरुकुल यमुनातट मंझावली फरीदाबाद इत्यादि है।

शिक्षा के व्यवसायीकरण में जहां कोचिंग सेंटरों में मोटी-मोटी ट्यूशन फीसों से विद्यार्थियों का दोहन हो रहा हैं तथा शिक्षा विद्यादान-महादान के लक्ष्य से भटककर भगवान से पहले गुरु पूजनीय की भावना को ग्रहण लगा चुकी है। वहीं हरियाणा के गुरुकुलों में शिक्षा का आधार व्यावसायिक शुल्क नहीं, बल्कि प्राचीन काल की तरह दान और सहयोग होता है।

आधुनिक समय में भी गुरुकुल प्रायः धार्मिक ट्रस्ट, समाजसेवी संस्थाएं, दानदाताओं और श्रद्धालुओं के सहयोग से संचालित होते हैं। कुछ गुरुकुलों को राज्य अथवा केंद्र सरकार से भी अनुदान प्राप्त होता है। विद्यार्थियों को प्रायः वहां निःशुल्क शिक्षा, भोजन और आवास मिलता है। समाज के सहयोग और सेवा-भाव पर आधारित इन गुरुकुलों का उद्देश्य दान से अर्जित धन का उपयोग अज्ञान के अंधकार को मिटाकर बच्चों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाना है।

इनका लक्ष्य केवल शिक्षा देना नहीं, बल्कि आधुनिकता की होड़ में खोते जा रहे आदर्श जीवन-मूल्यों को पुनः जागृत करना है। गुरुकुल आज भी भारतीय सभ्यता और संस्कृति की उस अनुपम धरोहर को संजोए हुए हैं, जिसने भारत को सम्पूर्ण विश्व के सामने श्रेष्ठता और गौरव का अद्वितीय प्रतीक बनाया है।

जैसे प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में विद्यार्थी प्रकृति के सानिध्य में रहते हुए गुरु से शिक्षा ग्रहण करते थे, उसी प्रकार ये संस्थान विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ-साथ अनुशासन, आत्मबल और जीवन-मूल्यों से भी संपन्न करते हैं तथा भारतीय परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर बच्चों को संस्कारयुक्त और सक्षम नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इन गुरुकुलों की विशेषता यह है कि यहां पर छात्र - जीवन अनुशासन, स्वावलंबन और भारतीय संस्कृति से गहराई से जुड़ा होता है। बच्चों को सुबह प्रार्थना, योग, गायत्री मंत्र और यज्ञ की शिक्षा दी जाती है, जिससे उनमें नैतिक मूल्यों और आत्मिक शक्ति का विकास होता है।

इन गुरुकुलों से निकले शिष्य डॉक्टर और इंजीनियर तो बनते हैं, लेकिन उनके भीतर आध्यात्मिक बल, चरित्र और

संस्कारों से परिपूर्ण शुद्ध भारतीय मूल्य भी संचारित होते हैं। यही कारण है कि हरियाणा के ये गुरुकुल शिक्षा और संस्कारों के अद्वितीय केंद्र माने जाते हैं।

जहां विद्या ज्ञान की शुरुआत प्रार्थनाओं, मंत्रोच्चारण और यज्ञ की आहुतियों से होती है, वहां विद्या ज्ञान की देवी माँ सरस्वती के साथ धर्म, ज्ञान, सत्कर्म और शुद्धि का स्वत: संचार हो जाता है। इन सबके साथ शिष्यों को आधुनिक विषयों जैसे विज्ञान, गणित, अंग्रेजी और कंप्यूटर की पढ़ाई भी कराई जाती है।

हरियाणा में स्थित ये गुरुकुल वेद-पुराण और आधुनिक शिक्षा का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करते हैं। प्रकृति की सौम्यता के बीच स्थित ये संस्थान केवल शिक्षा का केंद्र नहीं हैं, बल्कि चरित्र निर्माण और जीवन-मूल्यों की पाठशाला भी हैं। ये उस परंपरा का प्रतीक हैं, जहां भारतीय ज्ञान और आधुनिकता मिलकर बच्चों को उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करते हैं।

इस प्रकार, हरियाणा के गुरुकुल देश के भविष्य को स्वच्छ और स्वस्थ शारीरिक एवं मानसिक आधार देकर एक समृद्ध और संपन्न राष्ट्र की बुनियाद रखते हैं।

कुरुक्षेत्र, जिसे धर्मभूमि और गीता-स्थली कहा जाता है, शिक्षा और अध्यात्म की परंपरा के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां स्थित 'गुरुकुल कुरुक्षेत्र' की स्थापना आर्य समाज की विचारधारा से प्रेरित होकर की गई थी। जिसका उद्देश्य वेदों की सत्यता को पुन: स्थापित करना और भारतीय संस्कृति का संरक्षण करना है।

महाभारत काल में गुरु द्रोणाचार्य का गुरुकुल भी कुरुक्षेत्र में स्थित था। इसे प्राचीन ग्रंथों में ध्रोनाश्रम के नाम से जाना जाता है। इस गुरुकुल में पांडव और कौरव दोनों ही परिवारों के बच्चे धनुर्विद्या, शस्त्र विद्या, नीति शास्त्र और सामरिक कौशल की शिक्षा ग्रहण करते थे। यहां न केवल शारीरिक और तकनीकी शिक्षा दी जाती थी, बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिकता और आदर्श जीवन के सिद्धांत भी पढ़ाए जाते थे।

ध्रोनाश्रम का स्थान आज के कुरुक्षेत्र, हरियाणा में माना जाता है। इस प्रकार हरियाणा प्राचीन काल से ही शिक्षा और संस्कृति का केंद्र रहा है। यहां के गुरुकुल आज भी उस परंपरा को जीवित किए हुए हैं। ये अतीत की गौरवशाली परंपरा को वर्तमान की आवश्यकताओं से जोड़कर ऐसे नागरिक गढ़ रहे हैं, जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ संस्कारवान भी हों। यही इन्हें भारत की शिक्षा परंपरा का वास्तविक संरक्षक और भविष्य का मार्गदर्शक बनाता है।

{ कला दीर्घा }

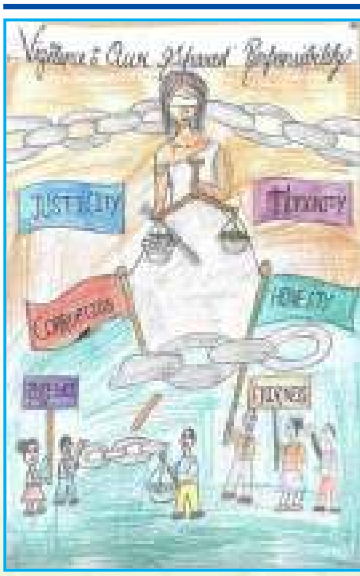

यशिता यादव
सुपुत्री डॉ. राजेश यादव, वरिष्ठ प्रबंधक
सीआरडीटी, प्रधान कार्यालय

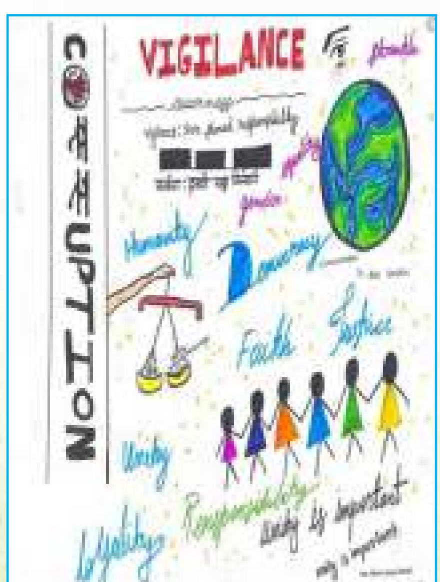

आद्या जायसवाल
सुपुत्री श्रीमती बिन्दु पंडित, वरिष्ठ प्रबंधक
डीबीटीडी, प्रधान कार्यालय

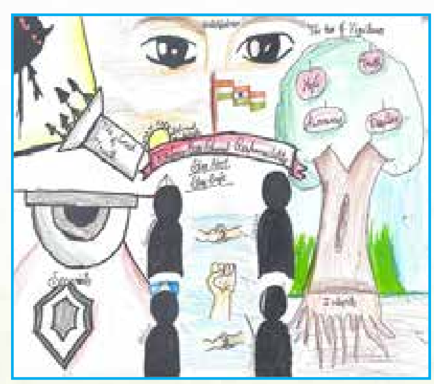

ख्वाहिश विज
सुपुत्री श्री गौरव विज, मुख्य प्रबंधक
एचआरडी, प्रधान कार्यालय

हर तस्वीर कुछ कहती है- उत्कृष्ट प्रविष्टियां

एक अक्षर से उजाला

कच्ची दीवारों में गूंज रहा,
ज्ञान का पहला स्वर- "अ"
छोटी आंखों में बड़े सपने,
अंधकार से लड़ने का बल।

सूरज की किरणें खिड़की से,
आशा बनकर आती हैं,
गुरू के शब्दों के संग-संग,
जिंदगियां राहे पाती हैं

नन्हें हाथ, कोरी स्लेटें,
भविष्य की लिखते कहानी,
एक अक्षर, एक विश्वास,
बदल दे पूरी जिंदगानी।

यह कक्षा नहीं, यह बीज है,
कल के उजले सवेरे का,
जहां शिक्षा बनती है शक्ति,
हर बच्चे के हौसले का।

विशाल अग्रवाल
उप मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय लुधियाना

गुरू बिन ज्ञान न होए

कक्षा में गूंजता ज्ञान का स्वर,
कर्म से चमकता छात्र का अंतर।
कठिनाई में राह दिखाते गुरुवर,
तेज धूप में वे बनते तरुवर।

किताबों से परे सिखाते जीवन,
कर्मठता से मिलता सच्चा दर्पण।
कौशल जगाते, सपनों को संवारते,
कठोर अनुशासन से भविष्य निखारते।

कभी डांट, कभी स्नेह का संग,
कर्म पथ पर देते सदा उमंग।
कृतज्ञ रहते छात्र हर पल,
वो बनाते सबका भविष्य उज्ज्वल।

किरण समान है उनका उपदेश,
ज्ञान से मिलता जीवन का संदेश।
कक्षा बने जब मंदिर ज्ञान का,
कर्म से खिलता भविष्य छात्र का।
तुम्हारा स्नेह अमृत-सा प्यारा,
यह गुरु-शिष्य का नाता न्यारा।

सरिता राय
वरिष्ठ प्रबंधक
मंडल कार्यालय, दक्षिण 24 परगना

"अ" से होता है

"अ" से होता है अंधेरा, अनिष्ट, अज्ञानी और अनपढ़
अजीब बात यह भी है कि अ से ही होता है अनार
जब श्यामपट पर लिखा जाता है अ से अनार
तब कितना अद्भुत होता है पूरी प्रक्रिया को देखना
अद्भुत तो यह भी है कि छोटे - छोटे बच्चे
अधखुली आँखों के साथ आते हैं स्कूल और
अ लिखते ही खुल जाती हैं खिड़कियां
निकल आती है धूप, अपने साथ लिए उजाला.....

अद्भुत यही है कि अ से अनार मिटा देता है अंधेरा
खा जाता है अज्ञान, पी जाता है अनिष्टता
और घोल देता है अनपढ़ का अन
आखिरी में बचता है अद्भुत, अविस्मरणीय, अप्रतिम, अनंत भविष्य ...

आशुतोष कुमार
राजभाषा अधिकारी
मंडल कार्यालय, हुबली

नया सवेरा

इस तस्वीर में कक्षा नहीं दिखती, एक नया सवेरा दिखता है। खिड़की से गिरती धूप जैसे हर बच्चे के माथे पर आशीर्वाद बनकर ठहर गई हो। शिक्षक ब्लैकबोर्ड पर "अ" लिख रहे हैं, पर वास्तव में वे अक्षर नहीं-जीवन की दिशा लिख रहे हैं। बच्चों की निगाहें उस उंगली पर टिकी हैं जो शब्दों को आकार दे रही है। यह ध्यान, यह सीखने की तृप्ति, किसी मंदिर की शांति से कम नहीं। हर बच्चा यहां सिर्फ विद्यार्थी नहीं, बल्कि कल की दुनिया का निर्माता है। छोटे-छोटे हाथों में बड़ी संभावनाएं छिपी हैं और शिक्षक उन पर विश्वास की रौशनी बिखेर रहे हैं। कक्षा में फैली सन्नाटे जैसी शांति, दरअसल ज्ञान की सबसे मधुर ध्वनि है। किताबें मेज पर रखी हैं, लेकिन असली पाठ तो बच्चों की चमकती आंखों में लिखा है। शिक्षक का धैर्य ही वह पुल है, जिस पर चढ़कर ये नन्हें कदम अपने भविष्य तक पहुंचेंगे। तस्वीर में मासूमियत का एक संसार बसता है- जहां हर बच्चा सीखने को उत्सुक है, जहां हर अक्षर आशा बनकर जन्म लेता है। यह दृश्य हमें याद दिलाता है कि शिक्षा किसी भवन या दीवार का नाम नहीं; यह तो वह उजाला है जो इंसान की आत्मा को रौशन कर देता है और जब गुरु-शिष्य का यह पवित्र संबंध साथ हो, तब कोई सपना अधूरा नहीं रहता।

मो. रहमान
अधिकारी, मंडल कार्यालय : दक्षिण 24 परगना

ज्ञानोदय

तस्वीर में जैसे ठहरा हुआ एक उजला सवेरा है,
कक्षा के भीतर सूरज का सुनहरा घेरा है।
गुरु की उंगली से जन्म ले रहा अक्षर "अ",
बच्चों की आंखों में जाग रहा नया पथ।
नन्हे चेहरों पर उम्मीदों की कोमल चमक है,
सीख की राहों में छुपी सपनों की महक है।
गुरु की आवाज जैसे शांति का झरना है,
हर बच्चे का मन जैसे खुलता सहज तराना है।
ज्ञान के इस कमरे में कोई छोटा-बड़ा नहीं,
यहां हर मन प्रकाश का प्यारा दर्पण है यहीं।
किताबों, अक्षरों, शब्दों का यह संसार,
बच्चों के लिए बनता है भविष्य का आधार।
धूप खिड़की से उतरकर जैसे आशीष देती है,
प्रत्येक पलक पर सीख की एक लकीर लिखती है।
गुरु का धैर्य बच्चों के मन को थामे रहता है,
हर कठिनाई पर विजय का विश्वास कहता है।
यह तस्वीर केवल दृश्य नहीं- एक भाव है,
यह शिक्षा का दीप है, यह गुरु का स्वभाव है।
नन्हे कदमों में कल की उड़ानें बसती हैं,
और गुरु की नजर में पूरी दुनिया हंसती है।

माताबिका बानिक
उप प्रबंधक, मंडल कार्यालय : दक्षिण 24 परगना

शिक्षा का महत्व

मुझे आज भी वह दिन याद है। जब मैं छोटी थी तो हमारे गांव में प्राइमरी स्कूल नहीं था। हमारे गांव से 10 किलोमीटर दूर एक स्कूल था। उस समय गांव में लड़कियों को पढ़ाते भी नहीं थे तो मैने अपने पापा से कहा कि मैं अवश्य पढूंगी और टीचर बनूंगी। मेरे पापा मुझे रोज साइकिल पर बैठा कर 10 किलोमीटर दूर गांव से स्कूल ले जाते थे और मैं मन लगाकर पढ़ती थी। अब मैने उच्च शिक्षा प्राप्त कर ली है और मैं भी एक स्कूल में टीचर हूं। मैंने अपनी पोस्टिंग गांव में ही करवा ली है। मैं गांव में लोगों के घर जाती हूं और पंचायत में भी यह कहती हूं कि सभी लड़कियों व लड़कों को स्कूल भेजिए। आज मैं बड़ी खुश हूं कि मेरे स्कूल में छोटे-छोटे बच्चे पढ़ने आते हैं और मैं गरीब बच्चों को आर्थिक रूप से सहायता भी करती हूं। इससे मुझे बहुत आत्म-संतुष्टि मिलती है। सच में बच्चे ही देश का भविष्य है उनकी शिक्षा बहुत आवश्यक है।

नीति मल्होत्रा
धर्मपत्नी विद्या भूषण मल्होत्रा, अधिकारी (सेवानिवृत्ति)
मंडल कार्यालय, जयपुर

आपके पत्र

इंडियन बैंक
Indian Bank

"पीएनबी प्रतिभा": अंक 66-01 (मानव संसाधन विकास एवं प्रशिक्षण विशेषांक)

आपके बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'पीएनबी प्रतिभा' का (मानव संसाधन विकास एवं प्रशिक्षण विशेषांक) अंक 66-01 प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। 'मानव संसाधन विकास एवं प्रशिक्षण' विषय पर केंद्रित पत्रिका का आवरण पृष्ठ विषयानुरूप है एवं इस विशेषांक को पूर्णत: परिभाषित करता है। पत्रिका की साज-सज्जा एवं कलेवर भी अत्यंत आकर्षक एवं मनोहारी है।

पत्रिका के इस अंक में संकलित समस्त रचनाएं विषयानुकूल, ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। मुख्यत: "बैंकों में प्रशिक्षण और विकास का महत्व", "बैंक के विकास में मानव संसाधन प्रबंधन की भूमिका", "राजभाषा हिंदी की मानव संसाधन विकास एवं प्रशिक्षण में अहम भूमिका", "डिजिटल होती मानव संसाधन प्रक्रियाएं", "अनुपालन से प्रतिबद्धता तक: जवाबदेही और कार्य-निष्पादन की संस्कृति का निर्माण", "जरूरी है", "मैं सड़क हूँ" एवं "बता दे दुनिया को" आदि रचनाएं अत्यंत प्रासंगिक एवं भावयुक्त हैं। साथ ही, पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा बढ़ा रहे हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक हेतु अशेष शुभकामनाएं।

सादर धन्यवाद ।

भवदीय

(राजेश कुमार सिंह)

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) इंडियन बैंक, प्रधान कार्यालय

इंडिया एक्ज़िम बैंक
India Exim Bank

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की ओर बढ़ता रुझान सभी क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है और इसकी उपयोगिता भी बढ़ रही है। ऐसे परिदृश्य में बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विषय बहुत ही प्रासंगिक है। इस अंक में प्रकाशित 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हम' तथा 'राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहन देने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग जैसे आलेख केवल ज्ञानवर्धक नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं पर भी प्रकाश डालते हैं। विशेष रूप से राजभाषा हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधी जानकारी रोचक एवं पठनीय है। इसके साथ ही पत्रिका में शामिल कविताएं भी रोचक हैं। साथ ही, राजभाषा और बैंकिंग गतिविधियों की तस्वीरें पत्रिका को और भी आकर्षक बना रही है। शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

संजय लांबा

उप महाप्रबंधक, भारतीय निर्यात-आयात बैंक

बैंक की तिमाही गृह पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा- बैंकिंग में कृत्रिम बुद्धिमता तथा राजभाषा" विशेषांक (जुलाई-सितंबर, 2025) हमें प्राप्त हुआ। प्रस्तुत अंक का आवरण पृष्ठ विषयानुरूप है जो इस विशेषांक को बखूबी परिभाषित करता है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख भावी भारतीय बैंकिंग परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग एवं चुनौतियाँ, भाषिक प्रोत्साहन में कृत्रिम मेधा आदि से संबंधित विविध पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। साथ ही, आलेख के माध्यम से म्यूल हंटर, एआई, जनरेटिव एआई आधारित चैट बॉट-राही, पीहू आदि के बारे में भी जानकारी दी गई है। आलेख 'कोटा दशहरा' सांस्कृतिक आलेख है। अंक में प्रकाशित अन्य रचनाएँ, कविताएं एवं गतिविधियों के छायाचित्र भी पत्रिका को विविध तापूर्ण एवं संग्रहणीय बनाते हैं । सामयिक विषय चयन एवं उपयोगी अंक के प्रकाशन हेतु आपको एवं संपादक मंडल को बधाई एवं आगामी अंक हेतु ढेर सारी शुभकामनाएं !

भवदीया,

(वन्दना पाण्डेय)

अंचल प्रबंधक (महाप्रबंधक) अंचल कार्यालय, हैदराबाद, पंजाब नैशनल बैंक

पत्रिका में शीर्षक के अनुसार एआई तथा राजभाषा विशेषांक पर उत्कृष्ट लेखों को शामिल किया गया है। पत्रिका के मुख्य आकर्षण एवं नवोन्मेषी पहलों की झलक आदरणीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशक एवं मुख्य महाप्रबंधक महोदय के सन्देश में मिल जाती है, जहाँ पीहू, व्हाट्सएप बैंकिंग ग्राहकों को सुगमता प्रदान कर रहें है वही राही और को-पायलट बैंक कर्मचारियों के लिए सहायक हैं।

संपादकीय में सुगम बैंकिंग सर्वजन बैंकिंग, 'यंत्राणि मनुष्येषु साधनं न तु प्रतिस्थानं' का उद्घोष डिजिटल बैंकिंग की सुविधाएं एवं सीमाएं तय करता है। तकनीकी मनुष्य की सहायक है उनका प्रतिस्थापन नहीं हो सकता। किन्तु एआई की सोचने, समझने और कार्य करने की क्षमता और मनुष्य की उस पर बढ़ती निर्भरता भी चिन्तन का एक महत्त्व होना चाहिए।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं साज-सज्जा आकर्षक है। बैंकिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपयोग और चुनौतियां, कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग और भावी बैंकिंग परिदृश्य, पीएनबी अध्ययन एवं प्रशिक्षण: प्रणाली एवं प्रबंधन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय बैंकिंग का भविष्य, बैंकों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग, म्यूल हंटर एआई: आधुनिक बैंकिग में जोखिम प्रबंधन, भारतीय बैंकिंग में बदलते आयाम चुनौतियां एवं अवसर, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, राजभाषा हिंदी संचार एवं संस्कार की धारा उल्लेखनीय लेख हैं।

इसके अलावा मेरी यादगार लद्दाख यात्रा, पुस्तक समीक्षा बैंकिंग की अनंत संभावनाएं, बुनियादी अस्तित्व, विकास और उत्कृष्टता का त्यौहार बोम्मई गोलू क्षेत्रीय पर्व, सरदार दयाल सिंह मजीठिया पत्रिका को विविधता प्रदान करते है। रोबोट युगीन मनुष्य, बिना संघर्षों के जीना क्या? मेरी रूह का टुकड़ा मेरी बेटी, बेटियों और एहसास कविताएं पत्रिका में चार-चांद लगाती है। लघुकथा 'एक खोया हुआ मित्र' अत्यंत मार्मिक और प्रेरक है। कुल मिलाकर पत्रिका का यह अंक संग्रहणीय है।

(दीपक सिंह)

अंचल प्रबंधक, वाराणसी
पंजाब नैशनल बैंक

पीएनबी प्रतिभा का जुलाई-सितंबर फ्लिप बुक लिंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है और वह पत्रिका की विषय सामग्री को दर्शाता हुआ प्रतीत होता है। वहीं संजीव कपूर, उप महाप्रबंधक द्वारा लिखित बैंकिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता : उपयोग एवं चुनौतियां, सुश्री एन.पी. निहारिका, वरिष्ठ प्रबंधक द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हम, सुश्री अनुष्का, मुख्य संकाय सदस्य द्वारा राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहन देने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्व बहुत ही स्तरीय लेख हैं।

श्री संदीप कुमार, प्रशिक्षण प्रमुख द्वारा पीएनबी अध्ययन एवं प्रशिक्षण: प्रणाली एवं प्रबंधन विषय पर लिखा गया लेख वर्तमान बैंकिंग में प्रशिक्षण की आवश्यकता एवं उसके लाभ को दर्शाता है। सूर्य प्रकाश, राजभाषा अधिकारी द्वारा लिखित कविता रोबोट युगीन मनुष्य तथा सुश्री अनुप्रिया मिश्रा द्वारा रचित मेरी रूह का टुकड़ा : मेरी बेटी बहुत ही मर्मस्पर्शी कविताएं हैं।

पत्रिका में प्रदर्शित विभिन्न कार्यक्रमों के सुंदर व स्पष्ट फोटो पत्रिका के स्तर को और भी बढ़ा रहे हैं। पत्रिका में संपादक मंडल की मेहनत व लगन स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसमें कोई शक नहीं कि पत्रिका भविष्य में और नई ऊंचाइयां प्राप्त करेगी।

विद्या भूषण मल्होत्रा

अधिकारी (सेवानिवृत्त)
पंजाब नैशनल बैंक, जयपुर

बैंक ऑफ महाराष्ट्र
Bank of Maharashtra

आपके बैंक की त्रैमासिक गृह पत्रिका 'पीएनबी प्रतिभा' (बैंकिंग में कृत्रिम बुद्धिमता तथा राजभाषा विशेषांक) का जुलाई-सितंबर 2025 अंक प्राप्त हुआ. बैंकिंग में कृत्रिम बुद्धिमता बहुत ही रोचक और महत्वपूर्ण विषय है। आज बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता बैंकिंग सेवाओं को अधिक कुशल, सुरक्षित और ग्राहक केंद्रित बनाने में सहायता कर रहा है। पत्रिका के सभी लेख पठनीय, जानकारीपूर्ण एवं संग्रहणीय है। रमाकांत शिवकुमार वर्मा द्वारा रचित कविता 'बिन संघर्षों के है जीना क्या?' जीवन के सार को व्यक्त करती है। विभिन्न गतिविधियों से अलंकृत छविचित्रों से पत्रिका बहुत ही आकर्षक बनी है। पत्रिका का प्रस्तुतिकरण भी बहुत ही अच्छा है। लेखों और कविताओं का चयन और संपादन बहुत ही अच्छा है। एक बेहतरीन, ज्ञानवर्धक एवं शानदार अंक हेतु पूरी संपादकीय टीम को बधाई एवं आगामी अंक हेतु ढेर सारी शुभकामनाएं। उम्मीद है कि आपका अगला अंक भी पाठकों में अभिरुचि पैदा करेगी।

प्रीति कुमारी गोंड

प्रबंधक
बैंक ऑफ महाराष्ट्र, अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर

भावभीनी विदाई

श्री सुरेश कुमार राणा, मुख्य महाप्रबंधक की सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई देते हुए श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशक, श्री डी. सुरेंद्रन। साथ में हैं श्री सुरेश कुमार राणा के परिजन।

श्री संजय वार्ष्णेय, मुख्य महाप्रबंधक की सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई देते हुए श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशकगण श्री डी. सुरेंद्रन तथा श्री अमित कुमार श्रीवास्तव। साथ में हैं श्री संजय वार्ष्णेय के परिजन।

श्रीमती कुमुद नेगी वार्ष्णेय, महाप्रबंधक की सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई देते हुए श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशकगण श्री डी. सुरेंद्रन तथा श्री अमित कुमार श्रीवास्तव। साथ में हैं श्रीमती कुमुद नेगी वार्ष्णेय के परिजन।

श्री राकेश ग्रोवर, मुख्य महाप्रबंधक की सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई देते हुए श्री अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कार्यपालक निदेशकगण, श्री एम. परमशिवम, श्री बी.पी. महापात्र, श्री डी. सुरेंद्रन तथा श्री अमित कुमार श्रीवास्तव। साथ में हैं श्री राकेश ग्रोवर के परिजन।

सत्यमेव जयते
वित्तीय सेवाएं विभाग
वित्त मंत्रालय
भारत सरकार

pnb

सत्यमेव जयते
वित्तीय सेवाएं विभाग
वित्त मंत्रालय
भारत सरकार

वित्तीय क्षेत्र में अनक्लेम्ड एसेट्स के सुगम और त्वरित निपटान के लिए अभियान

अक्टूबर - दिसंबर 2025

देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में

“आपकी पूँजी आपका अधिकार"

“आपकी पूँजी आपका अधिकार"

“आपकी पूँजी आपका अधिकार"

जागरूकता, सुगमता एवं क्रियान्वयन

SEBI | भा बी वि वि प्रा irdai | pfrda | IEPF

Call at Toll Free: 1800 - 1800, 1800 - 2021 | Follow us: | www.pnb.bank.in

पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक !

punjab national bank ...the name you can BANK upon !